

Was Muhammad Prophesied in the Torah of Moses?

The Venerable Archdeacon Barakat Ullah. M.A

तौरत मूसवी और मुहम्मद-ए-अरबी

अल्लामा बरकतुल्लाह एम. ए.

1951



Was Muhammad Prophesied in the Torah of Moses?

We have found the one Moses wrote about in the Law, and about whom
the prophets also wrote--Jesus of Nazareth, (John 1:45)

BY

The Venerable Archdeacon Barakat Ullah. M.A

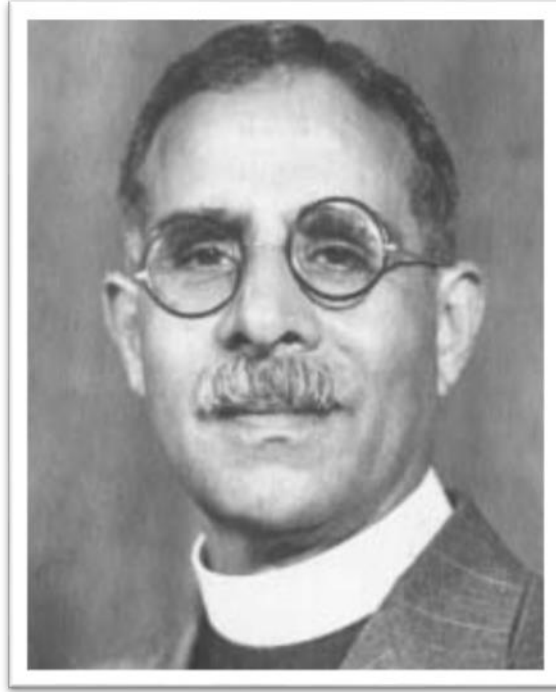
“जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरात में किया है वो हमको मिल गया है
वो यसूअ नासरी है।” (यूहन्ना 1:45)

तौरत मूसवी और मुहम्मद-ए-अरबी

मुसन्निफ़

अल्लामा बरकतुल्लाह एम. ए.

1951 ई.



1891-1972

ALLAMA BARAKAT ULLAH,
M.A.F.R.A.S

Fellow of the Royal Asiatic Society
London

दीबाचा

मुद्दत-ए-मदीद से मुस्लिम उलमा नबुव्वत मुहम्मदिया को तौरात शरीफ़ के मुख्तलिफ़ मुकामात से साबित करने की कोशिश करते चले आए हैं और मसीही फुज़ला- (फ़ाज़िल की जमा, उलमा) उनका जवाब देते रहे हैं। चुनान्चे ममालिक-ए-इस्लामीया में मुनाज़रे की कोई मशहूर किताब ऐसी नहीं है जिसमें मुसलमानों और मसीहीयों ने इस मज़मून पर बहस नहीं की। बल्कि तरफ़ैन के बाअज़ उलमा ने तो इस मौजू पर मुस्तक़िल रिसाले भी लिखे हैं। पंजाब में इन रिसालों में आँजहानी **मौलवी गुलाम नबी साहब** की किताब **“तहक़ीक़-उल-इस्लाम”** खासतौर पर काबिल-ए-गौर है, क्योंकि इस में तौरैत की कुतुब के बिना पर मौलवी साहब ने इस्लामी नुक्ते-नज़र के मुख्तलिफ़ पहलूओं को यकजा करके एक जामा रिसाला तैयार किया था। **इमाम-उल-मुनाज़िरीन हज़रत अकबर मसीह मरहूम** ने 1893 ई. में इस किताब का जवाब रिसाला **“अद्दा-ए-इस्माईल”** में दिया। इसी मौजू पर **जनाब पादरी टॉमस हाइल साहब मरहूम** ने एक रिसाला **“बाइबल में मुहम्मद”** लिखा जिसमें उन्होंने सर सय्यद अहमद मरहूम के दलाईल का जवाब-ए-बासवाब दिया। इस सिलसिले में **पादरी गोल्ड सेक साहब** का रिसाला किताब-ए-मुक़द्दस और हज़रत मुहम्मद भी पढ़ने के काबिल है।

ये बहस वाकई दिलचस्प है जिसको अज़ सर-ए-नव छेड़ने के लिए माअज़िरत की ज़रूरत नहीं। क्योंकि इस बहस से बहुत से मुतनाज़ाअ उमूर जिनके हल करने लिए मुस्लिम उलमा मुद्दत से अपने दिमाग़ लड़ा रहे हैं खुद बखुद हल हो जाते हैं। खुसूसुन वो पेचीदा वसीअ मैदान जिसमें नबुव्वत मुहम्मदियाह के लिए अहद-ए-अतीक़ की पेश गोइयों की राह ली जाती है, बावजूद वुसअत के तेय हो सकता है। **क्योंकि इस का दारो-मदार इस एक मफ़रूज़ा अम्र पर है कि बनी-इस्माईल से कोई जलील-उल-क़द्र नबी बरपा होने वाला था जिसकी ख़बर अम्बिया-ए-साबक़ीन ने ज़रूर बालज़रूरी होगी।** इस मफ़रूज़ा की वजह से कुतुब-ए-अहदे-अतीक़ की अबस वर्क़ गरदानी की जाती है और आयात की बिला-लिहाज़ सियाक़-ए-इबारत तावील की जाती है। लेकिन अगर ये साबित हो जाए कि खुदा ने हज़रत इस्माईल से बरकत-ए-नबुव्वत का कोई वाअदा नहीं किया था और बनी-इस्माईल से कोई नबी मबऊस होने वाला नहीं था, तो फिर इन तमाम मुक़ामात की जिनका इतलाक़ हज़रत मुहम्मद पर किया जाता है एक ऐसी किलीद (चाबी) हाथ लग

जाती है जो तरफ़ैन के लिए उक्दा-कुशाई (मुश्किल आसान करना, मसअला हल करना) का मूजिब हो सकती है।

तहकीक़ का मैदान मंज़िल-ए-हफ़तख़वां (कीकावस की रिहाई के वास्ते माज़ंदरान तक रुस्तम ने जो रास्ता सात दिन में तै किया उसे हफ़त ख़वान रुस्तम कहते हैं), किनाएतन इस का मतलब है निहायत कठिन और मुश्किल काम) से कम व शवारगुज़ार नहीं है। हमारे मुल्क के मुनाज़िरीन इस पर ख़ार-ए-राह (कांटों से भभरा रास्ते) से दामन-कशाँ (पहलू बचा कर) गुज़र जाते हैं क्योंकि वो अपने उमूर ईमानिया को पहले सच्च मान लेते हैं और फिर उनको साबित करने के लिए ऐसी दलाईल ढूंढते हैं जिनसे ये जाहिर हो सके कि उनके मफ़रूज़ात बरहक़ हैं। सच्च तो ये है कि इस किस्म का शख़्स,

ना मुहक्किक़ बूद ना दानिशमंद
चार पाए बरू किताबे चंद

मुहक्किक़ (जांच करने वाले) के लिए पहली शर्त ये है कि वो किसी क़ज़ीया (इबारत के टुकड़े) को अपना जुज़्व ईमान ना बनाए तावक़्त ये कि वो पहले अज़-रूए-अक्ल साबित ना हो जाए। पस इस मौजू पर बहस करने से पहले ये लाज़िम था कि तरफ़ैन अपने अपने मफ़रूज़ा की बख़ूबी छानबीन करते। लेकिन मुस्लिम मुनाज़िरीन ने इस के बरअक्स ये वतीरा (रवैय्या, तरीका-ए-कार) इख़्तियार किया कि अपने दिमाग़ पर जोर लगा कर ये फ़र्ज़ कर लिया कि मुद्दई नबुव्वत में फ़ुलां-फ़ुलां शर्त होनी चाहिए। और फिर उस मफ़रूज़ा के मुताबिक़ तौरात व इन्जील में से इधर उधर से ऐसे सबूत मुहय्या किए जो इन के ज़ोअम में इन शर्तों को हज़रत मुहम्मद की ज़ात में पूरा कर सकते थे। वाजिब तो ये था कि वो अपने दिमाग़ों की इख़्तिरा (नई बात) निकालने की बजाय किताब-उल्लाह के औराक़ को पहले पलटते और अम्बिया-ए-साबक़ीन के हालात व पैग़ामात पर गौर व खोज़ करके मालूम करते कि किताब-उल्लाह नबुव्वत के मफ़हूम को किस तरह मुतय्यन करती है और फिर इस मफ़हूम की रोशनी में अपने खयालात और मोअ्तकिदात (एतिक़ाद) की सीक़ली (सफ़ाई) करके देखते कि अम्बिया-ए-साबक़ीन की किताबें उनके मफ़रूज़ात की ताईद व तस्दीक़ करती हैं या उनके मज़ऊमात (मज़ऊम की जमा, गुमान किया हुआ) की तर्दीद करके उनको ग़लत और बातिल करार देती हैं।

हमने इस किताब के शुरू में इन्हीं असासी उमूर पर बहस करके नबुव्वत के सही मफ़हूम को मुतय्यन करने की कोशिश की है ताकि इस सही मफ़हूम की रोशनी में तरफ़ैन अम्बिया-अल्लाह के मबऊस होने की असली गायत (अंजाम) और हकीकी मक्सद को बखूबी समझ सकें और ऐसे इस्तिदलाल (दलील) से क़तई परहेज़ करें जो ईलाही मक्सद और नबुव्वत के हकीकी मंशा के मुनाफ़ी (खिलाफ) हो। लिहाज़ा इस रिसाले में ये बहस एक नए ज़ावीया से की गई है और इस लिहाज़ से ये रिसाला बिल्कुल नया है गो बहस का मौज़ू पुराना है। उम्मीद है कि मुस्लिम मुनाज़िरीन ठंडे दिल से गौर से काम लेकर इस किताब का मुतालाआ करके हक़ को इख़्तियार करेंगे।

मुसलमान मुनाज़िरीन अपने मफ़रूज़ात को मददे-नज़र रख कर तौरात शरीफ़ की किताब इस्तिस्ना की मशहूर आयात (18:15 ता 18) को दाअ्व-ए-नबुव्वत मुहम्मदिया के हक़ में एक बड़ी मज़बूत और ज़बरदस्त दलील समझते चले आए हैं। चुनान्चे आँजहानी मौलवी साहब मज़कूर के रिसाले का मोअ्तदिबा हिस्स (क़ाबिले एतिमाद अहाता) इन्हीं आयात की बहस पर मुश्तमिल है। पस हमने भी अपनी किताब के बेशतर हिस्से में इन्हीं आयात पर बहस की है। इस किताब के लिखने से पहले हमने कोशिश करके मुसलमान और अहमदी मुनाज़िरीन की मुख्तलिफ़ किताबों को जो उन्होंने गुज़श्ता निस्फ़ सदी के दौरान में इस मज़मून पर लिखी हैं, ब-ई खयाल पढ़ा कि शायद किसी ने इस बहस में कोई नया पहलू निकाला हो। लेकिन सब बेसूद (बेफ़ाइदा) तमाम ने इस पुरानी बहस की फ़र्सूदा (पुराना, खस्ता-हाल) दलाईल ही रट सुनाई हैं। बकौल शख़्से,

आँचा उस्ताद-ए-अज़ल गुफ़्त हमाँ मेय गोयम

जहां तक हमें मालूम है दौर-ए-हाज़रा के किसी मुस्लिम मुनाज़िर ने भी इस पुरानी लकीर से तजावुज़ नहीं किया। हालाँकि गुज़श्ता पचास (50) साल के अंदर ज़हन इन्सानी ने मगरिबी उलूम की रोशनी में तहकीक़ हक़ और जुस्तजू-ए-सदाक़त के नए मेयार मुक़रर कर दीए हैं। उनको देखते हुए ऐसी किताबें अब बिल्कुल दफ़तर-ए-पारीना (पुराने काग़ज़) की हैसियत रखती हैं। आजकल के मुनाज़रों में इन फ़र्सोददा दलाईल को पेश करना दिमाग़ की बजाय पेट को तक़वियत देना है। अफ़सोस है कि तास्सुब ने मुस्लिम मुनाज़िरीन के ज़हन व दिमाग़ को रोशनी के नूर से मुतास्सिर होने नहीं दिया और वो ताहाल इन्हीं तारीकियों में भटक रहे हैं जिनमें एक सदी पहले के क़दामत पसंद

(पुरानी बातों को पसंद करने वाले) मुसलमान पड़े थे। सच्य है “नूर तारीकी में चमकता है लेकिन तारीकी ने इस को कुबूल ना किया।” (यूहन्ना 1:5) पस लाचार हो कर हमने भी मुस्लिम दलाईल पर बहस करते वक़्त किसी नई किताब का हवाला नहीं दिया बल्कि आँजहानी मौलवी गुलाम नबी की दलीलों के इक्तिबासात पर ही इक्तिफ़ा किया है। सर सय्यद अहमद मरहूम की तमाम दलीलें भी इस रिसाले में मौजूद हैं पस हमने इस किताब में सर सय्यद मरहूम के अल्फ़ाज़ का सिर्फ़ कहीं-कहीं इक्तिबास किया है।

करीबन पैतालीस (45) साल हुए इस किताब की बाअज़ दलाईल मुझे दायरा इस्लाम से मुनज्जी जहान अल-मसीह के क़दमों में लाएं। पस मुद्दत से आरजू थी कि ये किताब लिखूँ। अल्हम्दुलिल्लाह कि आज ये आरजू पूरी हो गई। मैंने इस किताब की तालीफ़ में दीगर कुतुब मुनाज़रा और बिलखुसूस हज़रत इमाम-उल-मुनाज़रीन अकबर मसीह मरहूम के रिसाले “अद्दा-ए-इस्माईल” से इस्तिफ़ादा हासिल किया है।

मेरी दुआ है कि खुदा इस रिसाले के ज़रीये मुत्लाशयान-ए-हक़ पर अपनी नजात का नूर चमकाए ताकि वो भी मेरी तरह मुनज्जी आलमीन (मसीह) के क़दमों में आकर नजात-ए-अबदी से बहरा-अंदोज़ हों।

15 सितंबर 1951 ई.

बरकतुल्लाह

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

दीबाचा	4
फ़ेहरिस्त मज़ामीन	8
बाब अद्वल	13
नबुव्वत का सही मफ़हूम	13
ज़रूरत तन्कीह	13
उसूल तन्कीह व तन्कीद	15
किताब-ए-मुकद्दस और नबुव्वत.....	15
अम्बिया के फ़राइज़ मन्सबी	16
पेशगोई की हकीकत.....	18
पेशगोई का पूरा होना नबुव्वत के सिद्क का मेयार नहीं हो सकता	19
काज़िब (झूठे) नबी की शनाख्त.....	21
इब्रानी लफ़ज़ "नाबि" (نبي) का मफ़हूम.....	22
नबुव्वत और फ़ल्सफ़ा तारीख.....	24
नबुव्वत का मफ़हूम और इन्जील.....	24
नबी किस के हक़ में कहता है	25
नबुव्वत का मफ़हूम और कुरआन	32
मुहम्मद अरबी की पेश ख़बरीयाँ.....	35
मुहम्मद अरबी की निस्बत किताब-ए-मुकद्दस में पेश गोईयाँ.....	36
इन्जील की आयत	38
कुरआनी आयत की कादियानी तावील.....	39
तौरात की आयत.....	42
रोशन ख़याल मुसलमान और मफ़हूम नबुव्वत.....	43
नतीजा	45

बाब दोम	45
“बशारत-ए-मूसवी” की हकीकत	46
मुसलमानों का दावा	46
तन्कीह तलब उमूर	47
फ़स्ल अद्वल	47
सियाक़-ए-इबारत	47
आयात की नक्कल	47
आयात की तफ़सीर	49
क्या इन आयात में बशारत मौजूद है	51
ताइफ़ा (गिरोह) अम्बिया	53
ज़माना इबतिला और नबी की आमद	55
नतीजा	55
फ़स्ल दोम	56
किताब-ए-इस्तिस्ना की आयात और सय्यदना ईसा नासरी	56
क्रौम यहूद की तारीख और आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस	56
सय्यदना ईसा मसीह की बिअसत का ज़माना	58
सय्यदना मसीह की आमद और आयात ज़ेरे बहस	59
नतीजा	61
फ़स्ल सोम	62
किताब इस्तिस्ना की आयात और मुहम्मद अरबी	62
बाब सोम	64
“बशारत मूसवी” के अल्फ़ाज़	65
आयात का तहत अल-लफ़ज़ी तर्जुमा	65
फ़स्ल अद्वल	66

लफ़ज़ “अखी” (أخي) के मफ़हूम का तअय्युन.....	66
सही उसूल-ए-तफ़सीर	66
लफ़ज़ अखी (أخي) और किताब-ए-मुक़द्दस	67
क्या बनी-इस्राईल और बनी-इस्माईल भाई हैं?	71
हज़रत मुहम्मद क नसब नामा	73
फ़स्ल दोम.....	76
अल्फ़ाज़ “तेरे ही दर्मियान” से का मफ़हूम.....	76
अल्फ़ाज़ तौज़ीही हैं	76
अल्फ़ाज़ की सेहत और अस्लियत	77
सपटवाजनट (سقطواجنات) की हकीकत.....	80
दीगर क़दीम तर्जुमों में इन अल्फ़ाज़ की मौजूदगी.....	81
कलदी तारगम इन्कलोस	82
तर्जुमा पशीतो	82
तर्जुमा विलगेट	83
फ़स्ल सोम	84
ज़रे बहस आयत के दीगर अल्फ़ाज़	84
लफ़ज़ “नाबी” (نبي) का मतलब.....	84
लफ़ज़ याक़ीम (يقيم) का मतलब	86
आयत का अस्ल मतलब	87
अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” का मतलब.....	89
मुमासिलत की हकीकत	89
तौरात और आयत की तावील	91
मन्सब-ए-नबुव्वत	93
अल्फ़ाज़ “अपना कलाम”	95
“तुम उस की सुनना”	96

फ़स्ल चहारुम	97
आया ज़ेरे बहस और मुक़द्दस पतरस रसूल की तक़रीर	97
मौलवी साहब की दलील और जवाब	98
बाब चहारुम.....	101
इज़हाकी और इस्माईली बरकात.....	101
ख़ुदावंदी वाअदे	101
वाअदों की तफ़सील और फ़र्क.....	104
इज़हाकी वाअदे	104
इस्माईल शरअन नस्ल-ए-इब्राहिम नहीं.....	107
बाब पंजुम	109
अदम नबुव्वत-ए-इस्माईल	109
फ़स्ल अद्वल	109
अदम-ए-नबुव्वते इस्माईल अज़-रूए तौरात.....	109
मौलवी साहब की दलीलें और उन के जवाब.....	109
फ़स्ल दोम	117
अदम नबुव्वत-ए-इस्माईल अज़-रूए कुरआन	117
कुरआनी आयात	117
आयात-ए-कुरआनी पर तब्सिरा.....	119
बाब शश्म.....	126
ज़बीह-उल्लाह, इज़हाक़ या इस्माईल	126
तौरात व कुरआन के बयानात.....	127
इज़हाक़ ज़बीह-उल्लाह अज़रूए कुरआन.....	128
मुफ़स्सिरीन की दलील	129
कुरआनी बयान से इस्तिदलाल.....	130

अहादीस से इस्तिदलाल.....	134
उलमा-ए-इस्लाम और ज़बीह-उल्लाह.....	134
बाब हफ़्तुम	136
बीबी हाजिरा कनीज़क-ए-हज़रत सारा	136
तौरात शरीफ़ का बयान.....	136
गुलामी का रिवाज और बीबी हाजिरा	138
तौरात शरीफ़ की शहादत.....	140
बीबी हाजिरा का इखराज	142
फ़िरऔन ज़ादी का किस्सा.....	143
बाब हशतम	145
हज़रत इब्राहिम और ख़ाना काअबा	145
कुरआन का बयान	145
मौलवी साहब की दलीलें.....	146
तन्कीह तलब उमूर.....	146
इस्माईल की जाये-सुकूनत	147
इब्राहिम और इस्माईल की मुलाकात.....	149
इब्राहिम की कियामगाह और बिना-ए-काअबा	152

बाब अद्वल

नबुव्वत का सही मफहूम

जरूरत तन्कीह

हमारे मुस्लिम बिरादरान का ये खयाल है कि नबुव्वत और पेश गोई मुतरादिफ अल्फाज़ हैं। नबी वो है जो गैब की खबरें देता है और जो गैब की खबरें नहीं देता वो नबी नहीं हो सकता। मसलन कादियानी फ़िर्के के बानी **मिर्जा गुलाम अहमद** आँजहानी कहते हैं :-

“हम खुदा के इन कलिमात को जो नबुव्वत यानी पेशगोई पर मुश्तमिल हों नबुव्वत के इस्म से मौसूम करते हैं और ऐसा शख्स जिसको बकस्रत ऐसी पेश गोईयां बज़रीया वही दी जाती हैं उस का नाम नबी रखते हैं।”

(चशमा माअफ्त सफ़ा 180)

“खुदा तआला की तरफ़ से एक कलाम पाकर जो गैब पर मुश्तमिल ज़बरदस्त पेशगोईयां हों, मख्लूक को पहुंचाने वाला इस्लामी इस्तिलाह में नबी कहलाता है।”

(हुज्जत-उल्लाह सफ़ा 2)

“जिस शख्स को बकस्रत मुकालमा व मुखातबा से मुशरफ़ किया जाये और बकस्रत उमूर-ए-गैबीया उस पर ज़ाहिर किए जाएं वो नबी कहलाता है।”

(हकीकत-उल-वही सफ़ा 390)

"जबकि वो मुकालमा और मुखातबा अपनी कैफ़ीयत और कमीयत (मिक्दार) की रु से कमाल दर्जे तक पहुंच जाये और खुले तौर पर उमूर गैबीया पर मुश्तमिल हो तो वही दूसरे लफ़्ज़ों में नबुव्वत के नाम से मौसूम होता है, जिस पर तमाम नबियों का इतिफ़ाक़ है।"

(अल-वसीय्यत सफ़ा 11)

स्वर्गीय मिर्जा जी एक और जगह लिखते हैं :-

"मेरे नज़दीक नबी उस को कहते हैं जिस पर खुदा का कलाम यकीनी यानी क़तई बक़स्रत नाज़िल हो जो ग़ैब पर मुश्तमिल हो। इसलिए खुदा ने मेरा नाम नबी रखा मगर बग़ैर शरीअत के।"

(तजल्लियात-ए-इलाहिया सफ़ा 26)

यूं मिर्जा जी नबी और नबुव्वत के माअनों की तख़सीस (महफूज़ करना, खुसूसीयत) व तारीफ़ करके ऐलान करते हैं :-

"हमारा सिदक़ व कज़ब (सच्च और झूट) जांचने के लिए हमारी पेशगोई से बढ़कर कोई इम्तिहान नहीं हो सकता।"

(दाफ़ेअ-उल-वसावस सफ़ा 288)

मिर्जा साहब के मुसलमान मुखालिफ़ीन ने भी आपके पेश कर्दा मफ़हूम नबुव्वत को तस्लीम करके बीसियों किताबें तस्नीफ़ करके आपकी पेश गोइयों के एक-एक लफ़्ज़ को ग़लत साबित कर दिया और आप पर कज़ज़ाब (झूटा) होने का फ़त्वा सादिर कर दिया।

सुतूर बाला से ज़ाहिर हो गया होगा कि मुसलमान उलमा और फ़िर्का क़ादियानी के फुज़ला (फ़ाज़िल) सब के सब इस एक बात पर मुत्तफ़िक़ हैं कि इस्लामी इस्तिलाह में

खुदा के इन कलिमात को जो नबुव्वत यानी पेश गोइयों पर मुश्तमिल हों नबुव्वत के इस्म से मौसूम किया जाता है।

उसूल तन्कीह व तन्कीद

यहां सवाल ये पैदा होता है कि आया नबुव्वत की मज़कूर बाला तारीफ़ अस्ल हकीकत और अम्र वाकिये के मुताबिक़ है या वो हमारे मुसलमान बिरादरान का महज़ एक खयाल ज़न और क्रियास है जिसको अहले-बसीरत के नज़दीक कोई वक्रअत हासिल नहीं। पस लाज़िम है कि हम इस इस्लामी इस्तिलाह को वाकियात की कसौटी पर जांचें और हकीकत के मेयार से परखें ताकि नबुव्वत की इस तारीफ़ की सेहत पर रोशनी पड़ सके।

इस अम्र को जांचने के लिए हमें अम्बिया-ए-साबकीन (गुज़रे नबियों) की ज़िंदगी के वाकियात पैगामात और कलमात की जांच पड़ताल करनी होगी। ये बातें किताब-ए-मुक़द्दस यानी इब्रानी कुतुब-ए-मुक़द्दसा और इन्जील जलील के मजमूए में मज़कूर हैं। पस लाज़िम है कि हम नबुव्वत की मज़कूर बाला तारीफ़ को मद-ए-नज़र रखकर अम्बिया-ए-इस्राईल के बयानात और सवानिह हयात का गौर व तदब्बुर से मुतालाआ करें ताकि अस्ल हकीकत की तह को पहुंच सकें। ये तरीका-ए-कार उसूल-ए-तन्कीद के मुताबिक़ है जिस पर अमल दरआमद करके हम हर क्रिस्म के सो-ज़न (वहम) से बच कर नबुव्वत के हकीकी मफ़हूम को दर्याफ़्त कर सकते हैं।

किताब-ए-मुक़द्दस और नबुव्वत

किताब-ए-मुक़द्दस में नबी के लिए चंद खिताबात मुस्तअमल होते हैं जिन पर गौर करने से हम नबुव्वत के मफ़हूम को सही तौर पर समझ सकते हैं।

इब्रानी कुतुब-ए-मुक़द्दसा में नबी को मर्द-ए-खुदा का खिताब दिया गया है। (1 समुएल 9:6 वगैरह) वो खुदा का खादिम है। (यसअयाह 42:19 वगैरह) वो “खुदा का रसूल है जो खुदा के आगे राह दुरुस्त करने वाला है।” (मलाकी 2:1) वो खुदा की तरफ़ से तफ़सीर करने वाला है। (यसअयाह 43:27) वो अपनी दीदगाह पर खड़ा हो कर और

बुरुज पर चढ़ कर इंतज़ार करने वाला है। (हबक्कूक 2:1) गो वो खुदा और इन्सान के बीच एक दर्मियानी की हैसियत रखता है। वो खुदा का “मुँह” है जो खुदा का पैगाम अपनी क़ौम के लोगों तक पहुँचाता है। (खुरूज 4:16, 7:1, यर्मियाह 15:19 वगैरह) नबी खुदा के नाम से कलाम करता है और ईलाही इख्तियार से लोगों को पैगाम देता है और उस के पैगाम का ताल्लुक बिल-खुसूस उस के अपने ज़माने के साथ होता है। लेकिन ज़माना-ए-माज़ी के गुज़श्ता वाक़ियात से वो मिसालें देकर अपने पैगाम को मज़बूत करता है और अपने करीब के ज़माना-ए-मुस्तक़बिल की निस्बत अपने लोगों को आगाह और खबरदार करता है।

अम्बिया के फ़राइज़ मन्सबी

(1) अम्बिया-अल्लाह खुदा की ज़ात व सिफ़ात के बयान करने वाले थे। खुदा ने उनकी मार्फ़त तरह बह तरह और हिस्सा बह हिस्सा कलाम करके (इब्रानियों 1:1) बनी-इसाईल को ये ताअलीम दी कि वो सिर्फ़ बनी-इसाईल का ही माअबूद नहीं बल्कि अकेला, वाहिद और लाशरीक, हकीकी माअबूद और ज़िंदा खुदा है जो तमाम कायनात का ख़ालिक व मालिक और एक ऐसी कुद्दूस रहमान व रहीम हस्ती है, जिसकी रज़ा ये है कि उस के परस्तार उस की मानिंद पाक और रहम दिल हों।

हर नबी का पैगाम उस के अपने हालात-ए-ज़माना और दौर की ज़रूरीयात से ताल्लुक रखता था। अम्बिया अपने ज़माने के वाइज़ थे जिनका फ़र्ज़-ए-मन्सबी ये था कि वो बनी-इसाईल को हर वक़्त और हर जगह खुदा की ज़ात व सिफ़ात बतला कर रज़ा-ए-ईलाही को उन पर ज़ाहिर करें। और उन ईलाही अहकाम को वाज़ेह करें जो ज़रूरत-ए-ज़माने के मुताबिक़ खुदा की तरफ़ से उन पर वाजिब थे।

(2) अम्बिया ज़माना-ए-माज़ी के दुनियावी तारीखी वाक़ियात पर नज़र डाल कर उनकी तावील व तफ़सीर खुदा की ज़ात व सिफ़ात की रोशनी में किया करते थे। इसी लिए किताब-ए-मुक़द्दस के मजमूए में तवारीखी किताबें भी शामिल हैं जिनके मुसन्नफ़ अम्बिया-अल्लाह थे। इन किताबों की तालीफ़ की गर्ज़ ये थी कि क़ौम इसाईल जान ले कि खुदा की परवरदिगारी का हाथ इस दुनिया के वाक़ियात और क़ौम इसाईल की तारीख में मौजूद है और कि खुदा का मक्सद दुनिया में और बिल-खुसूस क़ौम इसाईल में ज़ाहिर

हैं। (ज़बूर 78 आमोस 2:10 ता 12, 3:1, 9:7 होसेअ 9:10-12, 9 ता 13, 13:4 वगैरह जो ज़माना-ए-मुस्तक़बिल में पूरा हो कर रहेगा।

(3) अम्बिया-अल्लाह अपनी क़ौम की तवज्जोह नज़दीक के ज़माना-ए-मुस्तक़बिल की जानिब भी मुनअतिफ़ (मोड़ने वाला, मुतवज्जोह होने वाला) किया करते थे ताकि उन को आने वाले ईलाही गज़ब से आगाह करें या उनको उम्मीद दिला कर उनकी ढारस बांधे और तसल्ली देकर उनका हौसला बुलंद करें। वो अपने लोगों को कहते थे कि अगर वो रास्ती और इन्साफ़ को मददे-नज़र रखेंगे तो खुदा की बादशाहत तमाम दुनिया में कायम हो जाएगी, लेकिन अगर वो अपने गुनाहों से तौबा ना करेंगे तो खुदा उनको फ़ल्ह अमन और सलामती नहीं बख़शेगा बल्कि उनको सज़ा देगा। (आमोस 5:18, यर्मियाह 19 बाब वगैरह) वो कहते थे कि गो खुदा क़ौम इस्राईल को उन के गुनाहों की सज़ा देगा ताहम ये सज़ा वाजिबी होगी और सज़ा के ज़माना इख़तताम के बाद क़ौम की हालत रूबा इस्लाह हो जाएगी।

मसलन जब आख़ज़ जैसा बदकार शख़्स यहूदाह का बादशाह था इस तारीक़ ज़माने में हज़रत यसअयाह ने क़ौम को कहा कि मौजूदा हालात के बावजूद खुदा सुलह और रास्ती की सलतनत कायम करेगा। (यसअयाह 9:2 ता 7) यहूदाह की बादशाहत के ज़वाल के शुरू में हज़रत यर्मियाह एक ऐसे बादशाह की आमद की ख़बर देता है जो नेक लोगों पर खुदा-ए-बरहक़ के अहकाम के मुताबिक़ हुक्मरानी करेगा। (यसअयाह 33:5 ता 6) जब क़ौम इस्राईल के हालात निहायत हौसला-शिकन और मायूस-कुन थे, उस ज़माने में भी नबी क़ौम की ढारस बांध कर बशारत देकर कहता है कि सिथ्यून अक्वाम-ए-आलम की इबारत का मर्कज़ होगा। (यसअयाह 40 बाब वगैरह)

“पस अम्बिया-अल्लाह खुदा का मुँह” थे जो क़ौमी और मिल्ली ज़िंदगी के हर पहलू को खुदा की ज़ात व सिफ़ात की रोशनी में देखकर और खुदा की रज़ा का क़ौम व मिल्लत के हर शोअ्बे पर इतलाक़ पर अहकाम-ए-ईलाही को लोगों पर ज़ाहिर करने वाले थे। उनका पैग़ाम लोगों के लिए चराग़-ए-राह होता था। यही वजह है कि मुक़द्दस पतरस फ़रमाता है, हमारे पास नबियों का वो कलाम है जो ज़्यादा मोअतबर ठहरा और तुम अच्छा करते हो, जो ये समझ कर इस पर ग़ौर करते हो कि वो एक चिराग़ है जो अँधेरी

जगह में रोशनी बख़्शता है। (जब तक पौ ना फटे और सुबह का सितारा तुम्हारे दिलों में ना चमके।" (1 पतरस 1:19)

हमने निहायत मुख्तसर तौर पर अम्बिया-अल्लाह के काम व पैग़ाम पर तब्बिसरा किया है ताकि उस की रोशनी में हम अपने मुसलमान भाईयों की तारीफ़ नबुव्वत को जांच सकें। इस तब्बिसरा से ज़ाहिर है कि अम्बिया के फ़राइज़ मन्सबी का ताल्लुक़ खास तौर पर सिर्फ़ उनके अपने ज़माने और दूर से ही होता था और कि उनके पैग़ाम का अहम तरीन अन्सर रुहानी और अख़लाकी पहलूओं से ही मुताल्लिक़ था।

पेशगोई की हकीकत

इस में कुछ शक नहीं कि जैसा हम ऊपर ज़िक्र कर चुके हैं अम्बिया अपने करीब के ज़माना मुस्तक़बिल की निस्बत पेशगोई करते थे। लेकिन उनकी नबुव्वतों का मुतालआ ये अम्र ज़ाहिर कर देता है कि उनका खास काम पेश गोईयां करना ना था और ना उनकी पेश ख़बरीयाँ उनकी नबुव्वत का अहम तरीन जुज़्व होती थीं। इन पेश ख़बरियों की बुनियाद अम्बिया-अल्लाह का यह ईमान था कि ख़ुदा अपने मक़सद को अपने फ़रमांबर्दार ख़ादिम अम्बिया पर ज़ाहिर फ़रमाता है। (आमोस 3:7) और वो अपने इस मक़सद के मुताबिक़ दुनिया का कारोबार चलाता है कि ज़माना-ए-माज़ी और दौर-ए-हाज़रा की तरह ज़माना-ए-मुस्तक़बिल में भी ख़ुदा की परवरदिगारी का हाथ मौजूद रहेगा।

पस अम्बिया-अल्लाह की नबुव्वत में मुक़द्दम अम्र रज़ा-ए-ईलाही का मुकाशफ़ा होता है और नबी के पैग़ाम का अस्ल मर्कज़ ख़ुदा की मर्ज़ी को क़ौम व मिल्लत पर ज़ाहिर करना है। अगरचे इस मुकाशफ़े में बाअज़ औकात मुस्तक़बिल का जुज़्व होता है। लेकिन इस जुज़्व का होना नबुव्वत के लिए लाज़िमी और लाबदी (ज़रूरी) नहीं है। बिल-उमूम नबी के मुकाशफ़े का हम-हिस्सा ये होता है कि वो अपने दौर और ज़माने के वाक़ियात पर ईलाही नुक्ता-ए-नज़र से निगाह डालता है। मसलन टिड्डियों का आना। (यूएल नबी की किताब) या किसी फ़ातेह का सज़ा व जज़ा के लिए बरपा होना। (यर्मियाह 25:9 यसअयाह 45:1 वगैरह)

पेशगोई का पूरा होना नबुव्वत के सिद्ध का मेयार नहीं हो सकता

सुतूर बाला से ज़ाहिर हो गया कि सच्चे नबी का हकीकी मेयार ये है कि नबी का पैगाम खुदा-ए-कुद्दूस व बरतर की रज़ा को इन्सान पर ज़ाहिर करता है और क्या ये पैगाम क़ौम के लिए चराग-ए-राह है इस पैगाम का पेश खबरियों के साथ कोई लाज़िमी रिश्ता नहीं है। नबी के सिद्ध (सच) व कज़ब (झूठ) को जांचने और उस की पेशगोई के पूरा होने में कोई बाहमी वास्ता या ताल्लुक नहीं है। किताब-ए-मुकद्दस का मुतालआ हम पर ज़ाहिर कर देता है कि अम्बिया की पेश गोइयों के अल्फ़ाज़ का बा-तफ़्सील पूरा होना उनके पैगाम की सच्चाई का मेयार और उन के बरहक होने की कसौटी नहीं है। चुनान्चे इस में कलाम नहीं हो सकता कि बाअज़ पेश-गोइयों के अल्फ़ाज़ बजिन्सा (हूबहू) पूरे नहीं हुए। मसलन अगरचे दमिशक़ को शिकस्त नसीब हुई लेकिन ये अल्फ़ाज़ पूरे ना हुए कि वो शहर ना रहेगा बल्कि खन्डर होगा।” (यसअयाह 17:1) इसी तरह अगरचे बाबूल को शिकस्त मिली लेकिन नबी के तफ़्सील वार पूरे ना हुए। (यसअयाह 13:15 ता 18)

हक़ तो ये है कि खुद अम्बिया को ये एहसास था कि अगर खुदा के फ़ज़ल व करम से क़ौम अपने गुनाहों से तौबा करके खुदा की जानिब रुजू करेगी और हालात बदल जाएंगे तो उनकी पेश खबरीयाँ भी पूरी ना होंगी। (यिर्मियाह 18:7 ता 10)

नाज़रीन को याद होगा कि हज़रत यूनाह नबी को खुदा से ये शिकायत थी कि खुदा ने उस को नज़ीर बना कर और तबाही का पैगाम देकर भेजा। लेकिन उसने अपने रहम को काम में लाकर नैनवा के लोगों की तौबा कुबूल की फ़रमाई और उस की पेशगोई को पूरा ना होने ना दिया। (3:4 ता 10, 4:1)

पस अम्बिया-अल्लाह के पैगाम का वो हिस्सा जिसका ताल्लुक ज़माना-ए-मुस्तक़बिल से था हमेशा मशरूअत (शर्तों के साथ) होता था। अगर इन्सान तौबा करके खुदा की तरफ़ रुजू करे तो नबी की पेश खबरी के अल्फ़ाज़ पूरे नहीं हो सकते क्योंकि खुदा रहीम व करीम है और अपने लोगों के गुनाह माफ़ फ़रमाता है। (यिर्मियाह 18:1 ता 12, 26:12 ता 19 वगैरह) हम इस बात को एक आम मिसाल से वाज़ेह कर देते हैं।

किसी पेश गोई में और उस के पूरा होने में बईना वही ताल्लुक है जो बीज और दरख्त में होता है। हर पेश खबरी खुदा की रास्तबाज़ी और कुददुसियत के उसूल अपने अंदर रखती है जो तुख्म की तरह है। जिस तरह साज़गार हालात में तुख्म नशव व नुमा पाता है और रफ़ता-रफ़ता तनावर दरख्त हो जाता है, इसी तरह खुदा की रास्तबाज़ी के अटल उसूल की वजह से पेश खबरी मुवाफ़िक़ माहौल में नशव व नुमा पा कर ज़बरदस्त वाक़िये की सूरत इख़्तियार कर लेती है और ये वाक़िया क़ौम की तरक्की या तनज़्जुल का बाइस होता है। किसी पेशगोई की तक्मील और इस अज़मी और अटल कानून-ए-फ़ित्रत पर मुन्हसिर है कि जो शख्स या क़ौम खुदा के अहकाम से बर्गशतगी इख़्तियार कर लेती है उस का अंजाम तबाही है। बरअक्स इस के जब कोई शख्स या क़ौम रज़ा-ए-ईलाही के मुताबिक़ अपनी ज़िंदगी को ढालती है इस का कुदरती नतीजा इन्फ़िरादी फ़लाह बहबूदी और क़ौमी तरक्की है। अम्बिया-ए-साबक़ीन की कुतुब का मुतालआ ये साबित कर देता है कि अम्बिया सिर्फ़ अनुमानों में ही आइन्दा वाक़ियात की खबरें दिया करते थे और सिर्फ़ उन्हीं माअनों में पेशगोई नबुव्वत का जुज़व हो सकती है। लेकिन अगर पेशगोई और नबुव्वत से ये मुराद हो कि अम्बिया किराम ने ऐसे वाक़ियात की खबर दी है जो उनके मरने के सदीयों बाद ज़हूर में आए और उन के अल्फ़ाज़ लफ़ज़ ब लफ़ज़ और हर्फ़ ब हर्फ़ पूरे हुए तो किताब मुक़द्दस से इस किस्म के नज़रिये को कोई सहारा नहीं मिलता।

मिसाल के तौर पर सय्यदना मसीह की पेशगोई को लें। आपने यरूशलेम की तबाही और क़ौम यहूद की बर्बादी की खबर दी। (मर्कुस 10 बाब, लूका 21 बाब, मत्ती 23 बाब 29 ता 36 वगैरह) आँखुदावंद की इन पेश खबरियों से (जिनका ताल्लुक नज़्दीक के मुस्तक़बिल से ही था) ये वाज़ेह हो जाता है कि अम्बिया अल्लाह किन माअनों में मुस्तक़बिल की खबरें दिया करते थे। आँखुदावंद अपनी क़ौम को तौबा की दावत देते रहे ताकि खुदा की बादशाहत और उस की रास्तबाज़ी दुनिया में कायम हो जाए। लेकिन रऊसाए (रईस की जमा) क़ौम यहूद शैतानी तहरीकात पर चल कर खुदा के पाक क़वानीन की खिलाफ़वर्ज़ी करते रहे। पस आँखुदावंद ने उनको खबरदार किया और फ़रमाया कि खुदा के रुहानी क़वानीन अटल हैं जिनको तोड़ने का नतीजा क़ौमी बर्बादी होगी। बिल-आख़िर 70 ई. में बनी-इस्राईल को वो दिन देखना पड़ा क्योंकि उन्होंने तौबा ना की और आँखुदावंद की ये पेशगोई पूरी हुई क्योंकि खुदा के अज़ली कानून-ए-फ़ित्रत के मुताबिक़ उस की तक्मील लाज़िमी थी।

काज़िब (झूठे) नबी की शनाख्त

किताब मुकद्दस का मुतालआ ये ज़ाहिर कर देता है कि झूटे नबी की शनाख्त ये नहीं है कि उस की पेश गोईयां पूरी नहीं होतीं। हकीकत ये है कि झूटे नबी मुख्तलिफ़ किस्म के हुआ करते थे और क्रौम के सामने मुख्तलिफ़ रंगों में आया करते थे। वो गिरगिट की तरह क्रौम के मज़हबी और सियासी हालात और पार्टियों की ताकत के मुताबिक़ अपना रंग बदल लिया करते थे। जब बादशाह-ए-वक़्त बुत-परस्ती की जानिब माइल होता तो वो बुत-परस्ती के हामी हो जाते। कभी वो किसी सियासी पार्टी के लीडरों से मिलकर उनके प्रोग्राम के मुताबिक़ उनकी सी बातें करते और क्रौम को कहते कि ये खुदा का पैग़ाम है। (यर्मियाह 14:14, 23:16 ता 26 वगैरह) कभी वो अपना पेट पालने के लिए उमरा और रऊसा-ए-मुल्क को ख़ुश करने की खातिर उनकी तरफ़दारी करके अपने कलाम को ख़ुदा की जानिब मन्सूब कर देते थे। (हिज़्कीएल 13:2 ता 7, मीकाह 3:11 रोमीयों 16:18, 2_पतरस 2:3)

चुनान्चे हज़रत यर्मियाह कहता है “नबियों की बाबत मेरा दिल टूट गया। मेरी हड्डियां थरथराती हैं। नबी और काहिन दोनों नापाक हैं। उन्होंने बाअल के नाम से नबुव्वत की और मेरी क्रौम इस्राईल को गुमराह किया। नबी ज़िनाकार, झूट के पैरू और बदकारों के हामी हैं। उनकी वजह से तमाम मुल्क में बेदीनी फैली है। वो बतालत की ताअलीम देते हैं। वो अपने दिलों के इल्हाम बयान करते हैं ना कि ख़ुदावंद के मुँह की बातें। मैं (ख़ुदा) ने इन नबियों को नहीं भेजा पर ये दौड़ते फिरते। मैंने उनसे कलाम नहीं किया पर उन्होंने नबुव्वत की, लेकिन अगर वो मेरी मज्लिस में शामिल होते तो मेरी बातें मेरे लोगों को सुनाते और उन को उनकी बुरी राह से और उन के बुरे कामों की बुराई से बाज़ रखते। कब तक ये नबियों के दिल में रहेगा कि झूटी नबुव्वत करें। वो अपने दिल की फ़रेब-कारी के नबी हैं। ख़ुदावंद फ़रमाता है, मैं उन नबियों का मुख्तलिफ़ हूँ जो अपनी ज़बान को इस्तिमाल करते हैं और कहते हैं कि ख़ुदा फ़रमाता है।” (यर्मियाह 23 बाब 6:13 वगैरह)

सय्यदना मसीह ने भी झूटे नबियों का यही मेयार मुकर्रर फ़रमाया है “झूटों नबियों से खबरदार रहो जो तुम्हारे पास भेड़ों के भेस में आते हैं। लेकिन बातिन में फाड़ने वाले भेड़िए हैं। उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे। क्या झाड़ीयों से अंगूर या

ऊंट कटारों से इंजीर तोड़ते हैं? पस उनके फलों से तुम उनको पहचान लोगे।” (मत्ती 7:15 ता 20)

किताब मुकद्दस में चंद झूटे नबियों का अहवाल और उन की इबरतनाक सज़ा का ज़िक्र भी आया है। (इस्तिस्ना 13:1 ता 3, 1 सलातीन 12:18, 22:6 ता 12, 2 तवारीख 18:5, यर्मियाह 14:20, 23, 28, 29 बाब, नोहा 2:14, ज़करीया 13:3 वगैरह) मुकद्दस पौलुस रसूल ऐसे ही लोगों की निस्बत फ़रमाता है कि, “उनका खुदा पेट है और वह दुनिया की चीज़ों के खयाल में रहते हैं। वो खुदा की नहीं बल्कि अपने पेट की ख़िदमत करते हैं और चिकनी चुपड़ी बातों से सादा लौहों को बहकाते हैं।” (फिलिप्पियों 3:19 रोमीयों 16:18)

लेकिन ये ज़ाहिर है कि खुदा उस कुमाश के लोगों की मारफ़त कलाम नहीं करता क्योंकि उनके ज़हन ईलाही इफ़ान के नूर से मुनव्वर नहीं होते। सच्ची नबुव्वत का ताल्लुक हकीकी दीनदारी से है जिसका अक्वलीन उसूल ये है कि जो अहद खुदा-ए-कुद्दूस बरहक़ ने क़ौम इस्राईल से बाँधा था उस पर अमल दर-आमद हुआ और यही बात सच्चे और झूटे नबी के दर्मियान माया अल-इम्तियाज़ है। खुदा के अहद के उसूलों को फ़रामोश करके पस-ए-पुशत फेंक देना ही नबुव्वत की रूह को गुम कर देने के बराबर है। सच्चे नबी और हकीकी दीनदारी के हक़ायक़ और उसूल बयान करने वाले और अपने-अपने दौर और ज़माने के हालात में अपनी क़ौम को उनके उसूलों पर चलाने वाले इन्सान थे। उनके कलाम का ताल्लुक बराह-ए-रास्त और खास तौर पर उनके अपने ज़माने और उन के अपने हम-अस्रों के साथ होता था जिनको वो राह-ए-हिदायत पर चलाना अपना फ़र्ज़ मन्सबी समझते थे।

इब्रानी लफ़ज़ “नाबि” (נָבִי) का मफ़हूम

इब्रानी ज़बान में लफ़ज़ नाबि (נָבִי) के सरफी और लुगवी मअनी में पेश ख़बरी का मफ़हूम मौजूद नहीं।¹ मसलन जब हज़रत अब्राहाम को नबी कहा गया। (पैदाइश 20:7)

¹ Smith’s Dictionary of the Bible .vol.2.p.929

या दीगर बुजुर्गान इस्राईल को नबी का खिताब दिया गया है। (ज़बूर 105:15) तो इस से ये मुराद नहीं कि वो पेश गोईयां करने वाले थे, बल्कि इस लफ़्ज़ से मुराद ये थी कि इन बुजुर्गान क्रौम को खुदा की कुर्बत (नज़दिकी) हासिल थी और वो रज़ा-ए-ईलाही को लोगों पर ज़ाहिर करने वाले क्रौमी पेशवा थे। बअल्फ़ाज़-ए-कुरआन वो “इमाम” और “रहनुमा” थे। अला-हाज़ा-उल-क़यास (इसी तरह) हज़रत मूसा को नबी इस वास्ते कहा गया है कि वो उस पुराने अहद के ऐलान करने वाले थे जो खुदा ने बनी-इस्राईल से बाँधा था। वो खुदा की मर्ज़ी को अपनी क्रौम पर ज़ाहिर किया करते थे, लेकिन उनका कलाम पेशगोई करना ना था बल्कि उस का फ़र्ज़ मन्सबी ये था कि वो क्रौम के हादी और राहनुमा हों। इसी वास्ते तौरात शरीफ़ में हज़रत मूसा में और पेश गोईयां करने वालों में तमीज़ की गई है। (गिनती 12:6 ता 7) जिस तरह हज़रत हारून, हज़रत मूसा के पयाम्बर थे इसी तरह हज़रत मूसा खुदा के नबी और पयाम्बर थे। (खुरूज 7:1) अला-हज़ा-उल-क़यास (इसी तरह) हज़रत समुएल खुदा के नबी इसलिए नहीं थे कि वो पेश गोईयां किया करते थे बल्कि वो खुदा के नबी थे क्योंकि वो अपनी क्रौम के हादी थे। उन्होंने अम्बिया ज़ादों के मदरसे कायम किए। (1 समुएल 10:5, 19:19, 2 सलातीन 2:3 ता 5:4-38, 6:1 वगैरह) ताकि इनमें तौरात शरीफ़ का मुतालआ किया जाये।

पस हकीकत ये है कि इब्रानी में लफ़्ज़ “नबी” के मफ़हूम में पेश खबरी के अन्सर को कोई खास जगह हासिल नहीं है। बल्कि लफ़्ज़ “नबी” के मअनी ये हैं कि खुदा अपने पयाम्बर की पुश्त पर है और अपनी रब्बानी तहरीक से उस को अपने ज़माने और क्रौम के लोगों से बोलने पर मजबूर करता है। नबी को ये पैग़ाम खुदा की तरफ़ से मिलता था और उसे पैग़ाम दिए बगैर चैन ना आता था। (1 समुएल 9:15, यर्मियाह 1:6, हिज़्कीएल 3:14, आमोस 3:8 वगैरह) ख़्वाह नबी पैग़ाम पहुंचाना ना भी चाहे ताहम वो इस को पहुंचाए बगैर ना रह सकता था। (खुरूज 4:10 ता 13 वगैरह) बकौल शख़से :-

मुराद रदीसत अन्दर दिल अगर गोयम ज़बां सोज़द
वगर दम दर कुशम तर्सम् कि मवज़ उस्तुख्वाँ सोज़द

مراد رديست اندر دل اگر گویم زباں سوزد
وگردم در کشم ترسم که مغز استخوان سوزد

नबुव्वत और फ़ल्सफ़ा तारीख

नाज़रीन पर अब ज़ाहिर हो गया होगा कि अम्बिया साबकीन की ज़िंदगी के वाकियात, पैग़ामात और कलिमात इस नज़रिये के सरासर ख़िलाफ़ हैं कि नबुव्वत और पेशगोई मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ हैं। खुदा अपने अम्बिया को इस मक़सद के लिए बरपा नहीं करता कि वो बनी-नूअ इन्सान पर दूर व नज़दीक के मुस्तक़बिल के हालात ज़ाहिर करे। किताब-ए-मुक़द्दस का मुतालआ इस किस्म के क्रियास को बातिल साबित करता है कि अम्बिया को नबुव्वतें गोया मअकूस तारीख (Inverted History) होती हैं। ऐसा कि अगर दुनिया के तवारीखी वाकियात की तर्तीब को शुरू से आखिर तक उलट दिया जाये तो वो अम्बिया-अल्लाह की नबुव्वतें बन जाती हैं और अगर इन नबुव्वतों को ज़माना-ए-मुस्तक़बिल में फैला दिया जाये तो वो क्रियामत तक के तारीखी वाकियात बन जाती हैं। लेकिन नबुव्वत कोई मअकूस तारीख नहीं है। इस के बरअक्स नबुव्वत का फ़ल्सफ़ा तारीख है जिसमें दौर-ए-हाज़रा के वाकियात पर खुदा-ए-बरतर व कुद्दूस की ज़ात व सिफ़ात की रोशनी में तब्बिसरा किया जाता है। और ये बताया जाता है कि अगर अफ़राद या क्रौम ने खुदा के अहकाम की ख़िलाफ़वर्ज़ी की तो मुस्तक़बिल में उनका क्या हश्र होगा। नबी दुनियावी तारीखी वाकियात के अंदरूनी मुतालिब, पिन्हानी मक़ासिद और पोशीदा मआनी को क्रौम पर ज़ाहिर करता है। यही वो फ़र्ज़ था जो खुदा तआला ने अपने ख़िदमतगुज़ार नबियों के सपुर्द किया था। अम्बिया किराम का ये काम नहीं था कि उन लोगों और वाक्यों को ख़बरें जो हज़ारों साल बाद होने वाले थे। वो फ़ालगीर और नज़ूमी या रुमाल और जोतशी नहीं थे बल्कि खुदा-ए-कुद्दूस के फ़रमांबर्दार पयाम्बर और बर्गुज़ीदा थे।

नबुव्वत का मफ़हूम और इन्जील

पस अहद-ए-अतीक की कुतुब का मुतालआ हम पर साबित कर देता है कि अम्बिया-ए-किराम का अक्वलीन फ़र्ज़ ये था कि क्रौम इस्राईल को हिदायत की राह पर चलाएं। इन्जील जलील का मुतालआ भी ये ज़ाहिर कर देता है कि खुदा के नबी का ये फ़र्ज़ था कि लोगों को आने वाले ग़ज़ब की इत्तिला दे। (लूका 3:7 ता 20) और मुनादी करे कि तौबा करो और तौबा के मुवाफ़िक़ फल लाओ।” (मती 3:2, 8) हज़रत इब्ने

अल्लाह (मसीह) ने भी अपनी नबुव्वत का ज़माना इसी तरह शुरू किया। (मत्ती 4:17) और इसी तरह खत्म किया। (मत्ती 23 बाब) खुदावंद का रसूल मुकद्दस पौलुस मुख्तलिफ़ नेअमर्तों के तज़िकरे के दौरान में फ़रमाता है कि तुम मुहब्बत के तालिब हो और रुहानी नेअमर्तों की भी आरजू रखो खुसूसुन इस की कि नबुव्वत करो।” और नबुव्वत का मफ़हूम इन अल्फ़ाज़ में बतलाता है कि “जो नबुव्वत करता है वो कलीसिया की तरक्की करता है। पस मैं ज़्यादातर यही चाहता हूँ कि तुम नबुव्वत करो।” (1 कुरिन्थियों 14:1 ता 5) रसूल मक़बूल अम्बिया-ए-साबक़ीन की नबुव्वतों की निस्बत फ़रमाता है। जितनी बातें पहले लिखी गईं वह हमारी ताअलीम के लिए लिखी गईं ताकि सब्र से और किताब-ए-मुक़द्दस की तसल्ली से उम्मीद रखें। (रोमीयों 15:4) वो अपनी नबुव्वत की निस्बत फ़रमाता है कि “वो झूटे नबियों की बातों की मानिंद नहीं है बल्कि खुदा को हाज़िर व नाज़िर जान कर कहता है कि हमारी नसीहत ना तो गुमराही से है, ना नापाकी से ना फ़रेब के साथ बल्कि जैसे खुदा ने हमको मक़बूल करके इन्जील हमारे सपुर्द की वैसे ही हम बयान करते हैं। आदमीयों को नहीं बल्कि खुदा को खुश करने के लिए जो हमारे दिलों को आजमाता है। ना कभी हमारे कलाम में खुशामद पाई गई और ना वो लालच का पर्दा बना खुदा इस का गवाह है।” (1 थिस्सलुनीकियों 2:3 ता 5)

पस तौरात मुक़द्दस, अम्बिया-ए-साबक़ीन की किताबें, अहले-यहूद की कुतुब तवारीख़ और इन्जील जलील की तमाम किताबें सबकी सब इस बात पर गवाह हैं कि नबी का पहला और अक्वलीन फ़र्ज़ ये था कि खुदा के पैग़ाम को अपनी क़ौम के लोगों तक पहुंचा दे ताकि वो खुदा के अहकाम नसीहत और तसल्ली के कलिमात सुनकर सिराते मुस्तक़ीम (सीधी राह) पर क़ायम रहें। नबी का ये काम ना था कि दुनिया को हज़ारों बरस के बाद होने वाले वाक़ियात या आने वाले पैग़म्बरों की इत्तिला दे बल्कि उस का फ़र्ज़ मन्सबी ये था कि वो नज़ीर और बशीर हो कर मख़लूक-ए-खुदा को राह-ए-हिदायत पर चलाए।

नबी किस के हक़ में कहता है

मोअतरिज़ (एतराज़ करने वाला) ये सवाल कर सकता है कि अगर नबुव्वत का मफ़हूम यही है और अम्बिया का ये काम नहीं था कि सदियों बाद के किसी आने वाले पैग़म्बर या वाक़िये की ख़बर दें तो सय्यदना मसीह के रसूल और इन्जील नवीस क्यों

कहते हैं “जो खुदावंद ने नबी की मार्फत कहा था वो पूरा हुआ?” (मत्ती 1:22 वगैरह) जवाबन अर्ज़ है :-

सय्यदना मसीह ने खुद फ़रमाया और आप के रसूल और मुबल्लिग भी यही समझे कि आपकी आमद की इल्लत-ए-गाई (नतीजा) यही थी कि आपके मिशन से तौरात और अम्बिया की हस्ती का अस्ल मक्सद तकमील पाया जाये। (मत्ती 5:17, रोमीयों 13:8 ता 10, ग़लतीयों 3:24 वगैरह) वो ये भी समझते थे कि अम्बिया-ए-साबक़ीन की कुतुब आँखुदावंद के काम और पैग़ाम की रोशनी में माअनी-खेज़ हो जाती हैं। (लूका 4:18 ता 22:24-27, यूहन्ना 1:45, 5:39, आमाल 8:35 वगैरह) वो मुनज्जी आलमीन की मुबारक ज़िंदगी के मुख्तलिफ़ मराहिल व मनाज़िल पर बारीक निगाह करके अम्बिया-ए-साबक़ीन की कुतुब मुक़द्दसा के अल्फ़ाज़ को उन पर चस्पाँ करके तफ़सील वार ये बतलाएं कि आपके सवानिह हयात, मोअजज़ात बय्यिनात और कलिमात-ए-तय्यिबात में और उनकी किताबों की पेश ख़बरियों में हर पहलू से मुताबिक़त मौजूद है। हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) ने कभी अपनी मुक़द्दस ज़िंदगी के ख़फ़ीफ़ वाक़ियात में और अम्बिया-ए-साबक़ीन की किताबों के अल्फ़ाज़ में मुताबिक़त दिखला कर अहले-यहूद से ना फ़रमाया कि पेश गोइयों के अल्फ़ाज़ (जो सदीयों पहले के हैं) हू-ब-हू वाज़ेह और साफ़ तौर पर एक-एक करके मेरे लिए और सिर्फ़ मेरे लिए ही लिखे गए हैं। और उनका ताल्लुक़ अम्बिया साबक़ीन के ज़माने से या उन के नज़्दीक के मुस्तक़बिल से ना था। जब हज़रत कलिमतुल्लाह अम्बिया-ए-साबक़ीन का ज़िक़र करते हैं। तो इन मुक़ामात का सतही मुतालाआ भी ये ज़ाहिर कर देता है कि आपके ज़हन मुबारक में ताकीद लफ़ज़ी का खयाल तक मौजूद नहीं है बल्कि आपका ज़ोर बयान इन किताबों के रुहानी मफ़हूम की जानिब से उन अम्बिया के पैग़ाम का माहसल था। आप बताकीद फ़र्माते हैं कि बनी-इस्राईल के शारअ सलातीन, अम्बिया सब के सब इस रुहानी मक्सद के हुसूल और तकमील के देखने के ख़्वाहिशमंद थे जो आपकी मुबारक आमद से कामिल हुआ। (मत्ती 13:17, लूका 10:23 ता 24, 17:22, यूहन्ना 8:57, इब्रानियों 13:13, 29, 40, 1 पतरस 1:1 ता 12)

हाँ ये एक कुदरती बात थी कि जब आँखुदावंद के रसूल इन्जील नवीसों और मुबल्लिगों ने मुनज्जी आलमीन की ज़फ़रयाब क्रियामत के बाद आप के सवानिह हयात, सलीबी मौत और क्रियामत की रोशनी में अम्बिया-ए-साबक़ीन की कुतुब-ए-मुक़द्दसा का

मुतालआ किया तो उनको जगह-जगह ऐसे मुकामात नज़र आए जो हुज़ूर की ज़िंदगी मौत और क्रियामत पर ऐन बर्इन सादिक आते थे।

मसलन जब हम अम्बिया-अल्लाह की कुतुब का मुतालआ करते हैं तो हम पर जाहिर हो जाता है कि क़ौम इस्राईल के नबी खुदा की सलतनत के कायम करने में सदा कोशां रहते थे। लेकिन जब उन्होंने देखा कि शाहाँ-ए-इस्राईल उनके लायेहा-ए-अमल पर नहीं चलते बल्कि मुतअद्दिद नालायक बादशाह खुदा की बादशाहत के क़वानीन की सरीह खिलाफ़वर्ज़ी करके क़ौम इस्राईल के ज़वाल का बाइस बन रहे हैं। (2 तवारीख 18 बाब ता आखिर) तो वो एक सादिक बादशाह और रास्तबाज़ हुक्मरान की नबुव्वत करते जो अर्ज़-ए-मुक़द्दस पर सदाक़त से सलतनत करेगा और खुदा की बादशाहत ज़मीन पर कायम करेगा ऐसा कि एक नई ज़मीन और नया आस्मान माअरज़-ए-वजूद में आ जाएगा। मिसाल के तौर पर यसअयाह नबी की नबुव्वत मुलाहिज़ा फ़रमाएं :-

“यस्सी के तने से एक कोन्पल निकलेगी और उस की जड़ों से एक बारावर शाख पैदा होगी और खुदावंद की रूह उस पर ठहरेगी। हिक्मत और ख़िर्द की रूह मस्लिहत और कुदरत की रूह, मार्फ़त और खुदावंद के ख़ौफ़ की रूह, वो रास्ती से मिस्कीनों का इन्साफ़ करेगा। वो अपने लबों के दम से शरीरों को फ़ना कर डालेगा। उस की कमर का पटका रास्तबाज़ी होगी और उस के पहलू पर वफ़ादारी का पटका होगा। पस भेड़िया बर्रे के साथ रहेगा और चीता बकरी के बच्चे के साथ बैठेगा और बछड़ा और शेर बच्चा और पला हुआ बैल मिल-जुल कर रहेंगे। दूध पीता बच्चा साँप के बिल के पास खेलेगा। जिस तरह समुंद्र पानी से भरा है उसी तरह ज़मीन खुदावंद के इफ़ान से मामूर होगी। लोग यस्सी की इस जड़ के तालिब होंगे जो लोगों के लिए एक निशान है और उस की आरामगाह जलाल होगी।” (यसअयाह 11:1 ता 11, 4:5, 9:6, यर्मियाह 23:5 वगैरह)

इसी तरह जब अम्बिया-अल्लाह ने क़ौम इस्राईल की ज़बून हाली और अबतर हालत का मुलाहिज़ा किया तो वो दस्त-ए-तास्सुफ़ (अफ़सोस) मिलकर बार-बार अपनी क़ौम को वो अहद याद दिलाते थे जो उन्होंने ने खुदा से किया था और जिस को क़ौम ने अपनी बर्गुज़ीदगी को फ़रामोश करके पसे-पुश्त फेंक दिया था। इन अम्बिया ने उनको जतला दिया कि खुदा के लोग कामिल होंगे जब खुदा खुद उनके दर्मियान सुकूनत करेगा। (यसअयाह 9 बाब, सफ़नियाह 3:16-40, बाब ज़बूर 102 वगैरह)

लेकिन अहले-यहूद के अम्बिया में इस कद्र वुसअत नज़री ना थी कि वो मज़कूर बाला दोनों तसव्वुरात को यानी एक कामिल सुल्तान और एक कामिल कुद्दूस हस्ती के तसव्वुरात को किसी एक शख्सियत में यकजा कर के कहते कि खुदा की बादशाहत का बादशाह यानी खुद खुदा लोगों के दर्मियान सुकूनत करेगा। लेकिन जब सय्यदना मसीह मबऊस हुए तो आपके रसूलों और मुबल्लिगों ने देखा कि ये दोनों तसव्वुरात आपकी पाक और कामिल ज़ात में बवजह अहसन पाए जाते हैं। यही वजह है कि अनाजील अरबा में यसअयाह के चालीसवे (40) बाब का इतलाक आँखुदावंद पर किया गया है और इब्रानियों के खत का मुसन्निफ़ ज़बूर 102 को मसीह मौऊद की जानिब मन्सूब करता है। अला हाज़ा-उल-कयास सय्यदना मसीह के रसूलों ने आपकी ज़िंदगी में खुदा को देखा (यूहन्ना 14:8 ता 10) और उनको अम्बिया-ए-साबक़ीन की कुतुब मुकद्दसा के वो मुकामात याद आ गए जिनमें लिखा था कि खुदा खुद अपनी क़ौम के दर्मियान सुकूनत करेगा। (हिज़्कीएल 37:26 ता 28)

लेकिन जब अम्बिया-ए-साबक़ीन ने ये नबुव्वतें की थीं तो उन के अल्फ़ाज़ का हरगिज़ ये मक्सद ना था कि उनके काम करने के सदीयों बाद उन के अल्फ़ाज़ का इतलाक किसी खास मसीह मौऊद पर होगा। इन कुतुब मुकद्दसा के मसीही नाज़रीन इन अम्बिया के कलाम की सदाक़त को सय्यदना मसीह की ज़बान-ए-हक़ीक़त तर्जुमान की ताअलीम, मोअजिज़ात-ए-बय्यिनात, वाक़ियात ज़िंदगी, ज़फ़र-याब क्रियामत और सऊद आस्मानी में पाते थे। पस वो तबअन इन किताबों के मुख्तलिफ़ मुकामात को जो मुनज्जी जहान के सवानिह हयात की रोशनी में माअनी-खेज़ हो जाते थे आँखुदावंद की जानिब मन्सूब करते थे। ये मसीही नाज़रीन अम्बिया-ए-साबक़ीन के कलाम को आँखुदावंद की ज़ात-ए-बाबरकात पर चस्पाँ करके अपने हम-अस्र यहूद पर साबित करते थे कि सय्यदना मसीह सरवर अम्बिया है जिसकी ज़ात में इस्तिस्ना (18:15) के अल्फ़ाज़ बदर्जा अहसन पूरे होते हैं। (आमाल 3:14 ता आखिर, 7 बाब वग़ैरह) वो नए अहद के दर्मियानी हैं और आस्मान की बादशाहत के हक़ीक़ी फ़र्मांवा हैं। (मत्ती 25:31 ता 34, लूका 19:38, मुकाशफ़ा 17:14, 19:16 वग़ैरह)

इस सिलसिले में एक और अम्र काबिल-ए-ज़िक़र है। अम्बिया-ए-अकबर में से हज़रत यसअयाह नबी की किताब में खादिम यहोवा का आली मक़ाम तसव्वुर मौजूद है (अबवाब 40 ता आखिर) मसलन लिखा है कि खुदावंद फ़रमाता है :-

“मेरा खादिम बहुत सी क्रौमों को पाक करेगा। वो आदमीयों में हकीर मर्द-ए-गमनाक और रंज का आशना था। उस की तहकीर की गई और हमने उस की कुछ कद्र ना जानी तो भी उसने हमारी मशक्कतें उठा लीं और हमारे गमों को बर्दाश्त किया पर हम ने उसे खुदा का मारा कुटा और सताया हुआ समझा। हालाँकि वो हमारी खताओं के सबब से घायल किया गया और हमारी बदकिर्दारी के बाइस कुचला गया। हमारी ही सलामती के लिए उस पर सियासत हुई ताकि उस के मार खाने से हम शिफा पाएं। हम सब भेड़ों की मानिंद भटक गए। हम में से हर एक अपनी राह को फिरा पर खुदा ने हम सबकी बदकिर्दारी उस पर लादी। वो सताया गया तो भी उसने बर्दाश्त की और मुँह ना खोला। जिस तरह बर्ी जिसे ज़ब्ह करने को ले जाते हैं और जिस तरह भेड़ अपने बाल कतरने वालों के सामने बेज़बान हैं, उसी तरह वो खामोश रहा। वो जुल्म करके और फ़तवा लगा कर उसे ले गए पर उस के ज़माने के लोगों में से किस ने खयाल किया कि वो जिंदों की ज़मीन से काट डाला या गया? मेरे लोगों की खताओं के सबब से उस पर मार पड़ी हालाँकि उसने किसी तरह का जुल्म ना किया और उस के मुँह में हरगिज़ छल ना था।” (53:3 ता 9)

यसअयाह नबी की किताब के आखिरी 26 बाब के मुक़ामात और बिलखुसूस मज़कूर बाला मुक़ाम का एक-एक फ़िक्रह मुनज्जी आलमीन की जिंदगी और सलीबी मौत की रोशनी में माअनी-खेज़ हो जाता है। क्या ये जाये ताज्जुब है कि खुद सय्यदना मसीह ने और आप के रसूलों और मुबल्लिगों ने इन अबवाब के मुक़ामात का इतलाक़ आपकी मुबारक ज़ात पर किया? (लूका 4:18, 24:25, 22:22, आमाल 2:23, 8:32 ता 38 वगैरह)

इस मसअले पर एक और पहलू से निगाह कीजिए। अम्बिया-अल्लाह की कुतुब में काहिनों के मुताल्लिक़ ऐसे मुक़ामात वारिद हुए हैं, जिनको सय्यदना मसीह के रसूलों ने अपने मुनज्जी की जिंदगी और मौत की रोशनी में पढ़ कर आपकी ज़ात-ए-पाक पर चस्पाँ किए क्योंकि वो आपके सवानिह हयात की रोशनी में पुर-माअनी हो जाते हैं (ज़करीयाह 4:8, 6:12, ज़बूर 110 वगैरह) यहूदी मसीही मुबल्लगीन ने इन मुक़ामात के ज़रीये अपने हम-अस्र अहले-यहूद को समझाया कि आला तरीन कहानत का बेहतरीन मफ़हूम सय्यदना मसीह और सय्यदना मसीह की कहानत में ही कामिल तौर पर ज़हूर पज़ीर हुआ। (इब्रानियों 4:14, 10:25) अला हाज़ा-उल-कयास (इसी तरह) ज़बूर की

किताब में जाबजा एक कुद्दूस हस्ती का जिक्र आता है (ज़बूर 16:40 वगैरह) मसीही मुबल्लगीन ने हज़रत रूह-उल्लाह के सवानिह हयात की रोशनी में इन मुक़ामात का जब मुतालआ किया तो उन पर इन मुक़ामात का सही मफ़हूम रोशन हो गया।

पस अम्बिया-ए-साबक़ीन के वो अल्फ़ाज़ जिनका जिक्र इन्ज़ील जलील में आता है दरअस्ल सदीयों बाद के किसी आने वाले शख्स के लिए खासतौर पर पेश गोइयों के तौर पर नहीं लिखे गए थे। अस्ल हकीकत ये है कि इन अल्फ़ाज़ का ताल्लुक उन अम्बिया के ज़माने या उस ज़माने के नज़दीक के मुस्तक़बिल के किसी तवारीखी वाक़िये या शख्स के साथ था। मसलन यसअयाह नबी की ये इबारत मुलाहिज़ा हो :-

“खुदावंद ने आख़ज़ बादशाह से फ़रमाया, खुदावंद अपने खुदा से कोई निशान तलब कर लेकिन आख़ज़ ने कहा, मैं तलब नहीं करूंगा और खुदावंद को नहीं आज़माऊंगा तब उसने कहा, ऐ दाऊद के खानदान अब सुनो। क्या तुम्हारा इन्सान को बेज़ार करना कोई हल्की बात है कि मेरे खुदा को भी बेज़ार करोगे? लेकिन खुदावंद आप तुमको एक निशान बख़शेगा। देखो एक कुंवारी हामिला होगी और बेटा पैदा होगा और वो उस का नाम इम्मानुएल रखेगी। पर इस से पेशतर कि ये लड़का नेकी और बदी के रद्द व कुबूल के काबिल हो ये मुल्क जिस के दोनों बादशाहों से तुझको नफ़रत है वीरान हो जाएगा। (यसअयाह 7:10 ता 16) ज़ाहिर है कि इस नबुव्वत का ताल्लुक नज़दीक के मुस्तक़बिल के साथ है। लेकिन इन्ज़ील नवीस की नज़रों में आयत 14 के अल्फ़ाज़ हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) की पैदाइश की रोशनी में निहायत माअनी-खेज़ हो गए और उस को ऐसा दिखाई दिया कि गोया ये आँखुदावंद की पैदाइश का हू-ब-हू नक्शा है। (मत्ती 1:22 ता 23) इसी तरह जब मुख्तलिफ़ ज़माने के अम्बिया यहूदी क़ौम और अफ़राद के अख़लाक़ी अहया की ज़रूरत जतलाते हैं या बेहतरीन बादशाह का तसव्वुर पेश करते हैं या खुदा के इस खादिम का जिक्र करते हैं जिस पर क़ौम के गुनाहों की खातिर सियासत हुई ताकि क़ौम को ख़लासी हासिल हो तो अगरचे वो अपने ही दौर के ख़ास हालात और तारीखी वाक़ियात को मद्द-ए-नज़र रखकर खुदा का पैग़ाम अपनी क़ौम और नस्ल को पहुंचाते हैं ताहम कुतुब-ए-मुक़द्दसा के मसीही नाज़रीन के दिलों में वो पैग़ाम ऐसे खयालात कुदरतन पैदा कर देते हैं जिनकी तक़मील इन्ज़ील जलील के औराक़ में नज़र आती है। क्योंकि तमाम अम्बिया-अल्लाह की नबुव्वत का मुन्तहा खुदा का वो मक़सद है जो सय्यदना मसीह में कामिल और अकमल तौर पर पूरा हुआ।

हक़ तो ये हैं कि जब आँखुदावंद आए और रूहुल-कुददुस ने आपके रसूलों के ज़हन खोले तो उन पर ज़ाहिर हो गया कि हज़रत कलिमतुल्लाह की ज़िंदगी, मौत और क्रियामत के माअनी खेज़ वाक्रियात और उनके पिन्हानी मुतालिब अम्बिया-ए-साबक्रीन के तसव्वुरात से कहीं ज़्यादा बढ़ चढ़ कर थे। ये अम्बिया सय्यदना मसीह जैसे मसीह की सदीयों पहले तवक्क़ो ही ना रखते थे क्योंकि उन के ख़्वाब व ख़्याल में भी इस क्रिस्म की हक़ीकी हस्ती नहीं आ सकती थी जिसमें वो तमाम सिफ़ात मौजूद हों जो मुख्तलिफ़ अम्बिया मुख्तलिफ़ ज़मानों में अपनी क्रौम में देखना चाहते थे। अम्बिया-ए-यहूद की पेश ख़बरीयाँ मुंतशिर थीं और उन का ताल्लुक़ मुख्तलिफ़ ज़मानों की मुख्तलिफ़ हस्तीयों के साथ था। अगर एक नबी किसी मेयारी (Ideal) बादशाह की नबुव्वत करता है तो दूसरा किसी मेयारी काहिन की ख़बर देता है। तीसरा एक मेयारी “खादिम यहोवा” की ख़बर देता है जो अपनी जान दूसरों की ख़ातिर फ़िदये के तौर पर निसार कर देता है। चौथा एक कुददूस हस्ती की नबुव्वत करता है जिसकी ज़िंदगी आलम व आलमियान के लिए एक मेयार होगी वग़ैरह-वग़ैरह। ये मुख्तलिफ़ क्रिस्म की पेश गोईयां किसी एक ज़ात और शख्स से मन्सूब नहीं थीं। ये बात किसी शख्स के ख़्वाब व ख़्याल में भी ना आई थी और ना आ सकती थी कि मुख्तलिफ़ ज़मानों और मुख्तलिफ़ क्रिस्मों की ये पेश गोईयां किसी एक ज़ात में मजमाअ (जमा) हो सकती हैं। लेकिन जब रसूलों ने आँखुदावंद की ज़िंदगी, मौत और क्रियामत की रोशनी में उन पर नज़र की तो उनके हाथ एक ऐसी किलीद (चाबी) आ गई जो अम्बिया-अल्लाह की तमाम पेश ख़बरियों का वाहिद हल थी। चुनान्चे हज़रत मूसा, नातन नबी (2 समुएल 7 बाब) हज़रत आमोस, हज़रत होसेअ, हज़रत यसअयाह, हज़रत यर्मियाह, हज़रत मीकाह, मलाकी नबी, हज़रत दानीएल, (ज़बूर 2, 16, 22, 40, 69, 102, 110) के लिखने वालों की पेश ख़बरीयाँ और दीगर मुल्हम अम्बिया की माअनी-खेज़ पेश गोईयां हर पहलू से एक दूसरे से मुख्तलिफ़ हैं लेकिन ईसा नासरी की ज़ात-ए-कुदसी सिफ़ात पर वो सबकी सब बदर्जा अहसन कामिल व अकमल तौर पर सादिक़ आती हैं। हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) बादशाह है लेकिन सच्चाई की सल्तनत का बादशाह है। (यूहन्ना 18:37) वो ताजदार है लेकिन उस का ताज कांटों का है। (मत्ती 27:29 ता 38, लूका 23:42) वो मसीह है लेकिन मसीह मस्लूब भी है। (मत्ती 16:21 ता 26, मर्कुस 10:32 ता 33 वग़ैरह) वो खादिम यहोवा है जो हमारी ख़ातिर दुख उठाता है और अपनी जान बहतरो के बदले में फ़िदया देता है। (मत्ती 20:28) वो ख़ुदा है जो हमारे दर्मियान सुकूनत करता है। (यूहन्ना 1:14, 14:9, 12:45 वग़ैरह) वो काहिन है

जो मलिक-सिदक के तरीके का सरदार काहिन है। (इब्रानियों 7 ता 10 बाब) गरज़ कि इन्जील जलील में एक मसीह का नक्शा मौजूद है जिसमें वो तमाम सिफ़ात एक जगह जमा हैं जो बनी-इसाईल के मुख्तलिफ़ अम्बिया मुख्तलिफ़ ज़मानों और हालतों में अपने अपने मेयारी अश्खास में देखना चाहते थे। (लूका 10:24, इब्रानियों 11:13, 1 पतरस 1: 10 ता 12 वगैरह)

हज़रत सादी अलैहि रहमा का मिसरा :-

हसनत जमी खसाला

सय्यदना मसीह और सिर्फ़ सय्यदना मसीह की ज़ात-ए-पाक पर चस्पाँ हो सकता है।

पस हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) के रसूल, मुबल्लिग़ और इन्जील नवीस इस वाज़ेह हकीकत से आँखुदावंद की मसीहाई की सदाकत साबित करते हैं और अपने यहूदी हम-अस्रों के अलल-उल-ऐलान (खुले आम) कहते हैं “जो खुदावंद ने नबी की माफ़त कहा था पूरा हुआ।” (मती 1:22 वगैरह) समुएल नबी से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने कलाम किया उन सबने इन दिनों की खबर दी है। तुम नबियों की औलाद और उस अहद के शरीक हो जो खुदा ने तुम्हारे बाप दादा से बाँधा जब अब्राहाम से कहा कि तेरी औलाद से दुनिया के सब घराने बरकत पाएँगे। खुदा ने अपने खादिम ईसा को उठाकर पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हर एक को उस की बदियों से फेर कर बरकत दे।” (आमाल 3:24 ता 26) जो नबुव्वत का अस्ल मक़सद और हकीकी मफ़हूम है।

नबुव्वत का मफ़हूम और कुरआन

गो स्वर्गीय मिर्जा जी कह गए हैं (और मुस्लिम उलमा बिल-उमूम उनसे मुत्तफ़िक़ हैं) कि “नबुव्वत” और “पेशगोई” मुतरादिफ़ अल्फ़ाज़ हैं और कि इस्लामी इस्तिलाह में सिर्फ़ वही शख्स नबी कहलाने का मुस्तहिक़ है जिस पर “खुले तौर पर” और “बक़सत” उमूर गैबीया ज़ाहिर किए जाएं। लेकिन जैसा हम देख चुके हैं कि किताब-ए-मुक़द्दस का मुतालआ मिर्जा जी की इस तारीफ़ को बातिल करार देता है और आप के इस दाअ्वे की तक़ज़ीब करता है कि नबुव्वत के इस मफ़हूम पर तमाम नबियों का इत्तिफ़ाक़ है। हम

दिखला चुके हैं कि हकीकत इस के बिल्कुल बरअक्स है। हक़ तो ये है कि तमाम नबियों को छोड़ कोई एक शख्स भी महज़ पेश गोईयां करने की खातिर और सिर्फ पेशगोई की बिना पर कभी इस जलील-उल-क़द्र मन्सब पर सर्फ़राज़ नहीं किया गया।

कुरआन दानी के दो दर्जे हैं। एक दर्जा तिलावत का है जिसकी निस्बत कुरआन में आया है “यतलून किताब अल्लाहा” (یتلون کتاب الله) लेकिन इस से ऊपर का दर्जा कुरआन को गौर और तदब्बुर के साथ पढ़ने का है (प 26, रूकू 17) अगर हमारे मुसलमान भाई मुन्दरिजा बाला नज़रिया कायम करने से पहले कुरआन शरीफ़ का गौर व तदब्बुर से मुतालआ कर लेते तो अपने ग़लत रवैय्ये को इख़्तियार ना करते। कुरआन के मुताबिक़ सिर्फ़ अल्लाह ही आलिमुल-गैब है। (सूरह हुजरात रूकू 2 आयत 16 वगैरह) तमाम कुरआन को छान मारो इस सिफ़त में तुमको अल्लाह का कोई शरीक नहीं मिलेगा चह जायके वो महज़ इन्सान ज़ईफ़-उल-बयान (आदम) हो।

कुरआन मजीद साफ़ कहता है कि आँहज़रत भी उन्ही माअनों में नबी हैं जिन माअनों में अम्बिया-ए-साबक़ीन नबी थे। चुनान्चे मुश्ते नमूना अज़-ख़रवार (ढेर में से मिट्टी भर, चंद) है ज़ेल की चंद आयात मुलाहिज़ा हों। अरबी की इबारत को बख़ोफ़ तवालत छोड़ दिया गया है।

“ऐ मुहम्मद हमने तेरी तरफ़ ऐसी वही भेजी है जैसी हमने नूह और इस के बाद और नबियों और इब्राहिम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और उस की औलाद और ईसा और अय्यूब और यूनस और हारून और सुलेमान की तरफ़ भेजी थी और दाऊद को हमने ज़बूर की किताब दी। इनके इलावा कई रसूल हैं जिनका अहवाल हमने तुझे पहले सुनाया और कई रसूल हैं जिनका अहवाल हमने तुझे नहीं सुनाया। खुदा ने मूसा से बातें की थीं। बहुत दीगर रसूल आ चुके हैं जो बशारत देने वाले और डराने वाले थे ताकि उन रसूलों के बाद लोगों को खुदा पर इल्ज़ाम लगाने का मौक़ा ना रहे।” (सूरह निसा रूकू 23, आयत 161)

“ऐ मुहम्मद ! तुझसे भी वही कहा जाता है जो पहले रसूलों से कहा गया था। बेशक़ तेरे रब के मग़फ़िरत है और दर्दनाक अज़ाब भी है।” (सूरह हामीम सज्दा रूकू 5 आयत 42)

कुरआन आँहज़रत की बिअसत (रिसालत का ज़माना, रिसालत) के मक्सद को निहायत वज़ाहत के साथ बतला कर कहता है।

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّا أَرْسَلْنَاكَ شَاهِدًا وَمُبَشِّرًا وَنَذِيرًا

“ऐ नबी ! हमने तुझे गवाह और बशारत देने वाला और डराने वाला बना कर भेजा है और खुदा की तरफ़ उस के हुक्म से बुलाने वाला है और रोशन चिराग़ है।” (सूरह अहज़ाब रूकूअ 6, आयत 44)

पस कुरआन शरीफ़ भी किताब मुक़द्दस के हम ज़बान हो कर कहता है कि नबी का काम पेश गोईयां करना नहीं है बल्कि आम्मतुन्नास (लोगों) को राह-ए-हिदायत की तरफ़ दावत देना है। लिहाज़ा ये इस्लामी इस्तिलाह बातिल है क्योंकि कुरआन के खिलाफ़ है। इलावा अज़ीं जब हम देखते हैं कि कुरआन बार-बार आँहज़रत की बाबत कहता है कि आप उमूर ग़ैबीया से नावाक़िफ़ हैं तो ये बात अहले-बसीरत पर रोशन हो जाती है कि ये इस्तिलाह “इस्लामी” हो तो हो लेकिन “कुरआनी” और “मुहम्मदी” इस्तिलाह हरगिज़ नहीं हो सकती। चुनान्चे चंद आयात मुलाहिज़ा हों :-

قُلْ لَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ لَكُمْ إِنِّي مَلَكٌ

“तू (ऐ मुहम्मद) कह, कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास खुदा के खज़ाने हैं। मैं ये भी नहीं कहता कि मैं ग़ैब दान हूँ। और मैं ये नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ।” (सूरह अनआम रूकूअ 5 आयत 50)

फिर ताकीद व तकरार फ़रमाया :-

وَلَا أَقُولُ لَكُمْ عِنْدِي خَزَائِنُ اللَّهِ وَلَا أَعْلَمُ الْغَيْبِ وَلَا أَقُولُ إِنِّي مَلَكٌ وَلَا الَّذِينَ تَزْدَرِي أَعْيُنُكُمْ لَنْ يُؤْتِيَهُمُ اللَّهُ خَيْرًا اللَّهُ أَعْلَمُ بِمَا فِي أَنْفُسِهِمْ إِنِّي إِذَا لَبَّيْنُ الظَّالِمِينَ

“मैं तुमसे ये नहीं कहता कि खुदा के खज़ाने मेरे पास हैं। मैं नहीं कहता कि मैं ग़ैब दान हूँ और मैं नहीं कहता कि मैं फ़रिश्ता हूँ और मैं उनके हक़ में (जिन) को तुम्हारी आँखें हिकारत से देखती हैं नहीं कहता कि खुदा उनको कुछ भलाई देगा। जो कुछ उनके दिलों में है खुदा ख़ूब जानता है। लेकिन अगर मैं ऐसा कहूँ तो बेशक ज़ालिमों में हूँगा।” (हूद आयत 31 नीज़ देखो आराफ़ रूक़अ 23 वग़ैरह)

قُلْ مَا كُنْتُ بِدَعَا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَا أَدْرِي مَا يُفْعَلُ بِي وَلَا بِكُمْ إِنَّا أَتَّبِعُ إِلَّا مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ وَمَا أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُّبِينٌ

“तू (ऐ मुहम्मद) कह कि मैं कुछ नया रसूल नहीं हूँ। मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और नहीं जानता कि तुम्हारे साथ क्या होगा। मैं तो सिर्फ़ खोल कर डर सुनाने वाला हूँ।” (सूरह अहक़ाफ़ आयत 8)

मुहम्मद अरबी की पेश ख़बरीयाँ

मुन्दरिजा बाला साफ़ सरीह और वाज़ेह आयात-ए-कुरआनी की ऐन ज़द में मुफ़स्सिरों, रावियों और अर्बाब सैर ने हज़रत मुहम्मद की तरफ़ मुतअददिद पेश गोईयां मन्सूब की हैं और ये साबित करना चाहा है कि चूँकि ये पेश गोईयां पूरी हुई इस वास्ते आँहज़रत सादिक़ नबी थे लेकिन बअल्फ़ाज़ सर सय्यद मरहूम :-

“अहले सैर (सीरत लिखने वालों) ने सैर (सीरत) की किताबें तस्नीफ़ करते वक़्त रावियों के मोअतबर या ग़ैर-मोअतबर होने का कुछ ख़याल नहीं किया। जिस किसी ने जो किस्सा उनसे बयान किया उन्होंने उस को निहायत इश्तियाक़ से सुना। लेकिन उस किस्से की अस्लियत और रावी के चाल चलन की निस्बत ज़रा भी तफ़्तीश नहीं की और उस किस्से को अपनी किताब में लिख लिया।”

(ख़ुत्बात अहमदिया सफ़ा 320)

पस ये तमाम क्रिस्से मुतलक़ काबिल-ए-इल्तिफ़ात नहीं हैं और उनकी वक़अत सिफ़र से भी कम है क्योंकि वो सरीह कुरआनी आयात के खिलाफ़ हैं। हैरत तो ये है कि मौजूदा ज़माने के बाअज़ मुसलमान मुसन्निफ़ जो अपनी तहकीक़ पर नाज़ाँ हैं ऐसे बेसरोपा (बेमाअनी, बे-बुनियाद) किसस को अपनी कुतुब में बे सोचे समझे जगह दे देते हैं। मसलन **सीरत-उन्नबी मुसन्निफ़ा सय्यद सुलेमान मुजल्लद सोम** वगैरह।

मुहम्मद अरबी की निस्बत किताब-ए-मुक़द्दस में पेश गोईयां

चूँकि मुसलमान मुसन्निफ़ीन के दिमागों में ये ख़बत (जुनून) समाया हुआ है कि,

“किसी पैग़म्बर का दाअ्वा नबुव्वत उस वक़्त तक मुसल्लम नहीं जब तक ये साबित ना हो जाए कि पहले पैग़म्बरों ने इस की आमद की पेशगोई की है।”

(सीरत-उन्नबी मुजल्लद सोम सफ़ा 534)

लिहाज़ा उनको अम्बिया-ए-साबकीन की कुतुब के औराक़ पलटने पड़े ताकि आँहज़रत की नबुव्वत साबित कर सकें। पस उन्होंने तौरात व इन्जील और यहूदी रिवायत में तलाश-ए-बसियार (बहुत ज़्यादा तलाश) के बाद वो मुक़ाम ढूँढ निकाले जहां उन के ज़ोअम (ख़याल) में मुहम्मद अरबी के मबऊस होने की बशारतें मौजूद हैं। इन मुक़ामात को बनज़र-ए-तहकीक़ देखकर मरहूम सय्यद लिखते हैं :-

“अगरचे मैं इन बुजुर्ग आलिमों की कोशिश और मेहनत की निहायत क़द्र करता हूँ मगर इन सब का ज़िक़र करना ज़रूर नहीं समझता क्योंकि जो कुछ इन आलिमों ने अपनी अन थक मेहनत से निकाला है वो कैसा ही मुफ़ीद हो, अलअ-नुक्स (मगर कोताही) से खाली नहीं।”

सय्यद मरहूम इनमें से अक्सर मुक़ामात को रद्द करने के छः (6) सबब बतलाते हैं (सफ़ा 583) और जिन को वो मक़बूल करते हैं उनकी निस्बत भी लिखते हैं।

“तौरैत व इन्जील में आने वाले पैग़म्बरों की बशारतें ऐसी मुहमल (बेमाअनी, लायाअनी, फ़िज़ूल) और मुजमल तौर पर बयान हुई हैं कि पहली और मुअम्मे की मानिंद हो गई हैं और जब तक उनकी तशरीह ना की जाये और उन का हल ना बतलाया जाये उनका मतलब हर एक की समझ में नहीं आ सकता।”

(सफ़ा 585)

बाअज़ बशारतें जिनको सर सय्यद कुबूल करते हैं ऐसी मज़हकाखेज़ हैं कि हमें यकीन है कि अगर सय्यद मरहूम जैसे मुहक्किक़ इब्रानी ज़बान से खुद वाक्फ़ि होते तो इनको बेताम्मुल रद्द कर देते। इनका जवाब मरहूम पादरी टॉमस हाइल साहब ने रिसाला “बाइबल में मुहम्मद” में दिया है। इस मुआमले में सय्यद मरहूम ने “जनाब मौलाना बाफ़ज़ल अक्वलिना जनाब मौलवी इनायत रसूल साहब चिड़िया कोटी” की कोराना तकलीद की है क्योंकि मरहूम के खयाल में ये मौलवी साहब :-

“इब्रानी ज़बान और तौरैत मुक़द्दस के बहुत बड़े आलिम थे।”

(सफ़ा 605)

हालाँकि ये साहब (जैसा हम इंशा-अल्लाह आगे चल कर दिखला देंगे) इब्रानी से महज़ कोरे थे। सर सय्यद मरहूम के बाद के मुसलमान मुसन्निफ़ीन ने सर सय्यद की अंधा धुंद पैरवी की है। और कादियानी मुनाज़िर तो कासालेसी (खुशामदी, लालची) के लिए चारदांग (चारों तरफ़) आलम में मशहूर हैं।

कुरआन के सूरह आराफ़ में है :-

الَّذِينَ يَتَّبِعُونَ الرَّسُولَ النَّبِيَّ الْأُمِّيَّ الَّذِي يَجِدُونَهُ مَكْتُوبًا عِنْدَهُمْ فِي التَّوْرَةِ

وَالْإِنْجِيلِ

“जो लोग इस रसूल नबी उम्मी के ताबे होते हैं जिसको वो अपने यहां तौरैत और इन्जील में लिखा हुआ पाते हैं।” (रुकूअ 19, आयत 156)

सूरह सफ़ में है :-

“जब ईसा इब्ने-ए-मरियम ने कहा, ऐ बनी-इस्राईल मैं तुम्हारी तरफ़ अल्लाह का रसूल हो कर आया हूँ, मैं इस तौरैत का जो मुझ से आगे है मुसद्दिक हूँ और एक रसूल की बशारत देता हूँ जो मेरे बाद आएगा। उस का नाम अहमद होगा।” (आयत 6)

इन दो आयात की बिना पर अहले इस्लाम (जैसा हम ऊपर कह चुके हैं) शुरु ही से तौरात व इन्जील की अबस (फ़िज़ूल) वर्क गरदानी करते रहे ताकि किसी ना किसी तरह उन मुकामात का पता लगाएँ जहां मुहम्मद अरबी की बशारत है। उनमें से मुतअद्दिद मुकामात को सर सय्यद जैसे मुहक्किक ने मुख्तलिफ़ वजूह के बाइस रद्द कर दिया है। इन मुसलमान उलमा को कुरआन में ये तो मिला कि किसी आने वाले अहमद का ज़िक्र तौरैत व इन्जील में है। लेकिन कुरआन से उन को ये पता ना चला कि “नबी उम्मी” और “अहमद” का ज़िक्र इन किताबों के किन मुकामों में पाया जाता है।

इन्जील की आयत

बिल-आख़िर मुसलमान मुनाज़िरीन के हाथ दो मुकाम आए जिनकी निस्बत उनको यकीन है कि वो ऐसी साफ़-साफ़ बशारतें हैं जिनमें कुछ शुब्हा नहीं हो सकता। चुनान्चे पहला मुकाम इन्जील यूहन्ना के चौधवें (14) बाब की 25 वीं और 26 वीं आयात में है जहां यूनानी लफ़ज़ “पेरा कली तूस” (پيراكلى توس) आया है जिसके मअनी हैं “तसल्ली देने वाला।” ये मुस्लिम उलमा यूनानी ज़बान से नावाक़िफ़ थे। उन्होंने सुन लिया कि एक यूनानी लफ़ज़ है “पेरी कलू तूस” (پيرى كلو توس) जिसके मअनी “मशहूर या मारूफ़” हैं। लेकिन बखियाली एशां इस का तर्जुमा अरबी ज़बान में ठीक ठीक लफ़ज़ “अहमद” है। (सफ़ा

639) और उन के जोअम (खयाल) में बिलाशुब्हा इस बात का सबूत है कि इन्जील में अस्ल लफ़ज़ “पेरा कली तूस” (پیرا کالی توس) नहीं था बल्कि “पेरी कलू तूस” (پیری کلو توس) था। मसीही मुसन्निफ़ीन ने हज़ार समझाया कि दोनों लफ़ज़ों में और उन के माअनों में बाअद उल-मशरकीन (بعد المشرقین) है जिनका “नबी उम्मी” और “अहमद” से किसी किस्म का ताल्लुक नहीं। चह जायके वो मुहम्मद की बशारत हो लेकिन :-

दीवाना राहूए बस अस्त

دیوانہ راہوئے بس است۔

सर सय्यद बजा कह गए हैं कि :-

“तौरैत व इन्जील में आने वाले पैगम्बर की बशारतें ऐसी मुहमल (बेमाअनी, लायाअनी, फ़िज़ूल) और मुजमल तौर से बयान हुई हैं कि पहली और मुअम्मे की मानिंद हो गई हैं।”

हक़ बात तो ये है कि हमारे मुस्लिम उलमा पहले तो मैदान मुनाज़रे की राह खाक छानकर फ़िज़ा को अपने मफ़रूज़ा कज़ाया से गुबार आलूद कर देते हैं और फिर खुद ही शिकायत करते हैं कि उनको कुछ सुझाई नहीं देता। लेकिन अस्ल हकीकत यही है कि इस मुक़ाम में किसी आने वाले नबी की बशारत सिरे से मौजूद ही नहीं।

कुरआनी आयत की क़ादियानी तावील

मुस्लिम मुनाज़िरीन की ये पेश कर्दा बशारत ऐसी “पहेली और मुअम्मा” है कि एक तरफ़ तो बहवाला तिर्मिज़ी फ़त्ह-उल-बारी ये दाअ्वा किया जाता है कि हज़रत रसूल अरबी इस आयत के मिस्दाक़ हैं और दूसरी तरफ़ आँजहानी मिर्ज़ा-ए-क़ादियानी और उन के हवारी ये दाअ्वा करते हैं कि “अस्माहु अहमद” (اسمہ احمد) की पेशगोई मिर्ज़ा गुलाम अहमद और सिर्फ़ मिर्ज़ा गुलाम अहमद के हक़ में है और कि वो किसी दूसरे (यानी बानी इस्लाम) के हक़ में हरगिज़ नहीं, चुनान्चे स्वर्गीय मिर्ज़ा जी हकीकत (अन्नबुव्वह सफ़ा

265, 266) में कहते हैं “खुदा ने आज से बीस (20) बरस पहले “बराहीन अहमदिया” में मेरा नाम मोहम्मद और अहमद रखा है आपका ये शेअर भी मशहूर है :-

मनम मसीह ज़माँ व मनम कलीम खुदा
मुनज्जम मुहम्मद व अहमद के मुज्जबा बाशद

منم مسیح زماں و منم کلیم خدا
منم محمد و احمد کے مجتبیٰ باشد

(तिरयाक-उल-कुलूब सफ़ा 3)

और सुनिए :-

“इश्तिहार “एक ग़लती का इज़ाला” में है कि :-

محمد الرسول اللہ والذین معہ اشداء علی الکفار رحماء بینہم

“के इल्हाम में मुहम्मद रसूलुल्लाह से मुराद में हूँ और
मुहम्मद रसूलुल्लाह खुदा ने मुझे कहा है।”

अब इस इल्हाम में से दो बातें साबित होती हैं :-

(1) ये कि आप मुहम्मद हैं और आप का मुहम्मद होना बलिहाज़ रसूलुल्लाह होने के है ना किसी और लिहाज़ से (2) आपके सहाबा आपकी हैसियत से मुहम्मद रसूलुल्लाह के ही सहाबा हैं जो अशद अलल-कुफ़र (اشد علی الکفار) और रहिमा-बयनहुमा (رحماء) की सिफ़त के मिस्ताक़ हैं।

(अल-फ़ज़ल कादियान जिल्द 2 जिल्द नम्बर 10, 15 जुलाई 1915 ई.)

मिर्ज़ा जी मरहूम के खलीफ़ा मियां महमूद अहमद साफ़-साफ़ अल्फ़ाज़ में कहते हैं,

“अब यहां सवाल ये पैदा होता है कि वो कौन रसूल है जो हज़रत ईसा के बाद आया और जिस का नाम “अहमद” है। मेरा अपना दाअ्वा है और मैंने ये दाअ्वा यूँही नहीं कर दिया। बल्कि हज़रत मसीह मौऊद की किताबों में इसी तरह लिखा हुआ है और हज़रत खलीफ़-तुल-मसीह अव्वल ने भी ये ही फ़रमाया है कि मिर्ज़ा साहब अहमद हैं। चुनान्चे उनके दर्सी के नोटों में भी छपा हुआ है और मेरा ईमान है कि इस आयत “अस्महु अहमद” (اسمه احمد) के मिस्ताक़ हज़रत मसीह मौऊद ही हैं।”

(अनवार-ए-खिलाफ़त सफ़ा 21)

“जब इस आयत “अस्महु अहमद” (اسمه احمد) में एक रसूल का जिसका अहम ज़ात अहमद है ज़िक्र है दो का नहीं और इस शख्स का यकीन हम हज़रत मसीह मौऊद पर करते हैं तो इस से खुद नतीजा निकल आया कि कोई दूसरा इस का मिस्ताक़ नहीं। और जब हम ये साबित कर दें कि हज़रत मसीह मौऊद इस पेश गोई के मिस्ताक़ हैं तो ये भी साबित हो गया कि दूसरा कोई शख्स (यानी मुहम्मद अरबी) इस का मिस्ताक़ नहीं है।”

(अख़बार अल-फ़ज़ल कादियान 2, 5 दिसंबर 1916 ई.)

जिस तरह मसीही उलमा मुस्लिम मुनाज़िरीन को ये कहते हैं कि आँहज़रत का नाम तो “मुहम्मद” था लेकिन यहां बकौल शमा-कसी “अहमद” की पेशगोई है। इसी तरह जब किसी भले मानुस मुसलमान ने कादियानीयों से ये सवाल किया कि मिर्ज़ा जी का नाम तो गुलाम अहमद था लेकिन कुरआन में अहमद है तो इस सवाल का ये इल्हामी जवाब मिलता है :-

“आपका ये सवाल है कि “अस्महु अहमद” (اسمه احمد) में बशारत तो अहमद की है और मिर्ज़ा साहब गुलाम अहमद हैं। जवाबन अर्ज़ है कि मुतलक़ (नाम) गुलाम अहमद ना अरबी है क्योंकि इस हालत में ग़लामु अहमद होता और ना ये नाम

फ़ारसी बन सकता है क्योंकि गुलाम-ए-अहमद होता और यह नाम उर्दू हो सकता है कि क्योंकि इस सूरत में अहमद का गुलाम होना चाहिए था। अस्ल बात ये है कि चूँकि हज़रत साहब के खानदान में गुलाम का लफ़्ज़ अस्ल नाम के साथ इज़ाफ़े के तौर पर इस मुल्क के रिवाज के मुताबिक़ चला आता था इस वास्ते आपके नाम के साथ भी लगा दिया गया।² अहादीस में आया है कि मसीह जवान होगा और गुलाम के मअनी जवान के हैं जिससे ये बताया गया कि उस के काम जवानों के से हैं।”

(अल-फ़ज़ल कादियान जिल्द 3 नम्बर 107, मौरखा 28 अप्रैल 1916 ई.)

इन लगवयात से अरबाब-ए-दानिश (अक्लमंदों) की नज़रों में सर सय्यद अहमद का मकूला बिल्कुल दुरुस्त साबित होता है कि :-

“तौरत व इन्जील में आने वाले पैगम्बर की बशारतें मुहमल (बेमाअनी, लायाअनी, फ़िज़ूल) और मुजम्मल हैं और पहली और मुअम्मे की मानिंद हैं।” इस का असली और हकीकी सबब सिर्फ़ ये है कि वो सिरे से इस किस्म की बशारतें हैं ही नहीं।

तौरात की आयत

दूसरी बशारत जिसको सर सय्यद मरहूम साफ़ और मुस्तहकम कहते हैं कि, (इस्तिस्ना 18:15) से पेश की जाती है। इस पर हम अगले अबवाब में मुफ़स्सिल बहस करके इंशा-अल्लाह साबित कर देंगे कि इस में भी किसी एक खास आने वाले शख्स की पेशगोई मौजूद नहीं है।

दुनिया भर के मुस्लिम उलमा की गुज़श्ता चौदह (14) सदीयों की काविश के बावजूद उनको तमाम किताब मुक़द्दस में से कोई ऐसा “साफ़ और मुस्तहकम” मुक़ाम

2 “मुल्क के रिवाज़” की भी खूब कही। इस तावील की बतालत बहरहाल मिर्ज़ा जी के शजरे नसब से साबित है (देखो अल-बुरियत सफा 134 हाशिया) तोहफा शहज़ादा दिल्ज़ सफा 29, दाफे-उल-बला, सफा 13, रिव्यू ऑफ़ रिलिजियन्स बाबत जून 1906 ई., सफा हाशिया वगैरह। बरकतुल्लाह।

ना मिल सका जो पहली और मुअम्मे की मानिंद मुहमल (बेमाअनी, लायाअनी, फिज़ूल) ना हो और जिस में सदीयों बाद के किसी आने वाले शख्स की वाज़ेह तौर पर पेशगोई की गई हो। क्या ये अम्र इन के इस मफ़रूज़े को बातिल साबित करने के लिए काफ़ी नहीं है कि :-

“किसी पैग़म्बर का दावा-ए-नबूवत उस वक़्त तक मुसल्लम नहीं जब तक ये साबित ना हो जाए कि पहले पैग़म्बरों ने उस की आमद की पेशगोई की है।”

(सीरत-उन्नबी मुजल्लद सोम सफ़ा 534)

और कि :-

“खुदा तआला की तरफ़ से एक कलाम पाकर जो ग़ैब पर मुश्तमिल ज़बरदस्त पेश गोईयां मख़लूक को पहुंचाने वाला (हो) इस्लामी इस्तिलाह में नबी कहलाता है।”

(हुज्जत-उल्लाह सफ़ा 2)

हम दिखला चुके हैं कि खुद कुरआनी आयात इस मफ़हूम को बातिल और मर्दूद (गलत) करार देती हैं।

रोशन खयाल मुसलमान और मफ़हूम नबुवत

मौजूदा ज़माने के रोशन खयाल ताअलीम-याफ़ता मुसलमान इस किस्म के ग़ैर-कुरआनी खयालात के मुअतकिद (अक़ीदतमंद) नहीं। चुनान्चे चौधरी गुलाम अहमद साहब परवेज़ इस तबके के खयालात की यूं तर्जुमानी करते हैं :-

“आजकल के माकूलीयत पसंदों की जमाअत के नज़दीक रसूल का तसव्वुर ये है कि वो एक सियासी लीडर और मुस्लेह क़ौम होता है जो अपनी क़ौम की नकीत (बदहाली, इफ़लास, ग़रीबी) और ज़बून हाल से मुतास्सिर हो कर उनको अफ़लाह

वबहबूद की तरफ बुलाता है और थोड़े ही दिनों में उनके अंदर इंज़िबात (मज़बूती, ढंग) व ईसार की रूह फूंक कर ज़मीन के बेहतरीन खितों का उनको मालिक बना देता है। उस की हकीकत क़ौम के एक अमीर क़िस्म के होती है, जिनके हर हुक्म का इत्तिबा (इताअत, पैरवी) लाज़िमी होता है क्योंकि इन्हिराफ़ (ना-फ़र्माणी, इन्कार) से क़ौम की इज्तिमाई कुव्वत में इतिशार पैदा हो जाने का खतरा होता है। उस का हुस्न-ए-तद्बीर, अक़ल, हिक्मत, ज़हन इन्सान के इर्तकाओ की बेहतरीन कड़ी होता है। लेकिन उस की हकीकत दुनियावी मुस्लिहीन और बदतरीन से बिल्कुल जुदागाना होती है जो अपने माहौल की पैदावार होते हैं उनका फ़ल्सफ़ा-ए-इस्लाह व बहबूद उनके अपने परवाज़-ए-फ़िक्र का नतीजा होता है। जो कभी सही और कभी ग़लत होता है। बरअक्स इस के अम्बिया इकराम मामूर मिन-अल्लाह होते हैं और उनका सिलसिला इस दुनिया में ख़ास मशीयत बारी तआला के मातहत चलता है। उनका इतिखाब ममलकत एज़दी से होता है और उनका सरचश्मा उलूम व हिदायत बारी तआला से होता है। दुनियावी सियासत वह तफ़क्कुर सिफ़त है जो इकतिसाबन हासिल होती है और मशक़ व महारत से ये मुल्क बढ़ता है। लेकिन नबुव्वत एक मोहिब्वत (बख़िशश, पेशकश) रब्बानी और अता-ए-यज़्दानी है जिसमें कसब और मशक़ को दखल नहीं। क़ौम व उम्मत की तरक्की उनके भी पेश-ए-नज़र होती है। लेकिन सबसे मुक़द्दम अख़लाक़ इन्सानी की इस्लाह मक़सूद होती है। उस का पैग़ाम ज़मान व मकान की कुयूद से बालातर होता है। उस की इताअत में ख़ुदा की इताअत और उस की मअ्सियत ख़ुदा की मअ्सियत है। उनको ख़ुदा का पैग़ाम मिलता है जो अगरचे आलम अम्र से मुताल्लिक़ होने की वजह से सरहद इदराक़ इन्सानी से बालातर है लेकिन उस का वजूद महज़ इन्सान की मलकूती (फ़रिशतों) जैसी कुव्वतें नहीं होतीं।”

(माखूज़ अज़ मुक़द्दमा बहावलपुर सफ़ा 77 ता 79)

नाज़रीन पर जाहिर हो गया होगा कि ये खयालात गो इस्लामी इस्तिलाह से कोसों दूर हैं लेकिन वो किताब-ए-मुकद्दस और कुरआन शरीफ़ के तसव्वुर-ए-नबुव्वत के ज़्यादा नज़दीक हैं। नबुव्वत का ये मफ़हूम कठ मुल्लानों के क्रियास और ज़न (खयाल) पर मबनी नहीं है बल्कि हकीकत और अम्र वाक्रिया और अम्बिया-ए-किराम के हालात व पैग़ामात और मन्सबी फ़राइज़ की मुहक्कम बुनियादों पर कायम है।

नतीजा

अब जो ये साबित हो गया कि अम्बिया-अल्लाह का काम सिर्फ़ ये था कि वो अपनी क़ौम के लोगों को खुदा की तरफ़ दावत दें और कि सदीयों बाद के आने वाले अशखास और वाक्रियात की निस्बत पेश गोईयां करना उनके फ़राइज़ मन्सबी में दाखिल ना था। हमको उम्मीद है कि हर साहिबे-अक़ल पर ये रोशन हो गया होगा कि कोई ऐसी दलील काबिल-ए-कुबूल नहीं हो सकती जिसका मक़सद ये साबित करना हो कि फ़ुलां नबी ने बज़रीये इल्हाम वही एक ऐसे शख्स या वाक्रिये की खबर दी है जो उस के सदीयों बाद ज़हूर पज़ीर हुआ। इस किस्म की दलील बातिल होगी क्योंकि अक्वलन वो मक़सद-ए-नबुव्वत के सरासर खिलाफ़ है और सानियन वो नबुव्वत के अल्फ़ाज़ की ऐसी मन घड़त और नाकाबिल कुबूल तावील पर मबनी होगी जो सही उसूल तफ़सीर के मुनाफ़ी (खिलाफ) और काइल के अस्ल मंशा और मतलब के खिलाफ़ है।

इंशा-अल्लाह अगले बाब में हम साबित कर देंगे कि जो मुसलमान बिरादरान (इस्तिस्ना 18:15) को हज़रत मुहम्मद अरबी की नबुव्वत के सबूत में पेश करते हैं वो ना सिर्फ़ नबुव्वत के अस्ल मफ़हूम और मक़सद के खिलाफ़ दलील पेश करते हैं बल्कि इस आया शरीफ़ा पर जबर करके उस से वो कहलवाना चाहते हैं जो हज़रत मूसा के ख़्वाब व खयाल में भी ना था। उनकी ग़ैर-फ़ित्रती तावील में सियाक़ व सबाक़ इबारत का पास-ए-लिहाज़ नहीं और उन की तफ़सीर किताब मुकद्दस के अल्फ़ाज़ व मुहावरात के सरीह खिलाफ़ होने के इलावा आयत के अस्ल मंशा के कुल्लियतन मुनाफ़ी (खिलाफ) है और नबुव्वत के सही मफ़हूम कि एन ज़िद है।

बाब दोम

“बशारत-ए-मूसवी” की हकीकत मुसलमानों का दावा

मौलवी गुलाम नबी साहब तौरात शरीफ की किताब इस्तिस्ना के 18 वें बाब की 15 वीं और 18 वीं आयत को नक़ल करके कहते हैं :-

“अब सिवाए इस के जो बराहे तास्सुब इस साफ़ और रोशन बशारत से आँख बंद करले कौन कह सकता है कि ये बशारत हज़रत मुहम्मद के हक़ में नहीं।”

(सफ़ा 14)

सर सय्यद मरहूम भी कहते हैं :-

“इन आयतों में मुहम्मद रसूल ﷺ के मबऊस होने की ऐसी साफ़ और मुस्तहक़म बशारत है जिससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता।”

(सफ़ा 599)

सय्यद सुलेमान नदवी भी फ़र्माते हैं कि :-

“इन आयतों में वो मौऊदा नबी आँहज़रत ﷺ ही थे।”

(सीरत-उन्नबी जिल्द सोम सफ़ा 562)

जमाअत अहमदिया के मुफ़्ती मुहम्मद सादिक साहब भी कहते हैं :-

“ये पेशगोई हर पहलू से मुहम्मद ﷺ पर पूरी हुई और आप के सिवा किसी दूसरे शख्स के हक़ में इस का पूरा होना साबित नहीं हो सकता।”

तन्क्रीह तलब उमूर

हम नाज़रीन की खातिर किताब इस्तिस्ना के 18 वें बाब की मुताल्लिका आयात का इक्तिबास कर देते हैं ताकि नाज़रीन इबारत के सियाक व सबाक को देखकर और इस का मफ़हूम बखूबी समझ कर मालूम कर सकें कि :-

(1) आया इन आयात में कोई बशारत मौजूद है?

(2) अगर कोई बशारत मौजूद है तो क्या वो किसी खास एक नबी के लिए है जो हज़ारों बरस बाद आने वाला था?

(3) अगर इस बशारत का ताल्लुक किसी एक नबी के साथ है तो क्या वो मौजूद नबी हज़रत मुहम्मद है?

फ़स्ल अद्वल

सियाक-ए-इबारत

आयात की नक़ल

इस ज़ेर-ए-बहस मुक़ाम में जो हज़रत मूसा बनी-इस्राईल को खिताब करके अपनी वसीयत के दौरान (अबवाब 5 ता 31) में फ़र्माते हैं, (इस्तिस्ना 18 बाब आयात 9 ता 19)

“जब तू (ऐ क़ौम बनी-इस्राईल) इस मुल्क (कनआन) में जो खुदावंद तेरा खुदा तुझको देता है, दाखिल हो तो वहां की क़ौमों के से मकरूह काम करने ना सीखना।” यानी जब खुदावंद तेरा खुदा तेरे सामने से उन क़ौमों को इस जगह जहां तू उनका

वारिस होने के लिए जा रहा है काट डाले और तू इन का वारिस हो कर उनके मुल्क में बस जाये तो तू खबरदार रहना ता ऐसा ना हो कि जब वो तेरे आगे से नाबूद हो जाएं तो तू इस फंदे में फंस जाये कि उनकी पैरवी करे और उन के देवताओं के बारे में ये दर्याफ्त करके कि ये कौमें किस तरह अपने देवताओं की पूजा करती हैं मैं भी वैसा ही करुंगा।”

(इस्तिस्ना 12:29, 30 आयत)

“तुझमें (ऐ बनी-इस्राईल) हरगिज़ कोई ऐसा ना हो जो अपने बेटे या बेटी को आग में जलवाए।” यानी तू अपनी औलाद में से किसी को मौलिक (देवता) की खातिर आग में से गुज़ारने के लिए ना देना और (यूं) अपने खुदा के नाम को नापाक ना ठहराना।” (अहबार 18:21 नीज़ देखो 2 सलातीन 16:3, 21:6, 23:10, यर्मियाह 32:35, हिज़्कीएल 20 26 ता 31, 23:37 वगैरह)

“तुझमें हरगिज़ कोई शख्स ऐसा ना हो जो फ़ालगीर या शुगून निकालने वाला या अफ़सून गिरिया जादूगर या मंत्र पढ़ने वाला या जिन्नात का आशना या रुमाल या अर्वाह (रूहों) का तसखीर करने वाला हो। (देखो 2 सलातीन 17:17, अहबार 19:26 ता 31, खुरुज 22:18, 1 समुएल 28:7) क्योंकि वो सब जो ऐसे काम करते हैं खुदावंद के नज़्दीक मकरूह हैं और इन्ही मकरूहात के सबब से खुदावंद तेरा खुदा उनको तेरे सामने से निकालता है। तू खुदावंद अपने खुदा के हुज़ूर कामिल हो। वो कौमें जिनका तू वारिस होगा शगून निकालने वालों और फ़ालगीरों की सुनती हैं पर तुझको (ऐ बनी-इस्राईल) खुदावंद तेरा खुदा ने ऐसा करने की इजाज़त नहीं दी बल्कि खुदावंद तेरा खुदा तेरे ही दर्मियान से तेरे ही भाईयों में से मेरी मानिंद नबी बरपा करता रहेगा तुम उस की सुनना।”

“(ऐ बनी-इस्राईल) मैं (खुदावंद) ये बात तेरी इस दरख्वास्त के मुताबिक करुंगा जो तू ने खुदावंद अपने खुदा से मजमे के दिन होरेब में की थी। (देखो 9:10) कि मुझको ना तो खुदावंद अपने खुदा की आवाज़ फिर सुननी पड़े और ना ऐसी बड़ी आग ही का नज़ारा हो कि मर ना जाऊं। (देखो खुरुज 20:18 ता 19) और खुदावंद ने मुझ (मूसा) से कहा कि वो जो कुछ कहते हैं सो ठीक कहते हैं। पस मैं (खुदावंद) इनके लिए इन ही के

भाईयों में से (ऐ मूसा) तेरी मानिंद नबी बरपा करता रहूँगा और अपना कलाम उस के मुँह में डाला करूँगा (देखो यर्मियाह 1:9) और जो कुछ मैं उस (नबी) को हुक्म दूँगा वही वो उनसे कहेगा और जो कोई मेरी उन बातों को जिन को वो मेरा नाम ले कर कहेगा ना सुने तो मैं उस से हिसाब लूँगा।” (देखो यर्मियाह 29:19)

“लेकिन जो नबी गुस्ताख बन कर कोई ऐसी बात मेरे नाम से कहे, जिसके कहने का मैंने उस को हुक्म नहीं दिया और माअबूदों (देवताओं) के नाम से कुछ कहे तो वो कत्ल किया जाये, क्योंकि उसने तुमको खुदावंद तुम्हारे खुदा से बगावत करने की तर्गीब दी ताकि तुझको इस राह से जिस पर खुदावंद तेरे खुदा ने तुझको चलने का हुक्म दिया है बहकाए। यूँ तू अपने बीच में से ऐसी बदी को दूर कर देना।” (इस्तिस्ना 13:5)

हमने मुन्दरिजा बाला आयात (इस्तिस्ना 18:9 ता 20) में इस मुकाम पर बहस की तमाम इबारत को नक़ल करके किताब-ए-मुक़द्दस के दीगर मुक़ामात के हवाले और इक़तिबासात लिख दीए हैं ताकि इन के ज़रीये नाज़रीन पर इस इबारत की तमाम आयात का अस्ल मतलब सियाक़ व सबाक की रोशनी में ज़ाहिर हो जाए।

आयात की तफ़सीर

इस तमाम इबारत में आयात 13 ता 15 में वो बुनियादी नुक्ता पाया जाता है जो इस मुक़ाम के समझने की अस्ल कुंजी है, जिसमें मुश्रिक फ़ालगीरों और खुदा के नबियों का ज़िक्र है।

अहले-यहूद की हमसाया अक्वाम (क़ौमें) मुश्रिक और बुत-परस्त अक्वाम (क़ौमें) थीं। उन्हीं के साथ बनी-इस्राईल का रोज़ाना साबिका पड़ता था। जब कभी ये अक्वाम अपने देवताओं की मर्ज़ी मालूम करना चाहती थीं वो नुजूमियों, ग़ैब बीनों, फ़ालगीरों वग़ैरह की तरफ़ रुजू क्या करती थीं। मसलन बाबुल की क़ौम में ग़ैब दानी का इल्म उरूज पर था और ऐसा ग़ालिब था कि उनकी क़ौमी ज़िंदगी के हर शोअ्बे पर हावी हो गया था। चुनान्चे शुगूनों की ताबीर फ़ुनून-ए-लतीफ़ा में शुमार किया जाता था। हर क्रिस्म के जादू और सहर (जादू) का रिवाज आम हो गया था और ग़ैब बीन हर जगह नज़र

आते थे। तमाम मशरिकी ममालिक के कोने-कोने में कलदी नस्ल के ज्योतिषी, रुमाल, और फ़ालगीर मशहूर थे जिनका पेशा शुगूनों की तावील करना था।

इन मुश्रिकाना मज़ाहिब के अक्काइद बातिला के बरअक्स बनी-इस्राईल का माअबूद एक वाहिद खुदा-ए-कुददूस था जो अपने परस्तारों (इबादत गुज़ारों) से पाकीज़गी, हक़, इन्साफ़ और रहम वग़ैरह का मुतालिबा करता था। मुश्रिक अक्वाम (क्रौमों) के देवी देवताओं में ना तो ये सिफ़ात पाई जाती थीं और ना वो अपने परस्तारों से इस किस्म के औसाफ़-ए-हमीदा का मुतालिबा करते थे।

मज़कूर बाला आयात में बनी-इस्राईल को खुदा की मर्ज़ी मालूम करने के लिए ऐसे लोगों की जानिब रुजू करने की क़तई मुमानिअत की गई है जो ग़ैर-अल्लाह के परस्तार और मुश्रिकाना मज़ाहिब से ताल्लुक रखकर पेशावर फ़ालगीर, रुमाल, शुगूनों की ताबीर करने वाले, जादूगर, मंत्र पढ़ने वाले, जिन्नात के आशना या अर्वाह (रुहों) के तसखीर करने वाले थे। इस मुक़ाम में इस मुश्रिकाना ताइफ़ा की सबकी सब नौ अक्साम (मुख्तलिफ़ किस्मों) का ज़िक्र किया गया है और इन्फ़िरादी और इज्तिमाई तौर पर हर किस्म की क़तई मुमानिअत कर दी गई है। इस मुमानिअत में कोई पहलू नहीं छोड़ा गया ताकि किसी किस्म के गुरेज़ की गुंजाइश ना रहे। खुदा हज़रत मूसा की माफ़त बनी-इस्राईल को हुक्म देता है कि “ऐ बनी-इस्राईल तू इस किस्म के मकरूह काम ना सीखना। तुझमें कोई शख्स अपने बेटे या बेटी को मुश्रिक बुत परस्तों की तरह आग में कुर्बान ना करे और ना तेरी क्रौम फ़ालगीरों और शुगून निकालने वालों के पास मुस्तक़बिल को मालूम करने के लिए जाये। ऐ बनी-इस्राईल ऐसे लोगों की तरफ़ रुजू करने के बजाय तुम अपने खुदा की मर्ज़ी मालूम करने के लिए मेरे अम्बिया की तरफ़ रुजू किया करना। जिनको मैं तुम्हारी दरख्वास्त के मुताबिक़ तुम्हारे लिए तुम्हारे ही दर्मियान से हर ज़माने में हस्ब-ए-ज़रूरत वक़तन-फ़-वक़तन बरपा करता रहूँगा जिस तरह मैंने मूसा को बरपा किया है। तुम्हारी अर्ज़ के मुताबिक़ अब मैं तुमसे सीधा बराह-ए-रस्त मुखातब ना हुआ करूँगा, बल्कि मैं अपना कलाम अपने अम्बिया के मुँह में डालूँगा और अपनी मर्ज़ी और अहकाम को उनकी माफ़त तुम तक पहुंचाया करूँगा। तुम्हारा ये फ़र्ज़ होगा कि तुम मुश्रिक फ़ालगीरों वग़ैरह के बजाय उन मामूर-मिनल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से मुकर्रर किये हुए) नबियों की सुनो और अगर कोई इन अहकाम की खिलाफ़वर्ज़ी करेगा तो उस से मुवाख़िज़ा (जवाबतलबी) होगा। बनी-इस्राईल के अम्बिया का भी ये फ़र्ज़ होगा

कि वो क्रौम को सिर्फ वही बात पहुंचाएं जिसका मैंने हुक्म दिया है। लेकिन अगर कोई शख्स मामूर मिन-अल्लाह नबी होने का दावा करे और क्रौम को ऐसे अहकाम पहुंचाए जो खुदावंद तुम्हारे खुदा की ज्ञात व सिफात के मुनाफी (खिलाफ) हों, जिससे तुम सिरात मुस्तकीम (सीधे रास्ते) से बहक कर अपने खुदा-ए-वहिदा लाशरीक को तर्क कर दो तो जान लो कि वो शख्स झूटा नबी है। लिहाजा वो वाजिब-उल-कत्ल है, क्योंकि वो मेरी बर्गुज़ीदा क्रौम को मुझसे बगावत इख्तियार करने की तर्गीब देता है।

इन आयात में अम्बिया-अल्लाह के इख्तियार, सनद, मन्सब, ओहदा और इक़तदार का ज़िक्र है। इस मुकाम में जो मन्सब नबी को मिला है वो काबिल-ए-गौर है। यहां बनी-इस्राईल में नबी को वही दर्जा हासिल है जो मुश्रिकाना अक्वाम में फ़ालगीरों, अफ़सून गिरो वगैरह को हासिल था। **इन्सान की फ़ित्रत में तबअन ये ख्वाहिश मौजूद है कि ज़माना-ए-मुस्तक़बिल के पस-ए-पर्दा राज़ों से वाक़िफ़ हो। बिल-खुसूस मुसीबत के अय्याम में ये ख्वाहिश एक निहायत ज़बरदस्त तकाज़े की सूरत इख्तियार कर लेती है (मसलन देखो 1 समुएल 28 बाब) इस तिब्बी तकाज़े को पूरा करने के लिए मुश्रिकाना अक्वाम में रयाल, नज्मी और फ़ालगीर वगैरह का ताइफ़ा मौजूद था लेकिन खुदा ने बनी-इस्राईल को क़तई मुमानिअत करके ये हुक्म दिया कि इस मुश्रिक और बुत-परस्त ताइफ़ा (गिरोह, क्रौम) से किसी किस्म का ताल्लुक ना रखें क्योंकि खुदा इस ताइफ़ा की बजाय उनकी क्रौम में नबियों का सिलसिला बरपा करता रहेगा जिस तरह उस ने हज़रत मूसा को बरपा किया था। नबी हर ज़माने में हस्ब-ए-ज़रूरत खुदा की मर्ज़ी ज़ाहिर किया करेगा। और मुसीबत के ज़माने में क्रौम का राहनुमा हुआ करेगा। खुदा खुद बनी-इस्राईल के इस फ़ित्रती और तिब्बी तकाज़े को बेहतरीन, मौजूं तरीन और आला तरीन रुहानी मसाइल से पूरा करेगा। (गिनती 23:22, 23) क्योंकि वो अपना कलाम नबी के मुँह में डालेगा।**

पस इन आयात से ज़ाहिर है कि बनी-इस्राईल में नबुव्वत का सिलसिला इस मक़सद के लिए कायम हुआ ताकि बनी-इस्राईल में मुश्रिकाना रसूम वगैरह की क़तई तौर पर रोक-थाम हो जाए और खुदा की ये बर्गुज़ीदा क्रौम हमेशा के लिए बुत-परस्त अक्वाम से हर अम में अलग-थलग रहे।

क्या इन आयात में बशारत मौजूद है

हमने शरह व बस्त (वज़ाहत) के साथ किताब-ए-मुक़द्दस की आयात की रोशनी में ज़ेरे-बहस मुक़ाम की तफ़सीर कर दी है। नाज़रीन पर अब ज़ाहिर हो गया होगा कि तौरात शरीफ़ के इस मुक़ाम में खुदा की तरफ़ से ना तो कोई बशारत मौजूद है और ना हज़रत मूसा के हज़ारों बरस बाद आने वाले किसी खास एक नबी की पेशगोई मौजूद है। बल्कि इन आयात में खुदा का एक इमतीनाई (रोकने वाला) हुक्म है कि क़ौम बनी-इस्राईल मुश्रिकाना मकरूहात से क़तई परहेज़ करे। और यह हुक्म है वो मुश्रिक फ़ालगीरों की बजाय मामूर मिनल्लाह अम्बिया की तरफ़ रुजू किया करे जिनको वो बरपा किया करेगा जिस तरह उसने हज़रत मूसा को बरपा किया था। ये अम्बिया बुत-परस्त फ़ालगीरों के से तरीक़े इख़्तियार नहीं करेंगे बल्कि खुदा-ए-बरहक़ के पयाम्बर होंगे। इस के साथ ही क़ौम इस्राईल और अम्बिया दोनों के लिए ताज़ीब (दुख देना) है कि अगर वो अपने-अपने फ़राइज़ से गाफ़िल हो जाएंगे तो सज़ा पाएँगे। बनी-इस्राईल सर-ज़मीन-ए-कनआन से जो उनका मौऊदा मुल्क है, (आयत 9) जिलावतन हो कर दर-बदर मारे फ़िरेंगे। (यर्मियाह 16:10 ता 13, 19 बाब वगैरह) और काज़िब नबी क़त्ल किए जाएँगे।

कुरआन मजीद मज़कूर बाला आयात का मफ़हूम ब-ई इस अल्फ़ाज़ अदा करता है,

“मूसा ने अपनी क़ौम से कहा, कि ऐ क़ौम खुदा की वो नेअमत जो तुम पर है याद करो। उसने तुम में नबी पैदा किए और तुम को बादशाह बनाया और तुम को वो कुछ दिया जो जहान में किसी को ना दिया था।” (सूरह माइदा आयत 23)

फिर कहता है :-

“खुदा ने बनी-इस्राईल से अहद लिया और उन में बारह (12) सरदार बरपा किए और अल्लाह ने कहा कि मैं तुम्हारे साथ हूँ अगर तुम नमाज़ें पढ़ते और ज़कात देते और हमारे नबियों पर ईमान लाते रहो और उनकी मदद करते रहो और खुदा को क़र्ज़-ए-हसना देते रहो तो मैं तुमसे तुम्हारी बदीयाँ दूर कर दूंगा। इस के बाद तुम में से जो कोई इन्हिराफ़ (ना-फ़र्मांनी) करेगा वो बेशक सीधी राह से भटक गया। सो इन की अहद शिकनी (वादे खिलाफी) के सबब हमने उनको फटकार दिया और उन के दिल स्याह कर दिए।” (माइदा 3)

तौरात शरीफ़ की आयात का सतही मुतालआ भी ज़ाहिर कर देता है कि इस मुक़ाम में किसी एक नबी की आमद का ना तो ज़िक्र मक़सूद हो सकता है और ना ऐसी आमद की तरफ़ इशारा ही मौजूद है। यहां खुदा तआला ज़माना-ए-मुस्तक़बिल (आने वाले ज़माने) में क़ौम इस्राईल के लिए अम्बिया का एक सिलसिला क़ायम करने का वाअदा फ़रमाता है जिसके ज़रीये वो अपनी मर्ज़ी बनी-इस्राईल पर ज़ाहिर किया करेगा जिस तरह उसने अपनी मर्ज़ी हज़रत मूसा के ज़रीये ज़ाहिर की थी। तारीख़ इस अम्र पर गवाह है कि अम्बिया किराम हज़रत मूसा के काम को मुतवातिर और मुसलसल तौर पर मुख्तलिफ़ ज़मानों में मुदाम (मुतवातिर) बरकरार और पैहम (लगातार) जारी रखते रहे। हज़रत मूसा बनी-इस्राईल में नबुव्वत का संग-ए-बुनियादी रखने वाले थे और बाद के अम्बिया इस बुनियाद पर एक निहायत ज़बरदस्त और आलीशान इमारत के खड़ा करने वाले थे। ये अम्बिया-अल्लाह उस अहद को जो हज़रत मूसा की माफ़त खुदा और बनी इस्राईल में बाँधा गया बतरज़ अहसन समझने वाले और अपने-अपने ज़माने में इस अहद के उसूलों पर अमल दरआमद करने और कराने वाले थे। वो हर ज़माने में हज़रत मूसा के जानशीन रहे। (मत्ती 25:2) वो हुकूमत इलाहिया के अलमबरदार थे और उन्होंने ने मरना कुबूल किया लेकिन मुखालिफ़ हालात में भी अपने पर्चम को सर-निगूँ होने ना दिया। (2 तवारीख़ 24:21, मत्ती 14:1 ता 12, 23:35 ता 37 वगैरह)

ताइफ़ा (गिरोह) अम्बिया

ये अम्बिया किराम क़ौम-ए-इस्राईल के मुख्तलिफ़ तबकों और हिस्सों से बरपा किए गए। बनी-इस्राईल के जिस फ़िक्रें और तबके से खुदा को ऐसा शख्स मिला जो उस का पैग़ाम पहुंचाने की सलाहीयत रखता था खुदा उस को मामूर फ़रमाता था। पस अम्बिया किसी ख़ास क़बीले या तबके के नहीं होते थे बल्कि क़ौम के मुख्तलिफ़ क़बाइल में से (तेरे ही भाईयों में से) मुख्तलिफ़ ज़मानों में मुंतख़ब किए जाते थे। मसलन हज़रत समुएल, हज़रत यर्मियाह, हज़रत हिज़्कीएल काहिनों के तबके से मुताल्लिक़ थे। हज़रत यसअयाह यरूशलेम के अराकीन दरबार में से थे। हज़रत मीकाह और हज़रत उरियाह (यर्मियाह 26:20) क़स्बात के रहने वाले थे। हज़रत आमोस गल्लाबान और चरवाहे थे। (7:1, 7:10 ता 17) औरतें भी नबुव्वत किया करती थीं। मसलन हज़रत मर्यम, बीबी दबूरा, बीबी खुलदा (2 सलातीन 22:14, लूका 2:36 वगैरह) अहले-यहूद फ़ख़िया कहा

करते थे कि इस्राईल के मुल्क में कोई ऐसा शहर नहीं जिसमें से नबी बरपा नहीं हुआ रब्बी एलीअज़र का मकौला मशहूर है कि :-

“इस्राईल के क़बाइल में से तुमको कोई ऐसा क़बीला ना मिलेगा जिसमें से कोई नबी मबऊस ना हुआ हो।”³

ये अम्बिया ख़ुदा का पैग़ाम क़ौम को पहुंचाया करते थे अगर मुख़ालिफ़ हालात की वजह से या किसी और वजह से किसी नबी को अहद नबुव्वत के कुबूल करने में पसोपेश होता तो ख़ुदा उस की बुलाहट के एहसास को बेश अज़-पेश तेज़ कर देता ऐसा कि उस को चार व नाचार ख़ुदा के बुलावे को कुबूल करना पड़ता। (यर्मियाह 1:5 ता 6, आमोस 3:8, गिनती 22:38 वगैरह) नबी अंदरूनी जबर और बातिनी दबाओ के मातहत ख़ुदा का कलाम बोलते थे। (यर्मियाह 20:9) उनमें ख़ुदा का रूह मुहरिक होता था और वो तहरीक रब्बानी से मज्बूर हो कर ख़ुदा का पैग़ाम क़ौम को देते थे। (मीकाह 3:8) इस पैग़ाम का नफ़स-ए-मज़मून ख़ुद नबी की सदाक़त का ज़ामिन होता और सिर्फ़ यही तस्दीक़ सादिक़ (सच्चे) व काज़िब (झूटे) नबी की कसौटी (परखने का आला) थी। जिससे क़ौम मालूम कर सकती थी कि ये कलाम ख़ुदा की तरफ़ से है या नहीं।

ये बात ज़िक़र करने के काबिल है कि किसी नबी की अनानीयत और इन्फ़िरादी शख़्सियत नबुव्वत की वजह से फ़ना नहीं हो जाती। हर नबी के पैग़ाम का तरीका और मज़मून ख़ुसूसी होता था जो सिर्फ़ उसी से मख़सूस था। मसलन हज़रत मूसा, हज़रत यसअयाह, हज़रत यर्मियाह, हज़रत हिज़्कीएल वगैरह सब ख़ुदा के नबी थे, लेकिन हर एक की नबुव्वत का तरीका और तर्ज बयान जुदागाना था। हर नबी अपने ख़ुसूसी नुक्ता निगाह से अपनी क़ौम तक ख़ुदा का पैग़ाम पहुँचाता था। (यर्मियाह 36:4, 10) ऐसा कि कुतुब-ए-मुक़द्दसा का पढ़ने वाला जानता है कि हज़रत हिज़्कीएल का तरीका हज़रत मूसा का सा ना था और हज़रत यर्मियाह का तरीका हज़रत यसअयाह का सा ना था। इब्रानियों के ख़त के मुसन्निफ़ के अल्फ़ाज़ में ख़ुदा ने हिस्सा बह हिस्सा और तरह बह तरह नबियों की मार्फ़त कलाम किया (इब्रानियों 1:1) हर नबी की लियाक़त, लताफ़त, इस्तिदाद (सलाहियत), ज़हनी नशव व नुमा, मौका बीनी, क्रियाफ़ा (क्रियास, अक्ल),

³ Hoskyns, the fourth Gospel vol.2.p371

फिरासत (दानाई), मार्फत, रिफअत खयाल, वुसअत नज़र, पाकीज़गी कल्ब (दिल) और इल्म व अक्ल वगैरह में इख्तिलाफ़ था और इस इख्तिलाफ़ की बिना पर बाअज़ अम्बिया-अल्लाह अम्बिया-ए-असगर (छोटे नबी) और बाअज़ अम्बिया-ए-अकबर (बड़े नबी) हुए।

ज़माना इबतिला और नबी की आमद

तारीख़ शाहिद (गवाह) है कि मुक़ाम ज़ेर-ए-बहस के मुताबिक़ क़ौम-ए-इस्राईल के लोग हर ज़माने में और बिल-खुसूस क़ौम की ख़स्ता-हाली और ज़वाल के दिनों में हमेशा किसी ना किसी की आमद के मुंतज़िर और मामूर मिनल्लाह (ख़ुदा की तरफ़ से) शख्स की राह देखा करते थे। मसलन बनी-इस्राईल की असीरी (क़ैद) के ज़माने में वो हज़रत हिज़्कीएल से ख़ुदा की मर्ज़ी दर्याफ़्त करने को जाते थे। (हिज़्कीएल 8:1, 14:1, 20:1 वगैरह) और जब मुसीबत के ज़माने में उनको ख़ुदा का कोई नबी ना मिलता तो वो वावेला मचाया करते थे। (1 समुएल 3:1, नोहा 2:9 वगैरह) चुनान्चे एक ज़बूर नवीस लिखता है। “ऐ ख़ुदा तूने हमको हमेशा के लिए तर्क कर दिया। तू कोह-ए-सिय्यून को याद कर और उन सब ख़राबियों की तरफ़ नज़र कर जो दुश्मन ने तेरे मुक़द्दस में की हैं। उन्होंने तेरे मुक़द्दस को नापाक किया है और ख़ुदा के सब इबादत ख़ानों को जला दिया है। हमारे निशान तक नज़र नहीं आते और कोई नबी नहीं रहा और हम में कोई नहीं जानता कि ये हाल कब तक रहेगा। ऐ ख़ुदा अपने वाअदे का खयाल फ़र्मा।” (ज़बूर 74, नीज़ देखो ज़बूर 22, 44, 60, 79, 89 वगैरह) ऐसे तारीक़ ज़मानों में ख़ुदा अपने उस वाअदे का जो ज़ेर-ए-बहस मुक़ाम में मौजूद है। खयाल फ़रमाकर क़ौम बनी-इस्राईल की सही रहनुमाई के लिए नबी बरपा कर देता। (1 समुएल 3:20 ता 21 वगैरह) ताकि वो क़ौम को ख़ुदा का पैग़ाम पहुंचाए। ख़ुदा क़ौम पर रहम फ़रमाता और क़ौम की हालत सुधर जाती। (यर्मियाह 29:10 ता 14)

नतीजा

पस साबित हो गया कि तौरैत शरीफ़ की किताब इस्तिस्ना की मुन्दरिजा बाला आयात में कोई बशारत मौजूद नहीं चह जायके वो किसी ख़ास एक नबी की बशारत हो

जो हज़रत मूसा के हज़ारों साल बाद आने वाला था। बल्कि मुक़ाम-ए-ज़ेर-ए-बहस में खुदा की तरफ़ से मुमानिअत के अहकाम और सिलसिला नबुव्वत के क्रियाम और ताअज़ीब (दुख देना) के वाअदे मौजूद हैं। ये भी साबित हो गया कि इन आयात में कोई खास नबी मुराद नहीं बल्कि इनमें ऐसे हर नबी का ज़िक्र है जो बनी-इस्राईल की हिदायत के लिए मबऊस हो कर क़ौम यहूद की तरफ़ भेजा गया और हज़रत मूसा से लेकर हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) तक हर वो नबी जो अम्बिया-अल्लाह की सफ़ में खड़ा है इस वाअदा ईलाही की तक्मील का जीता जागता सबूत है जिस तरह बनी-इस्राईल की बर्बादी के ज़माने वाअदा ताअज़ीब के तारीखी सबूत हैं।

फ़स्ल दोम

किताब-ए-इस्तिस्ना की आयात और

सय्यदना ईसा नासरी

क़ौम यहूद की तारीख और आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस

गुज़श्ता फ़स्ल से नाज़रीन पर वाज़ेह हो गया होगा कि आयात ज़ेर-ए-बहस के सियाक़-ए-इबारत से ज़ाहिर है कि इनमें ना तो किसी खास नबी का ज़िक्र है और ना किसी एक नबी की बशारत मौजूद है। इन आयात में खुदावंद करीम का वाअदा है कि जब कभी ज़रूरत लाहक़ होगी वो हस्ब-ए-मौका क़ौम यहूद में नबी पैदा कर देगा जो उस वक़्त और ज़माने के लिए हज़रत मूसा का जानशीन हो कर उस के से फ़राइज़ अदा करेगा। हम ज़िक्र कर चुके हैं कि बनी-इस्राईल की तारीख में ये ज़रूरत बार-बार मुख्तलिफ़ ज़मानों में पेश आई जिसको खुदा अपने करम व फ़ज़ल से पूरा करता रहा। पस इस मुक़ाम में कोई खास नबी मुराद नहीं बल्कि एक मुस्तक़िल खुदावंदी दस्तूर और ईलाही रिवाज का ज़िक्र है।

इस ईलाही मामूल की हकीकत को क़ौमे इस्राईल की तारीख़ वाज़ेह तौर पर साबित कर देती है। चुनान्चे हज़रत मूसा के बाद जब बनी-इस्राईल बग़ैर किसी लीडर के रह गई तो खुदा ने हज़रत यशूअ को बरपा किया और फ़रमाया जैसे मैं मूसा के साथ था वैसे ही तेरे साथ रहूँगा। तू हौसला रख, ख़ौफ़ ना खा और बे दिल ना हो।” (यशूअ 1:5 ता 10) जब यशूअ के बाद बनी-इस्राईल ने खुदावंद को छोड़ दिया और बाअल और अस्तारात (बुतों) की परस्तिश करने लगे तो वो जहां जाते अज़ीयत पाते ऐसा कि वो निहायत तंग आ गए। “तब खुदा ने उनके लिए नबी बरपा किए जो काज़ी भी थे।” (कज़ा 2:11 ता 18, 3:9) इस के बाद खुदा ने यरबअल, बदान, अफ़ताह और समुएल नबी को बरपा किया। (कज़ा 12:11) और खुदा ने हज़रत समुएल की मार्फ़त अम्बिया का तबक़ा मुस्तक़िल तौर पर कायम कर दिया। (1 समुएल 19:20)

पस अम्बिया-ए-यहूद की तारीख़ की किताबें भी जो यहूदी कुतुब-ए-मुक़द्दसा के मजमूए में मौजूद हैं साबित करती हैं कि खुदा हर ज़माने में क़ौम-ए-इस्राईल की हिदायत के लिए नबी पैदा कर देता था। बिल-खुसूस जब ये क़ौम किसी मुसीबत में गिरफ़तार होती तो वो खुदावंदी इर्शाद को याद करके अपने खुदा के हुज़ूर नाला व फ़रियाद करती और किताब-ए-मुक़द्दस की कुतुब-ए-तारीख़ से और कुतुब-ए-अम्बिया-ए-असग़र व अक़बर से ज़ाहिर है कि खुदा उनकी आह ज़ारी सुनकर उनके लिए नबी बरपा कर देता जो उनके लिए शम्मा हिदायत होते थे।

चुनान्चे एक मज़मूर नवीस बनी-इस्राईल की तारीख़ पर नज़र करके लिखता है, खुदावंद की हम्द करो, खुदावंद का शुक्र करो कि वो भला है और उस की शफ़क़त अबदी है। हमने और हमारे बाप दादा ने गुनाह किया। उन्होंने मिस्र में तेरे अजाइब ना समझे बल्कि बहर-ए-कुल्जुम पर बागी हुए तो भी उसने उनको अपने नाम की खातिर बचाया। फिर वो जल्द उस के कामों को भूल गए और सहारा में खुदा को आज़माया। उन्होंने जवाब में एक बछड़ा बना लिया और ढाली हुई मूर्त को सज्दा किया वो अपने मुनज्जी खुदा को भूल गए तब उसने उनके खिलाफ़ क़सम खाई कि मैं उनकी नस्ल को क़ौमों के दर्मियान गिरा दूँगा। वो बुतों की कुर्बानियां खाने लगे और अपने आमाल से उस को गज़बनाक किया और वबा उनमें फूट निकली। तब फ़िनहास उठा और बीच में आया और वबा रुक गई। उन्होंने खुदा को मरीबा के चशमे पर भी गज़बनाक किया। वो ग़ैर-अक्वाम के साथ मिलकर उनके से काम सीख गए और उन के बुतों की परस्तिश करने लगे जो

उनके लिए फंदा बन गए। बल्कि उन्होंने अपने बेटे बेटियों को शयातीन के लिए कुर्बान किया। यूं वो अपने ही कामों से आलूदा हो कर अपने फेअलों से खुदा से बेवफ़ा हो गए। इसलिए खुदा का क्रहर अपने लोगों पर भड़का और उस ने उनको क्रौमों के कब्ज़े में कर दिया और उन के दुश्मन उन पर हुक्मरान हो गए। उसने तो बार-बार उनको नजात दी लेकिन उनका मश्वरा बाग़ियाना ही रहा। तो भी जब उसने उनकी फ़र्याद सुनी तो उनके दुखों पर नज़र की और उस ने उनके हक़ में अपने अहद को याद फ़रमाया और अपनी शफ़क़त की कस्रत के मुताबिक़ तरस खाया। (ज़बूर 106, नीज़ देखो ज़बूर 81 वग़ैरह)

सय्यदना ईसा मसीह की बिअसत का ज़माना

तारीख़ हमको बतलाती है कि सय्यदना ईसा की बिअसत का ज़माना बनी-इस्राईल की नक़बत (बदहाली) और इतिहाई ज़बूनी का ज़माना था। खुदा की इस बर्गुज़ीदा क्रौम पर बुत-परस्त कयासिरा रुम (रुम के शहनशाह) हुक्मरान थे। अहले-यहूद का काफ़िया (पीछे चलने वाला) ऐसा तंग हो गया था कि वो बार-बार अपने हुक्मरानों के खिलाफ़ सर उठाते थे और हर बार उनकी सरकूबी की जाती थी। (आमाल 5:36 ता 37) जिस तरह फ़राइना (फ़िरऔन की जमा, बादशाह) मिस्र के ज़माने में बनी-इस्राईल पर अर्सा हयात तंग हो गया था इसी तरह वो कयासिरा रुम (रुम के बादशाह) के जोए तले नालां थे और कहते थे कि ये ये ग़ैर-अक्वाम का ज़माना है। (लूका 21:24) और इस इतिज़ार में थे कि कब कोई मूसा सानी बरपा हो और उनको गुलामी से नजात दिलाए। बनी-इस्राईल के मुतअद्दिद दीनदार मर्द और औरतों के गिरोह खुदा के वाअदे की तरफ़ आँख उठाए इस्राईल की तसल्ली और खुदा की बादशाहत के क्रियाम के मुंतज़िर थे। (लूका 2:25 ता 37, 24:21 वग़ैरह) इस गिरोह में बड़े और छोटे, आलिम और जाहिल, शहरों और गांव के रहने वाले थे। इनमें काहिन भी थे, फ़रीसी भी थे लावी भी थे, सदर मज्लिस के अरकान भी थे, अवाम भी थे। गर्ज़ ये कि इस गिरोह में खूदों कलां सभी शामिल थे। (मर्कुस 15:43, यूहन्ना 1:19, मत्ती 3:5, लूका 24:21 वग़ैरह) बनी-इस्राईल ज़बून हाली में “अंधेरे और मौत के मुल्क और साये में बैठे थे।” (मत्ती 4:16) और इस इतिज़ार में थे कि खुदा अपने वाअदे को जो ज़ेर-ए-बहस आयात में है याद फ़रमाएगा और जिस तरह उसने हज़रत मूसा और दीगर अम्बिया की मार्फ़त क्रौम इस्राईल को पहले ज़मानों में छुटकारा दिया था, (ज़बूर 44, 78 वग़ैरह) इसी तरह अब भी “हमारे खुदा की ऐन रहमत

से आलम-ए-बाला का आफ़ताब हम पर तुलूअ करेगा ताकि उनको जो अंधेरे और मौत के साये में बैठे हैं, रोशनी बख़्शे और हमारे कदमों को सलामती की राह पर डाले। (लूका 1:78 ता 79) ये सब के सब “इस्राईल के छुटकारे के मुंतज़िर थे।” (लूका 2:38, 1:68, आमाल 28:20 वगैरह) ऐसा कि यहूदी रब्बी “इस्राईल की तसल्ली से मुराद” खुदा का ममसूह नबी लेते थे।⁴ (यसअयाह 40:1, 49:13, 51:3, 61:2, 66:13, लूका 2:25) नबी मौऊद के लिए इंतज़ार इस शिद्दत का था और खूदों कलां में इस कद्र आम था कि कसम खाते वक़्त वो कहते थे मुझे “इस्राईल की तसल्ली की कसम” या “इस्राईल की तसल्ली ना देखूं” अगर मैं खिलाफ-ए-वाक़िया बयान दूं।⁵

पस जिस ज़माने में सय्यदना मसीह मबऊस हुए कौम इस्राईल इस खुदावंदी वाअदा के पूरा होने की इंतज़ार में आँखें लगाए बैठी थी जिसका ज़िक्र किताब-ए-इस्तिस्ना की आयात ज़ेर-ए-बहस में मौजूद है कि, “ऐ कौम-ए-इस्राईल मैं खुदावंद तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही दर्मियान से तेरे ही भाईयों में से नबी बरपा करूँगा जिस तरह मैंने मूसा को बरपा किया था।” लिहाज़ा जब कोई शख्स खुदावंद की तरफ़ से आने का दावा करता तो सब कह दमा उस के पास दौड़े जाते और उस से पूछते क्या तू वो नबी है? (मत्ती 3:5 ता 7, यूहन्ना 1:21) या “सब अपने-अपने दिल में सोचते कि आया वो मसीह है या नहीं।” (लूका 3:15) क्योंकि उनका ये ईमान था कि खुदा बनी-इस्राईल की गिर्ये वज़ारी को सुनकर हस्बे वादा उनमें नबी बरपा करेगा जो कौम को छुटकारा दिलाएगा।

सय्यदना मसीह की आमद और आयात ज़ेरे बहस

जब इंतज़ार करने वालों के गिरोहे कसीर ने सय्यदना ईसा मसीह के काम और कलाम को देखा तो उनको कुदरत वाला पाया। (लूका 24:19) और उन में से बहुतेरे ईमान ले आए। (यूहन्ना 7:31 वगैरह) उन ईमानदारों ने दूसरों को भी आपकी ख़बर देकर कहा, “जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरैत में किया वो हमको मिल गया है। वो यूसुफ़ का बेटा

⁴ Gore, Commentary on N.T.p.214 b.

⁵ World Studies in N.T.by Vincent vol.i.p.273

ईसा नासरी है।” (यूहन्ना 1:40 ता 45) हज़रत कलिमतुल्लाह के सामईन में से जिसने भी सय्यदना मसीह के कलाम-ए-मोअजज़ा निज़ाम को सुना उस ने कहा, **“बेशक ये वो नबी है।”** (यूहन्ना 7:40) दूसरे अशखास आपके मोअजज़ात बय्यिनात को देख कर बोल उठे जो नबी दुनिया में आने वाला था फ़िल-हकीकत यही है। (यूहन्ना 6:14, 7:31 वगैरह अवामुन्नास भी आपको नबी मानते और जानते थे। (मत्ती 21:46) “और वो सब लोग खुदा की तम्जीद करके कहने लगे कि एक बड़ा नबी हम में बरपा हुआ है और खुदा ने अपनी उम्मत पर तवज्जोह की है।” (लूका 7:16)

सय्यदना ईसा मसीह को भी ये एहसास था कि आप ज़ेर-ए-बहस मुकाम के वाअदा ईलाही के मुताबिक़ बनी-इसाईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के लिए खुदा की तरफ़ से फ़रिस्तादा नबी हैं। (मत्ती 10:6, 15:24, यूहन्ना 4:25 ता 26, 5:46, 9:37, 5:39, लूका 7:16, 24:19 ता 27 वगैरह) आप ये जानते थे कि आप मसीह मौऊद इब्ने-अल्लाह हैं। (मत्ती 16:16 ता 17, लूका 21:44 वगैरह) आपको ये एहसास था कि हज़रत यसअयाह ने अपने ज़माने के “खादिम यहोवा” के जो कमालात बतलाए हैं वो हालात-ए-ज़माने की मुताबिक़त की वजह से आपकी ज़ाते कुददुसी सिफ़ात में पाए जाते हैं। (लूका 4:16 ता 23, 18:31, मत्ती 9:12, मर्कुस 14:21, यसअयाह 52:13, 53:12 वगैरह) आप देखते थे कि क्रौम यहूद सरीहन राह-ए-हक़ से भटक गई है और खुदा ने आपको सच्चाई की सलतनत का सुल्तान मुकर्रर फ़र्मा कर उनकी जानिब भेजा है। (यूहन्ना 18:34 ता 38) ताकि उनके लिए राह-ए-हक़ और ज़िंदगी साबित हों और उनको खुदा के पास वापिस फेर लाएं। (यूहन्ना 14:6) आपके इस एहसास की वजह से आपके दिल में क्रौम के लिए एक दर्द था। (मत्ती 23:37, लूका 13:34) जो आपको चैन लेने नहीं देता था। क्रौम की खस्ता-हाली और बर्गशतगी को देखकर आप तड़प जाते थे। और इस के हश्र और अंजाम का खयाल आपको हर वक़्त और बिल-खुसूस ज़िंदगी के आखिरी ज़माने में रह-रह कर सताता था। (मत्ती 20:32, 21:28 ता 32, 22 ता 24 अबवाब वगैरह) आखिरी दिनों में आप मिल्लत की हालत को देख कर रो दिए। (लूका 19:41 ता 44, लूका 23:27 ता 31) और आप ने काइदीन मिल्लत को वो ईलाही वाअदा ताअज़ीब भी याद दिलाया जो आयात ज़ेर-ए-बहस में है। (इस्तिस्ना 18:19, मर्कुस 13:1 ता 2, लूका 19:41 ता 44 वगैरह) बिल-आखिर आपने अपनी नबुव्वत पर अपने खून से मुहर सब्त की। खुदा ने अपने वाअदे ताअज़ीब के मुताबिक़ बनी-इसाईल को ऐसी इबरतनाक सज़ा दी कि वो

दुनिया के चारों कोनों में परागंदा हो कर तबाह व बर्बाद हो गए क्योंकि उन्होंने ने उस के मसीह की ना सुनी।

हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) कौम इस्राईल को फ़र्माते थे “तुम किताब-ए-मुकद्दस को बग़ौर पढ़ो, वो मेरी गवाही देती है।” (यूहन्ना 5:39) क्योंकि इर्शाद-ए-खुदावंदी है कि वो हर ज़माने में हस्ब-ए-ज़रूरत और बिल-खुसूस इबतिला और मुसीबत के ज़माने में बनी-इस्राईल की राहनुमाई के लिए नबी बरपा करेगा जिस तरह उसने फ़िरऔन मिस्र के ज़माने में हज़रत मूसा को बरपा किया था दौर-ए-हाज़रा में खुदा-ए-बरतर व तआला ने तुम्हारी हिदायत के लिए मुझे मबऊस फ़रमाया है।

सय्यदना मसीह के रसूल भी इसी इर्शाद-ए-खुदावंदी का ज़िक्र करके (आमाल 3 बाब) अहले-यहूद को कहते थे अब समुएल से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने कलाम किया उन सबने इन दिनों की खबर दी है। खुदा ने (अपने वाअदे के मुताबिक) अपने खादिम (ईसा) को बरपा करके पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हर एक को उस की बदियों से फेर कर बरकत दे। ऐ गर्दन कशो और कान के ना-मख्तुनों तुम हर वक़्त रूहुल-कुददुस की मुखालिफ़त करते हो। नबियों में से किस को तुम्हारे बाप दादा ने नहीं सताया? और अब तुम इस रास्तबाज़ (ईसा) के पकड़ने वाले और कातिल हुए।” (आमाल 3 24, 7:51 ता 52) सय्यदना ईसा के रसूल मुन्दरिजा बाला आयात में कौम इस्राईल को बार-बार इर्शाद-ए-खुदावंदी याद दिलाकर कहते हैं कि, “खुदा ने अपने क़दीम वाअदे (मुन्दरिजा दर किताब इस्तिस्ना) को हमारे ज़माने में भी पूरा फ़रमाया है और तुम्हारे लिए उसने अपने खादिम ईसा को बरपा किया है। (आयत 13) जो अब्राहाम की हक़ीकी नस्ल “तुम्हारे भाईयों में” से है। जिस तरह खुदा ने क़दीम ज़माने में हज़रत मूसा को बरपा किया था जो खुदा और इस्राईल के दर्मियान पुराने अहद का बानी था इसी तरह अब उसने ईसा को बरपा किया है जो मूसा की मानिंद खुदा और इन्सान के दर्मियान नए अहद का बानी है। (इब्रानियों 3:1 ता 6, 9:18 ता 20, 12:24, यूहन्ना 1:17, मुकाशफ़ा 15:2 ता 3 वगैरह)

नतीजा

अब नाज़रीन पर आफ़ताब निस्फ़-उन्नहार (दोपहर की तरह रोशन) हो गया होगा कि ज़ेर-ए-बहस आयात में किसी ख़ास नबी की बाबत पेशगोई नहीं की गई बल्कि बनी-इस्राईल के तमाम अम्बिया हज़रत मूसा से लेकर सय्यदना ईसा तक, सब के सब उस वाअदे में शामिल हैं जो ख़ुदा ने अपनी बर्गुज़ीदा क़ौम से किया था कि वक़्त मुनासिब पर ख़ुदा इस में नबी बरपा करता रहेगा, जो मुख़्तलिफ़ ज़मानों में उस के लिए मशअल हिदायत होंगे।

चुनान्चे हज़रत होसेअ की मार्फ़त ख़ुदा बनी-इस्राईल को याद दिलाता है कि मैंने अम्बिया की मार्फ़त कलाम किया और रोया (कश्फ़) पर रोया (कश्फ़) दिखलाई। एक नबी (मूसा) के ज़रीये ख़ुदावंद इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया और नबी ही के वसीले यानी नबियों के सिलसिले के वसीले वो महफूज़ रहा। (होसेअ 12:10 ता 13) फिर लिखा है ख़ुदावंद सब नबियों और ग़ैब बीनों (1 समुएल 9:9) की मार्फ़त इस्राईल और यहूदाह को आगाह करता रहा कि तुम अपनी बुरी राहों से बाज़ आओ। (2 सलातीन 17:13, नहमियाह 9:30, ज़करीया 1:4 वगैरह)

इस वाअदा ईलाही में सय्यदना मसीह भी ना सिर्फ़ शामिल हैं बल्कि इस वाअदे की आखिरी तक्मील भी हैं क्योंकि आप अहले-यहूद के लिए हुज्जतुल्लाह हो कर आए थे ताकि उन पर इत्माम-ए-हुज्जत हो जाए। (यूहन्ना 8:24, 16:9) इसी लिए सय्यदना मसीह ख़ुद (लूका 24:27, यूहन्ना 5:39 वगैरह) और सय्यदना ईसा के हवारी (यूहन्ना 1:45 वगैरह) और इन्जील नवीस (यूहन्ना 20:31) और सय्यदना ईसा के मुबल्लिग़ (आमाल 3:22, 7:37 वगैरह) सब के सब आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस के वाअदे को आँख़ुदावंद की मसीहाई के सबूत में पेश करके साबित करते हैं कि आप ही मसीह मौऊद थे जो वाअदे-ए-ख़ुदावंदी के मुताबिक़ बरपा हुए। (आमाल 9:22, 17:3 वगैरह)

फ़स्ल सोम

किताब इस्तिस्ना की आयात और मुहम्मद अरबी

इस बाब की गुज़श्ता फसलों के मुतालए से नाज़रीन किराम पर रोशन हो गया होगा कि सही उसूल-ए-तफ़सीर के मुताबिक :-

(1) आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस में किसी बशारत का ज़िक्र नहीं बल्कि उनमें खुदावंद करीम का ये हुकम है कि वो बुत-परस्त अक्वाम के मुश्रिक फ़ालगीरों की बजाय अम्बिया-ए-किराम की तरफ़ रुजू करें जिनका सिलसिला वो अपने जो दो करम से कायम करेगा।

(2) सिलसिला अम्बिया के क्रियाम का वाअदा बनी-इस्राईल से किया गया था और सिर्फ़ बनी-इस्राईल ही इस वाअदे के मुखातब थे।

(3) ये एक तवारीख़ी हकीकत है कि ये अम्बिया क़ौम इस्राईल के अफ़राद थे और कि वो सब के सब इब्रानी-उल-नस्ल थे और बनी-इस्राईल के मुख्तलिफ़ क़बाइल से मबऊस हुए थे।

(4) ये अम्बिया फ़क़त बनी-इस्राईल की क़ौम की हिदायत के लिए बरपा किए गए थे।

(5) जब क़ौम-ए-इस्राईल ने इन अम्बिया का हुकम माना वो तरक्की की शाहराह पर गामज़न हो गई लेकिन जब अपनी सरकशी के सबब उसने उनके अहकाम की शनवाई ना की तो उस से मुवाख़िज़ा किया गया और खुदावंदी वाअदा ताअज़ीब के मुताबिक़ उस को सज़ा मिली।

(6) सय्यदना ईसा अहद-ए-अतीक़ के इस सिलसिले अम्बिया की आख़िरी तक्मील थे। नबुव्वत के कमाल का जलाल आपके हर मसीहाई दम से ऐसा ज़ाहिर था कि आप “खुदा के जलाल का पुरतो और उस की ज़ात का नक्श” थे। (इब्रानियों 1:3, 2 पतरस 1:17 यूहन्ना 1:14 मती 17:1 ता 6 वग़ैरह)

मुन्दरिजा बाला तवारीख़ी हक़ायक़ और सही तफ़सीर को मद्द-ए-नज़र रखकर कौन मुंसिफ़ मिज़ाज शख़्स कह सकता है कि :-

(1) इन आयात में कोई “बशारत” मौजूद है। चह जायके वो कोई “साफ़ और रोशन बशारत” हो।

(2) कौन इंसान पसंद शख्स ये कह सकता है कि “इन आयतों में मुहम्मद रसूल अल्लाह ﷺ के मबऊस होने की ऐसी साफ़ और मुस्तहकम (मज़बूत) बशारत है जिससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता?” सिर्फ़ कादियान की चार-दीवारी ही से (जहां अक़ल व नक़ल को दखल नहीं) ये आवाज़ निकल सकती है कि ये “पेशगोई हर पहलू से मुहम्मद ﷺ पर पूरी हुई और आपके सिवा किसी दूसरे शख्स के हक़ में इस का पूरा होना साबित नहीं हो सकता।”

(2)

बफ़र्ज़-ए-मुहाल अगर हम तस्लीम भी कर लें कि नबुव्वत का अस्ल मक़सद पेश गोईयां करना ही है और कि आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस में किसी एक खास नबी की पेश खबरी दी गई है तब भी ये किस तरह साबित हो सकता है कि ये बशारत सिर्फ़ हज़रत मुहम्मद अरबी के हक़ में ही है जब कि :-

- (1) इन आयत में अहले-अरब को मुखातब ही नहीं किया गया।
- (2) इन तमाम आयत में अहले-अरब के लिए खुदा का कोई वाअदा मौजूद नहीं है।
- (3) मुहम्मद अरबी क़बाइल बनी-इस्राईल से नहीं थे बल्कि अरब के क़बीले कुरैश से थे।
- (4) कुरआन मजीद के मुताबिक़ आप अरब की हिदायत के लिए ही मबऊस हुए थे।

इंशा-अल्लाह अगले बाब में ज़ेर-ए-बहस आयत के तमाम अल्फ़ाज़ पर मुफ़स्सिल बहस करके ये साबित कर देंगे कि सिवाए उस शख्स के जो बराह-ए-तास्सुब आँख बंद करे “कोई सही-उल-अक़ल शख्स ये नहीं कह सकता कि किताब इस्तिस्ना की ये आयत हज़रत मुहम्मद के हक़ में है।”

बाब सोम

“बशारत मूसवी” के अल्फ़ाज़

आयात का तहत अल-लफ़ज़ी तर्जुमा

मुत्लाशयान-ए-हक़ (हक़ की तलाश करने वालों) की खातिर हम आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस के इब्रानी अल्फ़ाज़ को उर्दू रस्म-उल-खत में लिख कर हर लफ़ज़ के नीचे उस का उर्दू तर्जुमा कर देते हैं ताकि हक़-शनास अस्ल हकीकत से वाकिफ़ हो सकें।⁶

आयत 15 :-

כָּמֹנֵי יָקִים לְךָ יְהוָה אֱלֹהֶיךָ אֱלֹהֵי תַשְׁמֹצוֹן:

नाबि मक़बरक में अखीक कामूनी या कीम लक यहोए इलोहीक अलाव
तश्मऊन

نابی مقبرکے اخیک کامونی یا قیم لک یہوے الوہیک الاؤ تشعون

नबी तेरे दर्मियान से मैं से तेरे भाईयों मेरी मानिंद खड़ा करता रहेगा तेरे
लिए खुदावंद तेरा खुदा उस की तुम सुनना।

נָבִיא אֱלֹהִים לָהֶם מְקַרְבָּאֲחִיָּהֶם כְּמֹאֲחֵי תִּדְבָּרֵי בְּפִיוֹדְבָר

⁶ सर सय्यद मरहूम इब्रानी ज़बान से नावाकिफ़ लिहाज़ा इन आयात के इब्रानी अल्फ़ाज़ को अरबी रस्मुल खत में नक़ल करते वक़्त उनसे गलतियाँ हो गई हैं। (खुतबात सफ़हा 598) क्योंकि उनकी इब्रानी ज़बान के माखज़ कोई “मौलवी इनायत रसूल चिड़ियाकोटी” थे। (सफ़हा 163,608) जिन की इब्रानी दानी का अंदाज़ा इस से हो सकता है कि वह तौरात शरीफ की आयात को सहीह तौर पर लिख पड़ भी नहीं सकते थे। (बरकतुल्लाह)

نابی آقیم لحم مقرب انی هم کاموک و نانااتی دبرئی بفسوود برالهمی ات کل اشراصونو

नाबि आ क्रियम लहम् मुकर्रब अखी हम कामोक व नाताती दबरई बफीवू दबर अलहीम इत कल अशर
असूनो

नबी में बरपा करता रहूँगा उनके लिए दर्मियान से उनके भाईयों तेरी मानिंद और मैं डालूँगा अपना कलाम
उस के मुँह में और वो कहेगा उनसे वही कुछ जो मैं उसे हुक्म दूँगा।

पस ज़ेरे बहस आयात का सलीस उर्दू तर्जुमा ये हुआ :-

“खुदावंद तेरा खुदा तेरे लिए तेरे दर्मियान से तेरे भाईयों में से मेरी मानिंद नबी
बरपा करता रहेगा। तुम उस की सुनना।..... मैं उनके लिए उनके भाईयों के दर्मियान से
तेरी मानिंद नबी बरपा करता रहूँगा और अपना कलाम उस के मुँह में डालूँगा और जो
हुक्म मैं उस को दूँगा वो वही कुछ उनसे कहेगा।”

आयत 15 में हज़रत मूसा क़ौम इस्राईल को मुखातब करता है और अठारवीं (18)
आयत में खुदा हज़रत मूसा को मुखातब करता है। दोनों आयतों का मफ़हूम और मतलब
यकसाँ है।

फ़रुल अव्वल

लफ़ज़ “अखी” (اخي) के मफ़हूम का तअय्युन

सही उसूल-ए-तफ़सीर

किताब-ए-मुक़द्दस के किसी लफ़ज़ के सही मअनी और अरुल मतलब को जानने
के लिए लाज़िम है कि हम उस को उन माअनों में समझें जिनमें वो इस्तिमाल किया
गया है। ये ज़रूरी है कि हम किताब-ए-मुक़द्दस की वर्क गरदानी करके उन तमाम

मुकामात को यकजा करें जहां वो लफ़ज़ वारिद हुआ है ताकि उस का हकीकी मतलब जो मुलहम (इल्हाम याफता) लिखने वालों के ज़हन में था हम पर ज़ाहिर हो जाए। ये तरीकेकार सही उसूल तफ़सीर के मुताबिक़ है। जिस पर अमल करके हम तफ़सीर-बिल-राए के गढ़े से बच सकते हैं। ये तरीका हम पर ज़ाहिर कर देता है कि जो मतलब हम किसी लफ़ज़ का लेते हैं वो काइल के मंशा के मुताबिक़ है या नहीं। अगर वो मतलब किताब मुकद्दस के मफ़हूम के मुताबिक़ नहीं तो ईमानदारी का ये तकाज़ा है कि हम अपने खुद-साख़ता मफ़हूम को छोड़कर उस माअनी को इख़्तियार करें जो किताब-ए-मुकद्दस का है।

लफ़ज़ अख़ी (عَنْ) और किताब-ए-मुक़द्दस

जब हम इस उसूल-ए-तफ़सीर पर चल कर तौरात शरीफ़ के औराक़ पलटते हैं तो हम पर वाज़ेह हो जाता है कि :-

(1) लफ़ज़ अख़ी (عَنْ) बमाअनी भाई एक आम और मशहूर इस्तिलाह और मुहावरा है जो तौरात शरीफ़ में अक्सर जगह वारिद हुआ है।

(2) मुजरिद इस्तिलाह भाई और “भाईयों” से हमेशा और हर मुक़ाम में मुराद बनी-इस्राईल है। और

(3) तमाम की तमाम तौरात में ये इस्तिलाह किसी ग़ैर-बनी-इस्राईल के हक़ में किसी एक मुक़ाम में भी कहीं पाई नहीं जाती।

ये सवाल कुदरतन पैदा होता है कि क्यों ये इस्तिलाही जुम्ले “उनके भाई” “तुम्हारे भाई” “अपने भाई” “हमारे भाई” “उस के भाई” वग़ैरह सिर्फ़ क़ौम बनी-इस्राईल के लिए मख़सूस हैं? तौरात शरीफ़ ये जवाब देती है कि क़ौम यहूद, हज़रत याक़ूब (जिनका दूसरा नाम “इस्राईल” था) के बारह (12) बेटों की औलाद थी और बारह (12) फ़िर्क़ों में मुनक़सिम (बटी) थी। क़ुरआन मजीद भी हमको ये बतलाता है। चुनान्चे लिखा है :-

“हमने इस्राईल की नस्ल को बारह (12) क़बीलों में तक्सीम किया जो बड़ी-बड़ी जमाअतें थीं।” (आराफ़ रूकूअ 20)

इन बारह (12) बेटों की औलाद आपस में भाई कहलाए ताकि मुतफ़र्रिक़ कबीलों की तक्सीम से बाहम मुगाइरत (गैर, बेगानगी) पैदा ना हो और इस्राईल की तमाम नस्ल में बिरादरी और उखुव्वत (भाई चारे) का रिश्ता और सुलूक हमेशा कायम और उस्तिवार रहे। इस गर्ज़ से बारह (12) के बारह (12 फ़िक्रों के लोग अपने मोरिस ए (वारिस करने वाला आला) इस्राईल के फ़र्ज़न्द या बनी-इस्राईल कहलाए और उन की निस्बत इर्शाद हुआ कि “इस्राईल के सब घरानों के लोग तुम्हारे भाई हैं।” (अहबार 10:6) यानी अज़रूए शरीअत सिर्फ़ इस्राईल के सब घरानों के लोग आपस में “भाई” कहला कर एक क्रौमी बिरादरी में शरीक हुए जिससे हर गैर-इस्राईली शख्स ख़ारिज हो कर शरअन अजनबी कहलाया। (इस्तिस्ना 17:15, 23:19 ता 20 वगैरह) जिसमें से किसी काहिन या बादशाह का मुकर्रर होना क़तई तौर पर शरीअत में ममनू किया गया। (इस्तिस्ना 17:15)

तौरात शरीफ़ के इलावा किताब-ए-मुक़द्दस की दीगर कुतुब में भी ये मुहावरा “तुम्हारे भाई” “मेरे भाई” “उनके भाई” वगैरह बर्इना इन्ही माअनों में बनी-इस्राईल के लिए जा-ब-जा इस्तिमाल किया गया है। मिसाल के तौर पर देखो यशूअ 22:4, 8, 14:8, 23:7, 1_सलातीन 12:24 वगैरह)

मौलवी साहब ग़लत फ़र्माते हैं कि और तौरात शरीफ़ उनके इस दाअ्वे की तर्दीद करती है कि “तौरैत मुक़द्दस में जहां लफ़ज़ “भाई” बनी-इस्राईल के हक़ में बोला गया है वहां उस के साथ लफ़ज़ “बनी-इस्राईल” की भी क़ैद आई है।”

हमने सुतूर बाला में हकीक़त-ए-हाल अर्ज़ कर दी है कि तमाम तौरात में जुम्ला “अपने या उनके या तुम्हारे या तेरे भाई या भाईयों” अपनी इस क़तई और गैर-महदूद सूरत में किसी एक मुक़ाम में भी गैर-इस्राईली के लिए कहीं इस्तिमाल नहीं हुआ और ना हो सकता है। क्योंकि ये इस्तिमाल बतौर माअदूद-ए-ज़हनी के बनी-इस्राईल और सिर्फ़ बनी-इस्राईल के लिए इस्तिमाल हुई है। मिसाल के तौर पर मुलाहिज़ा हो :-

(1) वो जो अपने भाईयों में सरदार काहिन है। (अहबार 21:20) कोई गैर-इस्राईली काहिन या सरदार काहिन नहीं हो सकता।

(2) एक इस्राईली आया और अपने भाईयों के पास एक मिदयानी औरत लाया। (गिनती 25:6)

(3) मैंने तुम्हारे काज़ीयों से ताकीद की तुम्हारे भाईयों में जो मुकद्दमा हो उसे सुनो। (इस्तिस्ना 1:16)

(4) हमारे भाईयों ने तो हमको बे-दिल कर दिया। (इस्तिस्ना 1:28)

(5) तुम सब जंगी मर्द मुसल्लह हो कर अपने भाईयों बनी-इस्माईल के आगे आगे पार चलो.....जब तक खुदावंद तुम्हारे भाईयों को चेन बख्शे। (इस्तिस्ना 3:18 ता 20)

(6) लावी का हिस्सा और मीरास उस के भाईयों के साथ नहीं। (इस्तिस्ना 10:9)

(7) उस का दिल उस के भाईयों पर घमंड ना करे। (इस्तिस्ना 17:20)

(8) उनकी मीरास उनके भाईयों के साथ ना होगी। (इस्तिस्ना 18:3)

(9) तू अपने भाईयों में से किसी को अपने ऊपर बादशाह मुकर्रर करना और किसी अजनबी को जो तेरा भाई नहीं अपने ऊपर बादशाह कायम ना करना। उस के दिल में गुरुर ना हो कि वो अपने भाईयों को हकीर जाने। (इस्तिस्ना 17:15 ता 20)

(10) अगर तुम्हारे दर्मियान तुम्हारे भाईयों में से कोई मुफ़्लिस हो। (इस्तिस्ना 15:7) बजिन्सा (ऐसे ही) यही अल्फ़ाज़ आयात-ए-ज़ेर-ए-बहस में वारिद हुए हैं, पस इन दोनों मुक़ामात की सही उसूल-ए-तफ़सीर के मुताबिक़ तावील भी एक ही होनी चाहिए।

आयत नम्बर 9 के अल्फ़ाज़ काबिल-ए-ग़ौर हैं। इस आयत में वज़ाहत के साथ तमाम दुनिया के लोगों की दो हिस्सों में तफ़रीक़ की गई है। यानी “भाई” और “अजनबी” बनी-इस्माईल “भाई” हैं और कुल ग़ैर-इस्माईली “अजनबी” हैं। कोई “अजनबी” यानी ग़ैर-इस्माईली क़ौम, इस्माईल पर हुक्मरान नहीं हो सकता और ना उनका काहिन या सरदार काहिन हो सकता है। “भाई” और “अजनबी” की ये तफ़रीक़ तौरात शरीफ़ के दीगर मुक़ामात में भी मौजूद है। मसलन तू अपने भाईयों को सूद पर क़र्ज़ ना देना तू अजनबी को सूदी क़र्ज़ा दे सकता है।” (इस्तिस्ना 23:19 ता 20 नीज़ देखो 24:14, अहबार 20:1 वग़ैरह)

अगर जुम्ला अपने भाईयों से मुराद बनी-इस्माईल हैं तो हमारे मुखातब ही बतला दें कि कब बनी-इस्माईल ने बनी-इस्माईल के किसी शख़्स को अपना बादशाह बनाया?

और कब खुदा ने बनी-इस्माईल में से किसी को उन पर बादशाह मुकर्रर किया? या कब बनी-इसाईल ने किसी बनी-इस्माईली को अपना काहिन या सरदार काहिन बनाया? या बनी-इसाईल के काज़ीयों ने बनी-इस्माईलियों के मुक़द्दमात की समाअत (सुनवाई) की? या कब बनी-इसाईल मुसल्लह (हथियार के साथ) हो कर चले ताकि बनी-इस्माईल को चेन नसीब हो? वगैरह-वगैरह। मज़कूर बाला आयात नम्बर 9 के हुक्म के मुताबिक हज़रत समुएल नबी ने पहला बादशाह जब ममसूह (मसह) किया तो वो ना तो बनी-इस्माईल से था और ना बनी अदूम में से था और ना किसी ऐसी क़ौम में से था जिसके आबा व अजदाद (बाप दादाओं) का और इसाईल के आबा व अजदाद का क़दीम ज़माने में खूनी रिश्ता रह चुका था। बल्कि बनी-इसाईल का पहला बादशाह बिनियामीन के क़बीले से शाऊल बिन कैस था। (1 समुएल 10:20 ता 24)

कुरआन में भी यही लफ़ज़ “अखी” (أخي) बमाअनी “भाई” खास इसी क़ौम के माअनों में वारिद हुआ है। चुनान्चे (सूरह आराफ़) में आया है :-

وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا قَالَ يَا قَوْمِ

“यानी मिदयान की तरफ़ भेजा उनके भाई शुऐब (को) जिसने कहा ऐ मेरी क़ौम”

इस आयत में शुऐब अपने क़बीले को “ऐ मेरी क़ौम” कह कर मुखातब करता है पस कुरआनी लफ़ज़ “अखाहुम” (أخاهم) “उनका भाई” तौरात के लफ़ज़ “अखीहुम” (أخيهم) की तफ़सीर है और तौरात के मुहावरे और इस्तिलाह की मुसद्दिक है।

मौलवी साहब का दाअ्वा कि “तौरैत मुक़द्दस में जहां लफ़ज़ “भाई” बनी-इसाईल के हक़ में बोला या गया है वहां उस के साथ लफ़ज़ “बनी-इसाईल” की भी क़ैद आई है।” तौरात शरीफ़ और कुरआन मजीद दोनों की रु से ग़लत है। हाँ, तौरात शरीफ़ के बाअज़ मुक़ामात में लफ़ज़ “भाईयों” के साथ “बनी-इसाईल” का लफ़ज़ तौज़ीह और ताकीद की खातिर ईज़ाद कर दिया गया है, मसलन मज़कूर-बाला आयात में नम्बर 5 आयत या अहबार की किताब की आयत “लेकिन बनी-इसाईल जो तुम्हारे भाई हैं उनमें से किसी पर तुम सख़्ती से हुक्मरानी ना करना।” (25:46) इन और तमाम दीगर आयत में सिर्फ़ ताकीद और वज़ाहत की खातिर लफ़ज़ “बनी-इसाईल” ईज़ाद किया गया है।

तौरात शरीफ का मुतालआ ये अम्र भी वाज़ेह कर देता है कि अगर किसी मुकाम पर आबाई नस्ल के लिहाज़ से कभी किसी गैर-इसाईली को भाई कहने की ज़रूरत लाहक हुई तो फ़ौरन इस खास क़ौम का नाम भी साथ ही लिख दिया ताकि इस आम इस्तिलाह और मशहूर मुहावरे में सिरे से ग़लतफ़हमी का इम्कान और एहतिमाल मिट जाये। मसलन मुलाहिज़ा हो :-

(1) तू किसी अदूमी से नफ़रत ना रखना क्योंकि वो तेरा भाई है। (इस्तिस्ना 23:7, देखो पैदाइश 25:24 ता 26)

(2) तुमको बनी-एसू तुम्हारे भाई जो शईर में रहते हैं उनकी सरहद के पास से हो कर जाना है। (इस्तिस्ना 2:4)

(3) हम अपने भाईयों बनी-एसू के पास जो शईर में रहते हैं गुज़र गए। (इस्तिस्ना 2:8) वगैरह

पस किताब-ए-मुक़द्दस का मुतालआ ये साबित कर देता है कि मुजरिद (तन्हा) इस्तिलाह “भाई” “भाईयों” वगैरह से मुराद क़ौम बनी-इसाईल के क़बाइल मुराद हैं और कि ये इस्तिलाह बनी-इसाईल और सिर्फ़ बनी-इसाईल के लिए ही मख़्सूस (खास) है।

क्या बनी-इसाईल और बनी-इस्माईल भाई हैं?

हम एक और अम्र अपने मुखातब के गोश गुज़ार करना मुनासिब समझते हैं। तमाम तौरात को छान मारो, तुमको किसी एक मुक़ाम में भी लफ़ज़ “भाई” और बनी-इस्माईल एक जगह नहीं मिलेंगे जिस तरह ऊपर की आयात में लफ़ज़ “भाई” अदूमी और बनी-एसू के साथ आबाई नस्ल के लिहाज़ से एक जा वारिद हुआ है। क्या ये अम्र हैरत का मूज़िब नहीं कि तौरात छोड़ तमाम इब्रानी कुतुब मुक़द्दसा के मजमूए में किसी एक जगह भी बनी-इस्माईल को बनी-इसाईल का भाई नहीं कहा गया? और यह एक वाज़ेह और मुसल्लिमा हकीकत है कि बनी-इसाईल आज तक बनी-इस्माईल को गैर-क़ौम ही जानते और गिरादते चले आए हैं।

अंदरें हालात किस सही उसूल-ए-तफ़सीर के मुताबिक़ हमारे मुखातब लफ़ज़ “भाईयों” का इतलाक़ बनी-इस्माईल पर कर सकते हैं?

अगर बफ़र्ज़-ए-मुहाल हम एक लम्हे के लिए ये तस्लीम भी कर लें कि लफ़ज़ “भाईयों” से ग़ैर-इसाईली मुराद हो सकते हैं तो उन इस्लामी मुनाज़िरीन की तफ़सीर के मुताबिक़ इस लफ़ज़ का इतलाक़ क़ौम बनी-आदम पर होगा लेकिन क़ौम बनी-इस्माईल पर नहीं होगा। **क्योंकि हज़रत इस्माईल हज़रत इसाईल (याक़ूब) के भाई नहीं थे बल्कि सौतेले चचा थे।** लेकिन हज़रत एसू हज़रत इसाईल के हकीकी भाई थे। (पैदाइश 25:24 ता 26) पस उन मुनाज़िरीन की मन घड़त तावील के मुताबिक़ नबी मौऊद को बनी-इस्माईल से नहीं बल्कि बनी-अदूम से होना चाहिए !

हमारे मुखातब को ये बात हरगिज़ फ़रामोश नहीं करनी चाहिए कि अगर बफ़र्ज़ मुहाल बनी-इस्माईल किसी मअनी में बनी-इसाईल के भाई कहलाए जा सकते हैं तो बनी-इसाईल के बारह (12) क़बीले बवजह-ए-अहसन एक दूसरे के भाई कहलाए जाने के मुस्तहिक़ हैं और यही वजह है कि जैसा कि हम सुतूर बाला में बतला चुके हैं। ये इस्तिलाह बनी-इसाईल के बारह क़बाइल से मख़्सूस थी। हम इस नुक्ते को एक आम मिसाल से वाज़ेह कर देते हैं। फ़र्ज़ करो कि कोई हाकिम किसी शख़्स को कहे कि मैं फुलां मुलाज़मत “तुम्हारे भाईयों में से” किसी को देना चाहता हूँ कि तो कौन शोरीदा-सर ये समझेगा कि इस के अपने भाई तो हाकिम के हुक़म से ख़ारिज हैं और मुलाज़मत उस के अपने भाईयों में से किसी को नहीं दी जाएगी, बल्कि उस के सौतेले चचा की औलाद में से किसी को मिलेगी। लेकिन हमारे मुखातब की मज़हकाखेज़ दलील का यही तक्राज़ा है कि नबुव्वत का ओहदा बनी-इसाईल के क़बाइल को छोड़कर बनी-इस्माईल के किसी क़बीले की औलाद के किसी फ़र्द को मिले। लेकिन ना सिर्फ़ अक़ल-ए-सलीम हमारे मुखातब के ख़िलाफ़ है बल्कि जैसा हम साबित कर चुके हैं नक़ल भी इस के ख़िलाफ़ है और खुद कुरआन (आराफ़ आयत 83) इस की तावील के ख़िलाफ़ फ़त्वा देता है।

पस तौरात शरीफ़, कुरआन मजीद और अक़ले सलीम सब के सब हमारी तावील की मुसद्दिक़ व मआविन हैं क्योंकि वो सहफ़-ए-समावी के सही उसूल-ए-तफ़सीर पर मबनी है।

हज़रत मुहम्मद क नसब नामा

हम बाब दोम में साबित कर चुके हैं कि ज़ेर-ए-बहस आयात में किसी खास शख्स की आमद की पेश खबरी मौजूद नहीं है लेकिन अगर हम अपने मुखातब की पास-ए-खातिर बफ़र्ज़-ए-मुहाल एक लम्हा के लिए ये मान भी लें कि इस मुक़ाम में किसी खास नबी की आमद की बशारत दी गई है और मौलवी साहब की दलील को एक मिनट के लिए सच्च फ़र्ज़ कर लें कि ये पेशगोई बनी-इस्माईल के हक़ में है ताहम मौलवी साहब का दाअ्वा नुबूवत-ए-मुहम्मदियाह बातिल ठहरता है क्योंकि मौलवी साहब की मफ़रूज़ा दलील सिर्फ़ इस हालत में इन आयात से नबुवत-ए-मुहम्मदिया साबित कर सकती है जब कि वो पहले मुहम्मद अरबी को ऐसी यक़ीनी और मज़बूत तारीख़ी शहादत (गवाही) से बनी-इस्माईल साबित कर दें जिसको उनके मुखालिफ़ भी चार व नाचार तस्लीम कर लें। लेकिन अगर वो आँहज़रत का नसब नामा हज़रत इस्माईल तक ना पहुंचा सकें तो इन आयात से हज़रत मुहम्मद साहब की नबुवत साबित नहीं हो सकती क्योंकि इस दलील का तमाम दारो मदार आँहज़रत के सही नसब नामे पर है ना किसी और बात पर। कोई शख्स चाहे वो कैसा ही बड़ा नबी क्यों ना हो इस “पेशगोई” का मिस्ताक़ नहीं हो सकता। तावक़ते के ये साबित ना हो जाए कि वो बनी-इस्माईल के “भाईयों में से” है।

हमारे मुखातब ख़ूब जानते हैं कि ईसाई हज़रत मुहम्मद अरबी को हज़रत इस्माईल की औलाद नहीं जानते। मौलवी साहब इस अम्र को साबित करने से गुरेज़ करने के लिए इल्ज़ामी हथियार (जो मैदान-ए-तहक़ीक़ में महज़ बेकार है) काम में लाते हैं। चुनान्चे आप फ़र्माते हैं कि :-

“बाअज़ ईसाईयों ने अपनी तस्नीफ़ में नसब नामा के बारे में एतराज़ किए हैं कि मुसलमानोंको हज़रत मुहम्मद का नसब नामा हज़रत इस्माईल ज़रूर साबित करना चाहिए। इसलिए मैं उनके जवाब में लिखता हूँ कि अगर नसब नामे का होना दलील बिरिसालत है तो पहले ईसाईयों को हज़रत मर्यम का सिलसिला नस्ल दाऊद तक तो साबित करना चाहिए।”

भला ये क्या जवाब है? इस जवाब से हज़रत मुहम्मद अरबी का नसब नामा हज़रत इस्माईल तक तो साबित ना हो गया ! और ये किस ने और कब और कहाँ कहा है कि “नसब नामे का होना दलील-बिर्सालत है?” हम तो सिर्फ़ ये अर्ज़ करते हैं कि इस मफ़रूज़ा पेशगोई के मिस्ताक़ होने के लिए आँहज़रत के सही नसब नामे की ज़रूरत है। जो नबी आपकी पेश कर्दा आयात का मिस्ताक़ है उस का नसब नामा ज़रूर उस इतिहा तक होना चाहिए जिससे वो “बनी-इस्माईल” के भाईयों में शामिल हो सके। आप ईसाईयों को नाहक़ इल्ज़ाम देते हैं और इल्ज़ाम भी बे-ठिकाने। भला मसीह के इस आयत के मिस्ताक़ होने के लिए क्या ज़रूर है कि बीबी मर्यम सिद्दीका को हम अज़ नस्ल-ए-दाऊद साबित करें? क्या हमारे मुखातब नहीं जानते कि ईसाईयों और यहूदीयों दोनों का इस अम्र पर इतिफ़ाक़ है कि अल्फ़ाज़ “उनके भाईयों” से मुराद बनी-इस्माईल हैं। और क्या सही-उल-अक्ल शख्स ने कभी इन्कार किया है कि हज़रत ईसा नासरी बनी-इस्माईल से थे?

पस अगर बफ़र्ज़-ए-मुहाल हम मान भी लें कि अल्फ़ाज़ “तेरे भाईयों” से मुराद बनी-इस्माईल ही हैं तो भी आँहज़रत इन आयात के मिस्ताक़ नहीं हो सकते **क्योंकि मुहम्मद अरबी का नसब नामा आपको औलाद-ए-इस्माईल साबित ही नहीं कर सकता।** हमारे मुखातब इस एतराज़ का जवाब नहीं दे सकते। आँहज़रत का कोई सही नसब नामा मौजूद नहीं है।

सही बुखारी (बाब मबअस-उन्नबी) में सिलसिला नसब यूँ दिया गया है :-

“मुहम्मद बिन अब्दुल्लाह बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मनाफ़ बिन अबा बिन किलाब बिन मुर्र बिन कअब बिन लोई बिन ग़ालिब बिन फहर बिन मालिक बिन नफ़र बिन कनाना बिन ख़ुज़ैमा बिन मुदीरक बिन इल्यास बिन मुफ़िर नज़ार बिन मुइद बिन अदनान।”

लेकिन अक्वलन इन नामों की सेहत और शिजरा के अस्ल होने की क्या दलील है?

दोम : अगर हम मौलवी साहब की पास-ए-खातिर इस नसब नामे को सही मान भी लें तो इस बात का क्या ईलाज कि आँहज़रत ने खुद निहायत साफ़ अल्फ़ाज़ में फ़र्मा दिया कि *كذب النسابون الى ما فوق عدنان* (वाक़िदी) यानी अदनान से आगे मेरा नसब बयान करने वाले झूटे हैं। चुनान्चे मसऊदी भी कहता है कि :-

"नबी ने मना कर दिया कि कोई मेरे सिलसिला नसब को मुड़द बिन अदनान से आगे बयान ना करे।"

बैहकी अपने पीर अबू अब्दुल्लाह का कोल बयान करता है कि :-

"उसने कहा कि रसूलुल्लाह का नसब नामा अदनान तक तो मोअतबर है मगर इस के आगे कोई सही सनद नहीं मिलती।"

सर सय्यद अहमद भी लिखते हैं कि :-

"आँहज़रत के नसब नामे की निस्बत कोई सही हदीस मौजूद नहीं, तमाम रिवायतें महज़ ग़लत और बे-सनद हैं और ज़र भी एतबार के लायक़ नहीं।"

(खुत्बा नहम सफ़ा 557, 559)

पस अगर रिआयतन इस नसब नामे को सही मान भी लिया जाये तो हमको सिर्फ़ इक्कीस (21) नाम मिलते हैं। अगर इस सिलसिले में फ़र्ज़न्द की पैदाइश के वक़्त हर बुजुर्ग की औसत उम्र तीस (30) साल हो तो अदनान तक सिर्फ़ छः सौ तीस (630) साल हुए। हज़रत मुहम्मद (570 ई.) में पैदा हुए। अदनान का ज़माना कब्ल मसीह पहली सदी हुआ। हज़रत इब्राहिम मसीह से दो हज़ार साल से भी पहले थे पस इस हिसाब से कम अज़ कम दो हज़ार (2000) साल तक आँहज़रत का सही नसब नामा मफ़कूद है। चुनान्चे सर सय्यद मरहूम को इक़बाल है कि :-

"मौअरखीन को नसब नामे की तहकीक़ में मजबूरी हुई तो उन्होंने अपनी किताबों को रौनक देने के लिए झूठी रिवायतें खुद घड़ लीं या अफ़ोहन सुनी सुनाई अपने मतलब के मुवाफ़िक़

समझ कर बिला (बगैर) तहकीक मुन्दरज कर लीं। अक्वल तो नसब नामों को इस्माईल तक समझना गलती है। दूसरे ये नसब नामे खुद भी गलत हैं।”

(खुत्बा नहम)

सर सय्यद के मुताबिक दोनों विलादतों में चौबीस सौ छियोत्तर (2476) बरस का फ़ासिला है और इस्माईल से सत्तर (70) पुश्तें गुज़रती हैं।

(खुत्बात सफ़ा 563)

हम हैरान हैं कि हमारे मुसलमान भाई किस तरह बिला (बगैर) दलील हज़रत मुहम्मद को फ़र्ज़द-ए-इस्माईल गर्दान सकते हैं? और अगर वो खुद बिला-दलील इस मफ़रूज़ा को मान लें लेकिन तौरात व इन्ज़ील वालों के रूबरू तौरात शरीफ़ की बिना पर वो आपको किस तरह बनी-इस्माईल साबित कर सकते हैं? और अगर ये साबित कर भी सकें तो वो किस दलील से मुहम्मद अरबी को आयात ज़ेर-ए-बहस के तहत लाकर आपकी नबुव्वत साबित कर सकते हैं? क्योंकि जहान में चाहे कोई नबी तौरात शरीफ़ की इन आयात का मिस्दाक़ हो लेकिन हज़रत मुहम्मद अरबी उनके मिस्दाक़ नहीं हो सकते।

फ़स्ल दोम

अल्फ़ाज़ “तेरे ही दर्मियान” से का मफ़हूम

आयात ज़ेर-ए-बहस में आया है “खुदावंद तेरा खुदा तेरे लिए तेरे ही दर्मियान से तेरे भाईयों में से मेरी मानिंद नबी बरपा करता रहेगा तुम उस की सुनना।” (इस्तिस्ना 18:15)

अल्फ़ाज़ तौज़ीही हैं

गुजश्ता फ़स्ल में हम बतला चुके हैं कि अल्फ़ाज़ “तेरे भाईयों में से” (जो इस आयात ज़ेर-ए-बहस में वारिद हुए हैं) का मतलब क़बाइल बनी-इस्राईल है जिससे खुदा अपने करम व फ़ज़ल से क़ौम की हिदायत के लिए नबी बरपा करता रहेगा। इस आया शरीफ़ा में मज़ीद ताकीद और तौज़ीह के अल्फ़ाज़ “तेरे ही दर्मियान से” इस्तिमाल हुए हैं ताकि बनी-इस्राईल के हर किदमा पर ज़ाहिर हो जाए कि ये मामूर-मिनल्लाह अम्बिया मुश्रिकाना अक्वाम में से नहीं होंगे जिनसे फ़ालगीर और शुगून निकालने वाले, अफ़सून गीर, जादू गीर, मंत्र पढ़ने वाले, जिन्नात के आशना, रुमाल (जोतशी, नजूम) और अर्वाह के तसखीर करने वाले पैदा होते थे। (आयत 14, यसअयाह 2:6 वगैरह) बल्कि खुदा के ये फ़रिस्तादे अम्बिया-अल्लाह होंगे जो बनी-इस्राईल के क़बाइल में से और ख़ास क़ौम यहूद के दर्मियान से ही पैदा होंगे।

अगर अल्फ़ाज़ “तेरे ही दर्मियान से” मतन में ना भी होते (जिस तरह वो आयत 18 में वारिद नहीं हुए) तो इस्तिलाह “तेरे भाईयों में से” के आम रिवाज की वजह से तईन मतलब व मफ़हूम में एक ज़र्ज़ा भर फ़र्क ना पड़ता। पस जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” महज़ ताकीदिया है इस का होना “तेरे भाईयों” पर ज़्यादा ज़ोर देता है गो इस का ना होना इस्तिलाह के अस्ल माअनों को कोई वुसअत नहीं देता। दोनों जुम्ले “तेरे भाईयों में से” और “तेरे ही दर्मियान से” बिल्कुल हम-मअनी और मुतरादिफ़ हैं। चुनान्चे जैसा हम गुजश्ता फ़स्ल में ज़िक्र कर आए हैं। बजिन्सा ये मुहावरा इस माअनी में इसी किताब (इस्तिस्ना 15:7) में आया है “अगर तुम्हारे दर्मियान तुम्हारे भाईयों में से कोई मुफ़्लिस हो।”

अल्फ़ाज़ की सेहत और अस्लियत

आया ज़ेर-ए-बहस में जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” इस तौर पर वारिद हुआ है कि कोई नावाक़िफ़ शख्स भी जो इस्तिलाह तौरात को ना जानता हो “तेरे भाईयों” को किसी ग़ैर-इस्राईली पर चस्पाँ करने से क़तई रुक जाता है। इसलिए मौलवी साहब जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” की अस्लियत पर शुब्हा करके अपनी खुद-साख़ता तावील को चंद क़दम चलाने के वास्ते इन अल्फ़ाज़ को मतन से ख़ारिज करना चाहते हैं मगर हम दिखला चुके हैं कि ये जुम्ला मतन में होया ना हो जुम्ला “तुम्हारे भाईयों में से” का मफ़हूम किसी तरह मुतनाज़ा हो कर किसी ग़ैर-इस्राईली पर चस्पाँ नहीं हो सकता।

लेकिन अल्फ़ाज़ “तेरे ही दर्मियान से” की सेहत व अस्तियत की निस्बत भी हम मौलवी साहब का इत्मीनान कर देना चाहते हैं। मौलवी साहब (इस्तिस्ना 18:15 ता 18) की इबारत की निस्बत फ़र्माते हैं :-

“हज़रत मूसा और खुदावंद तआला के कलाम में दो इख़्तिलाफ़ पाए जाते हैं। खुदा के कलाम में ज़मीर जमा गायब है और मूसा के कलाम में ज़मीर वाहिद मुखातब। खुदा के कलाम में “तेरे दर्मियान” का जुम्ला नहीं है। मूसा के कलाम में “तेरे दर्मियान” का जुम्ला है।”

जवाबन अर्ज़ है कि हज़रत मूसा खुदा के कलाम के मुलहम मुफ़स्सिर थे। (इस्तिस्ना 18:15) में उन्होंने इस तौर से खुदा का कलाम बनी-इस्राईल से बयान किया जिस तौर के खुदा ने उनसे बनी-इस्राईल की निस्बत फ़रमाया था और फिर उन्होंने बनी-इस्राईल को इस तौर से समझाया जिस तौर वो खुद उस को समझे और मौलवी साहब को भी इसी तरह समझना चाहिए जिस तरह कि हज़रत मूसा खुद समझते थे।

अगर मौलवी साहब को सिर्फ़ लफ़ज़ की निस्बत इसरार है तो वो इस रिसाले के वर्क पलट कर बाब सोम के शुरू में इब्रानी इबारत को मुलाहिज़ा करके अपनी तसल्ली कर सकते हैं कि लफ़ज़ “मुकर्रब” दोनों जगह वारिद हुआ है जिसके मअनी “दर्मियान” के हैं। (इस्तिस्ना 18:18) में इबारत का तर्जुमा है “उनके भाईयों के दर्मियान से” और आयत 15 में चूँकि इब्रानी लफ़ज़ “मै” बमाअनी से मौजूद है लिहाज़ा इबारत का तर्जुमा तेरे भाईयों में से “तेरे दर्मियान से” हुआ। पस लफ़ज़ “दर्मियान” दोनों जगह मौजूद है।

लेकिन मौलवी साहब कहते हैं कि “हमको इस जुम्ला “तेरे दर्मियान से” पर कलाम है कि सही है या नहीं। इस के ग़लत होने के बारे में तीन (3) दलाईल ज़ेल में लिखे जाते हैं :-

(1) पतरस हवारी ने इस मूसा वाले फ़िक्रे को अपनी तस्नीफ़ में नक़ल किया है। इस में भी ये जुम्ला “तेरे दर्मियान” नहीं है। (आमाल 3:22) में है “मूसा ने कहा खुदावंद खुदा तुम्हारे भाईयों में से तुम्हारे लिए मुझसा नबी पैदा करेगा तुम उस की सुनना।”

(2) इस्तिफ़नुस हवारी ने भी मूसा वाले फ़िक्रे को अपनी तस्नीफ़ में नक़ल किया है। इस में भी ये जुम्ला “तेरे दर्मियान” का नहीं है। (आमाल 7:27)

(3) तौरैत मुक़द्दस का सबसे पुराना तर्जुमा यूनानी सपटवाजनट (سپٹواجنٹ) कहलाता है इस में भी पंद्रहवीं आयत के तर्जुमे में ये जुम्ला “तेरे दर्मियान” का नहीं है। अब खयाल करना चाहिए कि यूनानी तर्जुमा एक पुराना और मोअतबर तर्जुमा है। इस से साफ़ साबित है कि मसीह से तक़रीबन तीन सौ (300) बरस पेशतर तक ये फ़िक्रह तौरैत में दाखिल नहीं हुआ था। इस तर्जुमे की मुख़्तसर कैफ़ीयत इम्तियाज़ व सेहत की ये है कि दो सौ छयासी (286) बरस क़ब्ल मसीह के सिक्ंदरिया में यहूदी रब्बियों की सदर जमाअत के सत्तर (70) आदमीयों की शिक़त व एहतमाम से ये तर्जुमा हुआ था और मुद्दत तक अहले-किताब की ये राय थी कि ये तर्जुमा इल्हाम से हुआ है। हवारियों ने अपनी तस्नीफ़ात में अक्सर इसी तर्जुमे से नक़ल और इक़्तिबास किया है बल्कि अस्ल इबरी की मुख़ालिफ़त करके इस को तर्ज़ीह दी है।

(सफ़ा 908)

जवाबन अर्ज़ है कि :-

जनाब मौलवी साहब की ये तीन (3) दलीलें दरअस्ल एक ही दलील है ना कि तीन (3) जिसका मक़सद सिर्फ़ ये है कि सपटवाजनट (سپٹواجنٹ) यूनानी तर्जुमे में अल्फ़ाज़ “तेरे दर्मियान से” नहीं हैं। पहली दो (2) दलीलें यानी मुक़द्दस पतरस और मुक़द्दस इस्तिफ़नुस के इक़्तिबासात जुदा दलीलें इसलिए मुतसव्वर नहीं हो सकतीं क्योंकि वो इक़्तिबासात, इब्रानी तौरात के अलग-अलग तर्जुमों के नहीं हैं बल्कि दोनों इक़्तिबासात यूनानी तर्जुमा “सपटवाजनट” (سپٹواجنٹ) के ही हैं जो ज़बानी तक़रीरों में (ना कि अलग तस्नीफ़ात में !) हाफ़िज़े से किए गए थे। आँखुदावंद के रसूलों को यूनानी में लिखना पड़ा था और चूँकि यूनानी तर्जुमा मक़बूल अहले-यहूद यही “सपटवाजनट” (سپٹواجنٹ) था। पस उन्हीं ने यहूद के मुक़ाबिल यूनानी का वही तर्जुमा पेश किया जिसके वो खुद मुअतक्रिद (अक़ीदतमंद) थे। पस यही वजह है कि हवारियों ने अपनी तस्नीफ़ात में अक्सर इस तर्जुमे से नक़ल और इक़्तिबास किया है हवारियों को यूनानी में कोई नया तर्जुमा पेश करने की ज़रूरत ही ना थी।

सपटवाजनट (سپٹواجنٹ) की हकीकत

मौलवी साहब की दलील में बड़ा सक्रम (खराबी, बीमारी) ये है कि उन्होंने ने ये फर्ज कर लिया है कि यूनानी तर्जुमा ना सिर्फ सही है बल्कि ये भी कि वो लफ्ज़ी तर्जुमा है। हत्ता कि अगर किसी इब्रानी लफ्ज़ के लिए यूनानी लफ्ज़ तर्जुमे में ना हो तो ये गुमान करना चाहिए कि वो लफ्ज़ अस्ल इब्रानी में था ही नहीं। मगर ये मफूज़े बिल्कुल बातिल है। हम नाज़रीन की तवज्जोह अपने रिसाले सेहत-ए-कुतुब मुक़द्दसा की तरफ़ मबजूल करते हैं। जहां इस तर्जुमे की अस्ल अहमीय्यत का बयान किया है जिससे ज़ाहिर हो जाता है कि ये यूनानी तर्जुमा ना तो इस सेहत व पाये का है और ना वो लफ्ज़ी तर्जुमा है, ऐसा कि हर इब्रानी लफ्ज़ के लिए यूनानी लफ्ज़ इस्तिमाल हुआ हो। हकीकत में ये तर्जुमा मुरादी नफ़्स-ए-मज़मून को अदा करता है और इस के यूनानी तर्जुमे में अक्सर मुक़ामात पर अस्ल इब्रानी मतन को तौज़ीह और तशरीह की खातिर अल्फ़ाज़ और फ़िक्रे ज़ाइद किए गए हैं और बहुत से अल्फ़ाज़ जो बतौर मुतरादिफ़ महज़ हुस्न-ए-इबारत-ए-इब्रानी के आए हैं। लेकिन मज़मून फ़हमी में मुमिद व मुआविन नहीं हैं वो बिल्कुल यूनानी तर्जुमे में छोड़ दीए गए हैं। यानी यूनानी तर्जुमा कुरआन के बाअज़ उर्दू तर्जुमों की मानिंद इफ़रात-ए-तफ़रीत (कस्रत और कमी) से खाली नहीं। खुद मौलवी साहब के इस जुम्ले से कि हवारियों ने अक्सर इबरी से मुखालिफ़त करके इस तर्जुमे को तर्जीह दी है यही मुस्तंबित (अखज़) किया गया होता है कि ये तर्जुमा बाअज़ मुक़ामात में अस्ल इबरी के खिलाफ़ है। पस इस के एतबार पर इब्रानी मतन पर शुब्हा नहीं हो सकता बिल-खुसूस इस जगह क्योंकि इस की अस्ल शकल में जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” को यूनानी तर्जुमे में लफ्ज़ी नहीं, महज़ इस गर्ज़ से तर्क कर दिया है कि वो जुम्ला मुतरादिफ़ “तेरे ही भाईयों में से” का था। खुद मुतर्जिम के नज़दीक तर्जुमे के अग़राज़ के लिए ज़रूरी नहीं था।

अब रही वो रिवायती ताज़ीम जो इस पुराने तर्जुमे की होती आई थी। वो भी कोई मुस्तहक़म बुनियाद नहीं रखती। इस ताज़ीम की अस्ल वजह ये थी कि यूनानी यानी आम ज़बान में वो सबसे पहला तर्जुमा था जिस तरह हज़रत शाह अब्दुल कादिर का तर्जुमा कुरआन उर्दू का पहला तर्जुमा था जो 1790 ई. में किया गया था। इस यूनानी तर्जुमे के मुक़ाबिल और कोई तर्जुमा मौजूद नहीं था। लोगों में जो इब्रानी से उमूमन

नावाक्रिफ़ थे इस का रिवाज हुआ और इस रिवाज ने इस की ताज़ीम बढ़ा दी। और माबाअद इस ताज़ीम में इज़ाफ़ा हुआ और फिर मुबालगा हुआ हत्ता कि इस के लिए किस्से घड़े गए। चुनान्चे ये रिवायत कि सत्तर (70) जय्यद उलमा ने सत्तर रोज़ में इल्हाम से इस का तर्जुमा किया महज़ ख़ाम-खयाली है और खुश एतिकादी की महज़ एक मिसाल है। क्योंकि हमारे मुखातब भी मुतर्ज़मीन के इल्हाम के काइल नहीं होंगे। ऐसी रिवायतें इस की निस्बत मुबालगा ज़ाहिर करती हैं। चुनान्चे जब तहकीक की गई तो ख़ाम-खयाली खत्म हो गई और अस्लियत से आगाही हुई और तर्जुमे की अस्ल हकीकत और अहमीय्यत सब पर वाज़ेह हो गई।

पस मौलवी साहब की तीन दलीलों वाली दलील दरअस्ल उनके दाअ्वे के लिए कोई दलील नहीं है। इस से इब्रानी मतन के इस फ़िक्रह की ज़ेर-ए-बहस की सेहत और अस्लियत पर कोई शुब्हा नहीं पड़ सकता।

हम मोअतरिज़ से पूछते हैं कि अगर बिलफ़र्ज़-ए-मुहाल ये फ़िक्रह तेरे ही दर्मियान से अस्ल इब्रानी में मौजूद ना था तो बाद में कैसे आया? क्योंकि कोई इब्रानी नुस्खा ऐसा नहीं जिसमें ये जुम्ला आयत 15 में ना हो जिससे ज़ाहिर है कि ये फ़िक्रह वहां हमेशा मौजूद था। हाँ अगर हमारे मुखातब इस का पता बता दें कि बाद ज़हूर हज़रत मुहम्मद साहब ये फ़िक्रह तौरैत शरीफ़ में बढ़ गया लेकिन कब्ल ज़हूर ना था तो इस किस्म की मज़हकाखेज़ बात उनके जाहिल हम-खयाल मान लेने को तैयार हो जाएंगे कि यहूदीयों और ईसाईयों ने एका करके आँहज़रत को इब्राहीमी तरका नबुव्वत से महरूम करने की गर्ज़ से ऐसा किया होगा। लेकिन फिर वो इस बात का क्या जवाब देंगे कि हज़रत मुहम्मद की पैदाइश से सदियों पहले सब नुस्खा जात इब्रानी में ये फ़िक्रे “तेरे ही दर्मियान से” पाया जाता है। इलावा इसके जैसा हम साबित कर चुके हैं कि मुजरिदन जुम्ला “तुम्हारे भाईयों में से” बिलाशिकत जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” नबी मौऊद को इस्राईली साबित करता है।

दीगर क़दीम तर्जुमों में इन अल्फ़ाज़ की मौजूदगी

जैसा हम ऊपर बतला चुके हैं कि हर कदीम इब्रानी नुस्खे में जुम्ला “तेरे ही दर्मियान” का मौजूद होना इस की सेहत और अस्लियत को साबित कर रहा है क्योंकि अस्ल मतन इब्रानी है जिस पर किसी कदीम या जदीद तर्जुमे का इखितलाफ़ शुब्हा नहीं डाल सकता। लेकिन अपने मुखातब की तश्फ़ी की ये जुम्ला अस्ल इब्रानी के मुताबिक़ बल्कि लफ़्ज़न मुताबिक़ हैं जिनमें ये जुम्ला मौजूद है। ये सब तर्जुमे आँहज़रत के ज़हूर से सदीयों पेशतर के हैं। चुनान्चे हम मौलवी साहब की तीन दलीलों की रिआयत में (जो एक ही यूनानी तर्जुमा सपटवाजनट पर मबनी हैं) अपनी तीन दलीलें तीन मुख्तलिफ़ तर्जुमों से और मुख्तलिफ़ किस्मों के तर्जुमों से और मुख्तलिफ़ ज़मानों और मुख्तलिफ़ ज़बानों के तर्जुमों से पेश करते हैं।

कलदी तारगम इन्कलोस

पहली किस्म का तर्जुमा मशहूर कलदी तारगम इन्कलोस सय्यदना मसीह के ज़माने में राइज था। तौरात शरीफ़ का ये तर्जुमा मुस्तनद और सही लफ़्ज़ी तर्जुमा है जो यहूद में ऐसी ताज़ीम से देखा जाता था कि सोलहवीं (16) सदी तक बराबर इब्रानी मतन के साथ-साथ यहूदी इबादत-गाहों में पढ़ा जाता था। इस तर्जुमे में ये आयत लफ़्ज़ बलफ़्ज़ इब्रानी मतन के मुताबिक़ है और जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” इस में मौजूद है और ज़ाहिर कर रहा है कि इब्रानी मतन में ये अल्फ़ाज़ माबाअ्द दाखिल नहीं हुए बल्कि हमेशा इब्रानी मतन का हिस्सा थे।

सपटवाजनट की ताज़ीम इस तारगम के बराबर कभी भी नहीं की गई। दर-हकीक़त अहले-यहूद में इब्रानी तौरात के बाद इसी का रुत्बा सबसे बड़ा माना गया है।

तर्जुमा पशीतो

दूसरा तर्जुमा सुर्यानी ज़बान का मशहूर व मारूफ़ कदीम तर्जुमा पशीतो (बमाअनी लफ़्ज़ी, सादा या मुअर्रा) है जो दूसरी सदी मसीही के अवाइल में किया गया। इस में भी इस्तिस्ना की किताब की ज़ेरे बहस आयात लफ़्ज़ बलफ़्ज़ इब्रानी मतन के मुताबिक़ हैं और जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” इस में मौजूद है।

तर्जुमा विलगोट

तीसरा तर्जुमा लातीनी ज़बान का तर्जुमा विलगोट है जिसको चौथी (4) सदी ईस्वी में मुकद्दस जेरोम ने कदीम तरीन लातीनी तर्जुमों की नज़र-ए-सानी करके मुरतिब किया। इस में भी जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” लातीनी ज़बान में मौजूद है। अब इस से बढ़कर मौलवी साहब जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” की अस्लियत की और क्या दलील चाहते हैं? यहां तीन मुख्तलिफ़ तर्जुमे बाहम लफ़ज़न इब्रानी मतन से मुताबिकत रखते हैं।

हम अपनी दलीलों की सेहत की ताईद में सर सय्यद अहमद मरहूम जैसे मुहक्किक को भी पेश कर देते हैं। उन्होंने अपनी मशहूर तस्नीफ़ ख़ुतबात-ए-अहमदिया के इस हिस्से में जिसमें उन्होंने नबुव्वत-ए-मुहम्मदिया पर पेश गोइयों से इस्तिदलाल किया है और (जहां से हमारे मुखातब ने भी अपनी बहस के बाअज़ खयालात अख़ज़ किए हैं) इस आयत ज़ेर-ए-बहस के दौरान में जुम्ला “तेरे ही दर्मियान से” की सेहत और अस्लियत पर कोई शुब्हा नहीं डाला। हालाँकि वो इस बारे में एक अहले-गर्ज़ थे। ये क्यों? महज़ इसलिए कि वो इन तमाम पहलूओं से पूरी तरह वाक्किफ़ थे और जानते थे कि इस जुम्ले की सेहत और अस्लियत पर शुब्हा नहीं पड़ सकता।

पस ज़ाहिर है कि नबी मौऊद की तलाश में बनी-इसाईल के खानदानी दायरे से बाहर जाना सरासर नादानी है। हज़रत मूसा ने पिछले लोगों को नबी और नबुव्वत के मफ़हूम की निस्बत शशोपंज में नहीं छोड़ा बल्कि ऐसे वाज़ेह अल्फ़ाज़ इस्तिमाल किए जिनकी निस्बत धोका होना मुहाल है।

इलावा अज़ीं अम्बिया-ए-अकबर व असगर (छोटे बड़े नबियों) की तमाम किताबें मौलवी साहब के मफ़रूज़ा को बातिल करार देती हैं। अगर हमारे मुखातब किताब-ए-मुकद्दस का सतही मुतालआ भी करते तो उन पर ये अम्र अज़हर-मिन-अशशम्स (रोज़-ए-रौशन की तरह अयाँ) हो जाता है कि अगर मामूर मिनल्लाह (अल्लाह की तरफ़ से मुकर्रर किए हुए) अम्बिया का सिलसिला बनी-इसाईल के दायरे के बाहर होता तो उन कुतुब-ए-मुकद्दसा का अस्ल व मुदआ और मंशा ही फ़ौत हो जाता है। पस हमारी दलाईल दरअस्ल किसी एक आयत या आयत के हिस्से पर या किसी आयत की तावील

व तफ़सीर पर मबनी नहीं हैं बल्कि इनकी बुनियाद किताब-ए-मुक़द्दस के अस्ल मक्सूद और इल्लत-ए-गाई की मुहकम चट्टान पर कायम है।

फ़स्ल सोम

ज़ेरे बहस आयत के दीगर अल्फ़ाज़

लफ़ज़ “नाबी” (ﷺ) का मतलब

हम बाब दोम में बतला चुके हैं कि इस आया शरीफा में लफ़ज़ नबी से कोई खास नबी मुराद नहीं जो हज़रत मूसा के हज़ारों बरस बाद आने वाला हो। इस आयत में लफ़ज़ नबी इस्म-ए-मारिफ़ा नहीं है और ना ये लफ़ज़ इस्म-ए-मारिफ़ा की मुख्तलिफ़ अक्साम (मुख्तलिफ़ किस्मों) में से है। ये लफ़ज़ इस्म-ए-नकिरा है और एक आम नाम है जिसका इतलाक़ उन तमाम अम्बिया-अल्लाह पर होता है जो मुख्तलिफ़ ज़मानों में ख़ुदा के फ़रिस्तादा मुर्सल (रसूल) बन कर क़ौम-इस्राईल की हिदायत की खातिर मबऊस हुए थे।

इब्रानी लफ़ज़ “नाबी” (ﷺ) का सही उर्दू तर्जुमा एक नबी नहीं है बल्कि सिर्फ़ नबी है। उर्दू तर्जुमा “एक नबी” से ये एहतिमाल रहता है कि शायद इस लफ़ज़ से मुराद कोई खास एक नबी हो। लेकिन फ़ारसी और अरबी तर्जुमे इस एहतिमाल को मिटा देते हैं। चुनान्चे इन तर्जुमों में सिर्फ़ लफ़ज़ “नबी” आया है जो इस्म-ए-आम है, अगर ये इस्म-ए-खास होता और किसी खास नबी के लिए आता तो इब्रानी तर्जुमे में इस लफ़ज़ से पहले अल (ﷺ) होता जो इस इस्म-ए-आम को इस्म-ए-खास कर देता। इब्रानी मतन में भी अगर किसी खास नबी का ज़िक्र होता तो लफ़ज़ “नाबि” (ﷺ) से पहले इब्रानी लफ़ज़ अहद वारिद होता है जिस तरह (1_सलातीन 20:13) में आया है। जिससे ज़ाहिर है कि यहां लफ़ज़ “नबी” इस्म-ए-नकिरा है जो उन तमाम अम्बिया-अल्लाह के लिए आया है जो हज़रत मूसा के बाद के ज़माने से लेकर हज़रत इब्ने-अल्लाह (मसीह) के ज़माने तक अहले-यहूद में बरपा हुए।

पस सियाक-ए-इबारत और इब्रानी ज़बान की लुगत हमारी तावील की मुआविन है। किताब-ए-मुक़द्दस के दीगर मुक़ामात से भी ये साबित है कि लफ़ज़ “नबी” से यहां मुराद सिलसिला अम्बिया है क्योंकि किताब-ए-मुक़द्दस में उमूमन सीगा वाहिद, सीगा जमा के लिए इस्तिमाल हुआ है। मसलन इसी किताब (इस्तिस्ना 17:15) में “बादशाह” से मुराद कोई खास बादशाह नहीं है बल्कि इस्म-ए-नकिरा का इतलाक़ शाहँ-ए-यहूदाह और शाहँ-ए-इसाईल के सिलसिले के तमाम बादशाहों पर होता है जो क़ौम यहूद की तारीख़ में हुक्मरान रहे। किताब-ए-मुक़द्दस का ये एक आम मुहावरा है चुनान्चे यही लफ़ज़ “नबी” सिलसिला अम्बिया के लिए और मुक़ामात में भी वारिद हुआ है। मसलन हज़रत होसेअ फ़रमाता है “एक नबी (हज़रत मूसा) के वसीलर से खुदावंद इसाईल को मिस्र से निकाल लाया और नबी ही के वसीले से (यानी सिलसिला अम्बिया के वसीले) से वो (यानी बनी-इसाईल) महफूज़ रहा।” (होसेअ 12:13) खुद मुक़ाम ज़ेरे बहस की (इस्तिस्ना 18:20 और 22 आयात) में यही लफ़ज़ नबी किसी एक झूटे नबी के लिए इस्तिमाल नहीं हुआ बल्कि वो इस्म-ए-नकिरा या इस्म-ए-आम है जिसका इतलाक़ काज़िब (झूटे) नबियों के तमाम तबके पर हुआ है। चूँकि इस तमाम मुक़ाम में सच्चे और झूटे नबियों में मुकाबला और इम्तियाज़ मक़सूद है पस ज़ाहिर है कि अगर (इस्तिस्ना 18:20 और 22) आयात में लफ़ज़ “नबी” एक किस्म के गिरोह अम्बिया के लिए आया है। फ़र्क़ सिर्फ़ ये है कि एक आयत में झूटे अम्बिया के गिरोह का ज़िक़्र है और दूसरी आयत में सच्चे अम्बिया के तबके का ज़िक़्र है।

मुक़द्दस पतरस रसूल भी अपनी तक़रीर में इस लफ़ज़ “नबी” से मुराद सिलसिला अम्बिया लेकर वाज़ेह अल्फ़ाज़ में फ़र्माते हैं कि, “समुएल से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने कलाम किया।” (आमाल 3:24)

मशहूर मस्लेह (इस्लाह करने वाला) केल्विन (Calvin) भी कहता है कि यहां लफ़ज़ “नबी” से मुराद सिलसिला अम्बिया है।⁷

यही वजह है कि ज़माना-ए-हाल के तमाम क़ाबिल मुतर्जिम मसलन डाक्टर माफ़ट (Moffat) इस का यूं तर्जुमा करते हैं :-

⁷ Quoted by Perowne in Zechariah (Century Bible)p.09

“Will raise up prophet after prophet”.

चूँकि हम बाब दोम में इस लफ़ज़ पर दीगर पहलूओं से रोशनी डाल चुके हैं। लिहाज़ा हम इस बहस को यहां तूल नहीं देते। बहर-हाल इंसाफ़ पसंद नाज़रीन पर ज़ाहिर हो गया होगा कि इस आया शरीफा में लफ़ज़ नबी का इतलाक़ किसी सूरत में भी हज़रत मुहम्मद पर नहीं हो सकता।

लफ़ज़ याक़ीम (يَاقِيمُ) का मतलब

आया ज़ेर-ए-बहस में इब्रानी लफ़ज़ याक़ीम (يَاقِيمُ) आया है जो एक ऐसा फ़ेअल है जिसका ताल्लुक़ ज़माना इस्तिमरारी (हमेशा का बंदो बस्त) या ज़माना तमाम से है। पस इस लफ़ज़ का सही उर्दू तर्जुमा ये है खड़ा या बरपा करता रहेगा। “इब्रानी ज़बान मरहूम प्रोफ़ेसर ड्राइवर (Driver) अपनी मशहूर आलम तस्नीफ़ में निहायत वाज़ेह तौर पर इस नुकते पर मबसूत (कुशादा, फ़राख) बहस करते हैं।⁸

प्रोफ़ेसर लेक (Kirsop Lake) ने भी इन अल्फ़ाज़ पर निहायत आलिमाना बहस की है।⁹ और यह भी हमारे तर्जुमे की ताईद करती है।

इस सही उर्दू तर्जुमे में इस अम्र की गुंजाइश ही नहीं रहती कि फ़ाअ याक़ीम (يَاقِيمُ) का ज़माना मुस्तक़बिल के किसी ख़ास दौर से ताल्लुक़ हो। चह जायकि इस का तअय्युन ज़माना मूसवी के दो हज़ार (2000) साल बाद के अर्से से किया जाये। इस के बरअक्स इस फ़ेअल का ज़माना हज़रत मूसा की वफ़ात के बाद ही शुरू हो जाता है और बनी-इस्राईल की तारीख के हर दौर और ज़माने से मुताल्लिक़ है। चुनान्चे हज़रत आमोस नबी की किताब में आया है, “में (खुदा) ने तुम्हारे बेटों में से नबी और तुम्हारे जवानों में से नज़ीर बरपा किए। ऐ बनी-इस्राईल क्या ये सचच नहीं?” (आमोस 2:11) यहां भी बईना यही फ़ेअल और मुहावरा आया है फिर (2_तवारीख) का मुसन्निफ़ कहता है कि, “खुदावंद

⁸ Deuteronomy (International Critical Commentary)

⁹ The Beginnings of Christianity vol.i.pp.404.408.

उन के बाप दादा के खुदा ने अपने पैगम्बरों को इन (बनी-इस्राईल) के पास बरवक्त भेज भेज कर पैगाम भेजा क्योंकि उसे अपने लोगों और मस्कन पर तरस आता था। लेकिन उन्होंने ने खुदा के पैगम्बरों को ठट्ठों में उड़ाया और उस की बातों को नाचीज़ जाना और उस के नबियों की हंसी उड़ाई यहां तक कि खुदावंद का ग़ज़ब उन पर ऐसा भड़का कि कोई चारा ना रहा।” (36:15 नीज़ देखो यर्मियाह 7:13 ता 25, 11:7, 25:3 ता 4, 26:5, 29:19, 32:23, 35:15, 44:4 वगैरह) इन और दीगर मुकामात में खुदा के इस इर्शाद की तक्मील की जानिब इशारा है जो (इस्तिस्ना 18:15) में है कि खुदा बनी-इस्राईल की हिदायत के लिए नबी बरपा करता रहेगा।

जाहिर है कि ये इब्रानी फ़ेअल इस आयत का हज़रत मुहम्मद पर इतलाक़ करने के क़तई ख़िलाफ़ है।

आयत का अस्ल मतलब

इस आया शरीफ़ा के मुताबिक़ खुदा अपने अम्बिया को “तेरे लिए” यानी खास बनी-इस्राईल की क़ौम के लिए जो हज़रत मूसा के मुखातब थे मबऊस करेगा। अब नाज़रीन ग़ौर फ़रमाएं कि हज़रत रसूल अरबी ने ये दाअ्वा कहीं नहीं किया कि आप खास बनी-इस्राईल के लिए मबऊस हुए थे। इस के बरअक्स उन्होंने ने अपने आपको नबी मख़सूस बराए अहले-अरब यानी (ग़ैर-इस्राईली) गिरदाना। चुनान्चे जब कुफ़र ने एतराज़ किया कि अम्बिया-ए-साबक़ीन इब्रानी बोलते थे और उन का कलाम इब्रानी में होता था कि आप एक ग़ैर-इब्रानी अरबी ज़बान बोलते हैं। पस आपका दाअ्वा-ए-नुबूव्वत बातिल है तो आपने जवाब दिया :-

“हम (खुदा) ने कोई रसूल नहीं भेजा मगर बोली बोलता अपनी क़ौम की ताकि उनके आगे खोल सुनाए।” (इब्राहिम रूक़अ 1)

यानी अम्बिया-ए-बनी-इस्राईल इब्रानी बोलते थे। क्योंकि वो इब्रानियों के लिए नबी थे। मैं ग़ैर-इब्रानी यानी अरब के लिए नबी हूँ। पस अरबी ज़बान बोलता हूँ। फिर खुदा वाज़ेह तौर पर आँहज़रत को कुरआन में हुक़म देता है :-

“तू डर सुनावे एक क्रौम को (ना कि तमाम अक्वाम (क्रौमों) को) जिनके पास कोई डर सुनाने वाला नहीं आया। (यानी अहले-अरब जिनके पास कोई नबी कभी नहीं आया बरखिलाफ़ बनी-इस्राईल के जिन में कुल अम्बिया मबऊस हुए) तुझसे पहले। शायद वो याद रखें।” (क़िसस रूकूअ 5)

चुनान्चे इसी के मुताबिक़ कुरआन की निस्बत ये दाअ्वा है :-

“ये किताब एक बरकत है जो हमने उतारी, सो ऐ (अहले-अरब) इस पर चलो इस वास्ते कि कभी कहो, कि किताब जो उतरी थी सो दो ही फ़िक्रों (यानी यहूद व नसारा) पर हम से पहले और हम को उन के पढ़ने पढ़ाने की खबर ना थी।” (अन्आम रूकूअ 20)

फिर लिखा है कि :

“(ऐ मुहम्मद) हमने तुझ पर अरबी ज़बान का कुरआन उतारा ताकि तो बड़े गांव (मक्का) को डर सुनाए और इस के आस-पास वालों को।” (शूरा रूकूअ 1)

आयात-ए-ज़ेरे-बहस में ना सिर्फ़ पंद्रहवीं आयत के अल्फ़ाज़ “तेरे लिए” से ज़ाहिर है कि यहां मुखातब बनी-इस्राईल में बल्कि आयत 18 के अल्फ़ाज़ “वो नबी उनसे कहेगा” से भी यही ज़ाहिर है कि इन अम्बिया-अल्लाह के मुखातब बनी-इस्राईल होंगे ना कि कोई दूसरी क्रौम। हज़रत मुहम्मद अरबी की तारीख़ और दाअ्वा इस आया शरीफ़ा के मंशा के मुताबिक़ नहीं हैं। चुनान्चे कुरआन में आया है :-

“अल्लाह ने उठाया उम्मियों से एक रसूल जो उन्हीं में से है जो उनके पास इस (कुरआन) की आयात पढ़ता है।” (जुमा रूकूअ 1)

ये कुरआनी मुहावरा “उम्मी” (أُمِّي) उन लोगों के लिए मख़सूस है जो अहले-किताब नहीं हैं और कुरआन ने इस लफ़ज़ का इतलाक़ अहले-अरब पर किया है क्योंकि वो अहले-किताब नहीं थे और कुतुब समावी (आस्मानी किताबे) नहीं रखते थे और इस कुरआनी आयत के मुताबिक़ उम्मी रसूल (मुहम्मद) उम्मियों (गैर-यहूद) के लिए भेजा गया जिसके मुखातब उम्मी (अहले-अरब) होंगे।

पस ज़ाहिर है कि हज़रत मुहम्मद अरबी में आया ज़ेर-ए-बहस की ये शर्त भी फ़ौत होती है क्योंकि आप इस आया शरीफ़ा के मुताबिक़ ना तो इस्राईली थे, ना इस्राईलियों के दर्मियान से थे। ना इस्राईलियों के वास्ते मबऊस हुए थे और ना इस्राईली आपके मुखातब थे। इस के बरअक्स आप उम्मी थे उम्मीयों में से थे। उम्मीयों के वास्ते मबऊस हुए थे। और उम्मीयों ही से मुखातब हुए थे। हक़-पसंद नाज़रीन खुद ही इन्साफ़ करें कि जब तौरात शरीफ़ की आयत की हर शर्त एक-एक करके आँहज़रत की ज़ात में फ़ौत होती है तो इस आयत का इतलाक़ आपकी ज़ात पर किस तरह हो सकता है?

अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” का मतलब

चूँकि हम इस बहस को जामेअ बनाना चाहते हैं हम लगे हाथों इस्लामी मुनाज़िरीन की उन तमाम दलाईल की भी तन्कीद किए देते हैं जिनको मौलवी साहब ने अपने रिसाले में पेश नहीं किया ताकि किसी को ये कहने का मौक़ा ना रहे फ़ुलां मौलवी साहब के फ़ुलां नुक़ते का जवाब ईसाईयों की तरफ़ से नहीं दिया गया।

बाअज़ इस्लामी मुनाज़िरीन अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” का ग़लत मफ़हूम समझ कि उनका इतलाक़ हज़रत मुहम्मद पर करके कहते हैं कि हज़रत मूसा और हज़रत मुहम्मद में मुमासिलत है क्योंकि दोनों बुत-परस्तों में ज़ाहिर हुए, दोनों के रिश्तेदारों ने पहले उनको रद्द किया और फिर कुबूल किया। दोनों शादी-शुदा थे। दोनों के हाँ औलाद पैदा हुई। दोनों अपने दुश्मनों से भागे एक ने मिदयान को और दूसरे ने मदीना को हिज़्रत की। दोनों ने कुफ़ार से जंग की। दोनों के पैरों (मानने वाले) उन की मौत के बाद अर्ज़-ए-मुक़द्दस में दाख़िल हुए। दोनों ने खून किए। दोनों ने एक से ज़्यादा औरतों से शादी की। दोनों के नाम हर्फ़ मीम से शुरू होते हैं। दोनों साहब ग़ज़ब, हुक्मरान, फ़ातिह और कुफ़ार से इंतिकाम लेने वाले मुजाहिद और साहिब-ए-शरीअत थे। (सीरत-उन्नबी खुत्बात वग़ैरह)

मुमासिलत की हकीक़त

इल्म-ए-मन्तिक व फ़ल्सफ़ा का अबतदी भी इन मज़हका खेज़ दलाईल पर हँसेगा। मज़कूर बाला तमाम बातें महज़ आरिज़ी, वक़ती और सतही हैं जो तम्सीली इस्तिदलाल

और इस्तिकरा (पैरवी करने) की बुनियाद नहीं हो सकती। इस किस्म की पेश कर्दा मुशाबहत से हम कोई नतीजा अख़ज़ नहीं कर सकते। अगर मुशाबहत का यही मतलब है तो इस किस्म की बातें मुसलेमा कज़़ाब (निहायत झूटा, झूटों का बादशाह) और बाक़ी झूटे नबियों को भी सादिक़ साबित करने में बड़े काम की हैं। लेकिन मज़कूर बाला निक़ात मौज़ू ज़ेर-ए-बहस को साबित नहीं कर सकते। इस किस्म के इस्तिदलाल के लिए मुमासिलत का होना उन बातों में लाज़िमी है जो ऐसी मुम्ताज़ हों कि जज़ूलाएनफ़क (ذوّالغیبة) वो हिस्सा जो अलैहदा ना हो सके) हों और जिनसे लाज़िमी तौर पर सही नतीजा निकल सके।

इस्लामी मुनाज़िरीन ताहाल इस किस्म की मन्तिकी मुशाबहत और मुमासिलत दिखलाने से कासिर रहे हैं जिससे लाज़िमी तौर पर ये नतीजा अख़ज़ हो सके कि हज़रत मूसा और हज़रत मुहम्मद एक दूसरे की मानिंद हैं। अगर ये दोनों हज़रात एक दूसरे की मानिंद होते तो कुरआन जो हर बात को मुफ़स्सिल बयान करने का मुद्दई (दाअ्वेदार) है ये मुशाबहत ज़रूर बयान कर देता। लेकिन कुरआन के किसी एक मुक़ाम में भी हज़रत मुहम्मद को हज़रत मूसा से तश्बीह नहीं दी गई। बल्कि तमाम कुरआन को छान मारो तुमको किसी जगह भी ये नहीं मिलेगा कि इन मुनाज़िर यन को पेश कर्दा आयत की एक पेशगोई है जो आँहज़रत के हक़ में है। अगर ये आया **ज़ेर-ए-बहस मुहम्मद अरबी की पेशगोई होती तो कुरआन में इस का ज़िक़र क्यों ना आता?** ये माअनी-खेज़ ख़ामोशी मौलवी साहिबान के दाअ्वे की ज़बान-ए-हाल से तर्दीद कर रही है और सय्यद मरहूम के अल्फ़ाज़ को हीच साबित कर रही है कि मौलवी साहिबान ने इस किस्म की सीधी आयात को “पहेली और मुअम्मे” बना दिया है।

अगर मौलवी साहिबान जैसी पेश कर्दा मुमासिलत की आरिज़ी बातें ही अल्फ़ाज़ **“मेरी मानिंद”** को हज़रत मुहम्मद पर चस्पॉ कर सकती हैं तो वो इस बात का क्या जवाब देंगे कि हज़रत मूसा की पैदाइश के वक़्त फ़िरऔन ने बच्चों को मरवा डाला लेकिन आँहज़रत की पैदाइश के वक़्त ऐसा कोई सानिहा वाक़ेया ना हुआ? वो इन बातों का क्या जवाब देंगे जो महज़ सतही नहीं बल्कि उनके पेश कर्दा निक़ात से ज़्यादा गहिरी और नबुव्वत के कमालात से मुताल्लिक़ हैं? मसलन ये कि हज़रत मूसा ने रूबरू (आमने सामने) ख़ुदा से कलाम किया जिसकी वजह से आपका नाम कलीम-उल्लाह हुआ। (सूरह मर्यम आयत 52) लेकिन ख़ुदा ने आँहज़रत पर हज़रत जिब्राईल की वसातत (जरिये) से

कुरआन नाज़िल किया। हज़रत मूसा से मोअजज़ात सादिर हुए (सूरह आराफ़ आयत 101 ता 116, 160 वगैरह) लेकिन आँहज़रत ने मोअजज़ात नहीं किए हालाँकि अहले-अरब आपसे बराबर दरख्वास्त करते रहे। (बनी-इस्राईल 61, 93 ता 96, अन्कबूत 49, 50, रअद 8, 30, अन्आम 37, 57, 109, बकरह 112, यूनुस 21, आराफ़ 202 वगैरह) हज़रत मूसा अहद क़दीम के दर्मियानी थे जो ख़ुदा और इस्राईल के दर्मियान इताअत का अहद था। (सूरह माइदा 15) लेकिन हज़रत मुहम्मद के सपुर्द दर्मियानी की ख़िदमत तफ़वीज़ (सपुर्द) ना की गई। हज़रत मूसा अपनी क़ौम की शफ़ाअत करते थे। लेकिन कुरआन आँहज़रत के शफ़ी होने से साफ़ इन्कार करता है (अन्आम रूकूअ 6, बकरह रूकूअ 6) हज़रत मूसा बनी-इस्राईल को फ़िरऔन-ए-मिस्र की गुलामी से बगैर तलवार चलाए आज़ाद करके मुल्क मिस्र से निकाल कर कनआन में ले गए, लेकिन मौलवी साहिबान ही बतलाएं कि हज़रत मुहम्मद बगैर तलवार चलाए किस क़ौम को कहाँ से निकाल कर कहाँ ले गए। हज़रत मूसा ने बनी-इस्राईल को चालीस (40) साल तक आस्मानी रोटी खिलाई। इस बारे में आँहज़रत किस तरह से उन से मुशाबहत रखते हैं? हज़रत मूसा अहले मिस्र की दानिश में माहिर थे। (आमाल 7:23) लेकिन आँहज़रत महज़ उम्मी थे (आराफ़ 156, 158) अब हमारे मुखातब ही जवाब दें कि आँहज़रत में हज़रत मूसा के फ़ज़ाइल कहाँ पाए जाते हैं? हक़ तो ये है कि मौलवी साहब ने इस मुआमले में उल्टी राह इख़्तियार की है। **वाज़िब तो ये था कि सबसे पहले आप ये साबित करते कि आँहज़रत फ़िल-हक़ीक़त नबी थे उस के बाद आपको ये हक़ हासिल हो सकता था कि आप उनको मसील-ए-मूसा साबित करने की कोशिश करते।** इस के बरअक्स आप मुमासिलत से नबुव्वत करने चले। आपने उनको मिसल-ए-मूसा साबित करना चाहा जो आप ना कर सके और आप ने अपने अस्ल क़ज़ीया (बहस व तकरार) यानी नबुव्वत-ए-मुहम्मदियाह को भी साबित ना किया।

तौरात और आयत की तावील

मौलवी साहब किताब इस्तिस्ना के आखिरी बाब की दसवीं आयत को पेश करके कहते हैं तौरात में ये पेशगोई फ़ैसला पा चुकी है कि बनी-इस्राईल के हक़ में नहीं हो सकती क्योंकि वहां लिखा है कि **“अब तक बनी-इस्राईल में कोई नबी मूसा की मानिंद जिससे ख़ुदावंद ने रूबरू बातें कीं नहीं उठा।”**

लेकिन ये आयत खुद फ़ैसला कर रही है कि नबी कौम बनी-इसाईल ही से होगा और इस में दो बातें ज़माने को मुक़य्यद करती हैं। यानी (1) लफ़ज़ “अब तक” और (2) फ़िक्रह “जिससे खुदावंद ने रूबरू बातें कीं।”

(1) लफ़ज़ “अब तक” जिससे साफ़ अयाँ है कि आइन्दा ज़माने में “बनी-इसाईल” में कोई ऐसा नबी ज़ाहिर होगा “जिससे खुदावंद रूबरू बातें करेगा” लेकिन ये आयत इस अम्र को बिल्कुल साफ़ और वाज़ेह कर देती है कि ये नबी कौम इसाईल ही से होगा वर्ना बनी-इसाईल की कैद इस मुक़ाम में क्यों आती? लफ़ज़ “अब तक” की कैद भी इस बात को ज़ाहिर कर देती है कि जिस ज़माने में ये आयत लिखी गई थी उस वक़्त तक कोई ऐसा नबी नहीं उठा था जिससे खुदावंद ने मूसा की तरह रूबरू बातें की हों।

(2) आयत में एक दूसरी कैद ये लगा दी गई है जिससे मुसन्निफ़ का माअनी-उल-ज़मीर ज़ाहिर हो जाता है कि हज़रत मूसा और नबी में क्या मुमासिलत और मुशाबहत हुई। यानी वो किस किस्म का नबी होगा। ऐसा नबी जिससे “खुदावंद ने रूबरू बातें कीं।”

इस कैद के अल्फ़ाज़ वाज़ेह तौर पर बतला देते हैं कि इस ख़ास मुक़ाम में सिर्फ़ एक ख़ास मुशाबहत का ज़िक्र है जो हुक्म आम नहीं रखता। लिहाज़ा ये आयत अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” के कुल मफ़हूम को समझने में मदद नहीं देती क्योंकि इल्म-ए-मन्तिक के रु से हम किसी एक जुज़्व से क़ज़ीया कुल्लिया पर नहीं पहुंच सकते।

बहरहाल कैद के ये अल्फ़ाज़ जिससे खुदा ने रूबरू बातें कीं इस आयत को हज़रत मुहम्मद पर चस्पॉ करने की कुल्ली मुखालिफ़ हैं। कुरआन में कहीं नहीं आया कि अल्लाह तआला ने आँहज़रत से “रूबरू बातें कीं।”

इस आयत से एक और बड़े काम का नतीजा हाथ लगता है कि हज़रत मूसा के वक़्त से लेकर तमाम यहूद ये आया ज़ेर-ए-बहस को इसाईली नज़ाद (अस्ल, नसब) नबी की निस्बत ही समझते रहे क्योंकि इस आयत में लिखा है कि “बनी-इसाईल में अब तक..... नबी नहीं उठा।” इन तमाम ज़मानों में किसी यहूदी के ख़्वाब व ख़्याल में भी ना आया कि आया ज़ेर-ए-बहस के “नबी” से ग़ैर-इसाईली या कोई अरब नज़ाद नबी मुराद लें।

मन्सब-ए-नबुव्वत

बाब अद्वल में नबुव्वत के मफ़हूम पर बहस करते वक़्त हम ये साबित कर आए हैं कि अम्बिया-अल्लाह का ये काम था कि वो क़ौम-ए-इस्राईल को खुदा तआला के पैग़ाम पहुंचाएं। खुदा उनको हर ज़माने में इस गर्ज़ के लिए खड़ा करता था ताकि वो क़ौम इस्राईल पर खुदा की मर्ज़ी को ज़ाहिर करें। यही उनका फ़र्ज़ मन्सबी था और इसी मक़सद को पूरा करने की खातिर वो मन्सब-ए-नबुव्वत पर सर्फ़राज़ किए जाते थे। पस अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” नबुव्वत के मन्सब, ओहदेदार हैसियत की मुशाबहत मक़सूद है ना किसी और अम्र की मुमासिलत। इन अल्फ़ाज़ का मतलब सिर्फ़ ये है कि हज़रत मूसा के बाद आने वाले अम्बिया हज़रत मूसा की तरह खुदा के मुकर्रर कर्दा फ़रिस्तादे (क़ासिद) होंगे जो खुदा के नाम से काहिनों, बादशाहों और अवामुन्नास (लोगों) को ताअलीम देने वाले, और उन पर उन के गुनाह जतलाने वाले होंगे। बनी-इस्राईल की तारीख़ ये साबित कर देती है कि ये अम्बिया-अल्लाह बादशाहों को खुदा के फ़रमांबर्दार ख़ादिम बनाने वाले, काहिनों को सिरात मुस्तक़ीम दिखलाने वाले और लोगों के पास ईलाही पैग़ामात के पहुंचाने वाले थे। (2 समुएल 12 बाब, यर्मियाह 4 बाब, आमोस 7 बाब वगैरह) बअल्फ़ाज़-ए-दीगर वो खुदा के “अमानतदार” रसूल थे। (गिनती 12:7)

अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” से ये मतलब नहीं लेना चाहिए कि हज़रत मूसा के बाद आने वाले अम्बिया हर पहलू से हज़रत मूसा की मानिंद होंगे। या हज़रत मूसा के हम-सर होंगे। इस मुक़ाम में हज़रत मूसा के दर्जा नबुव्वत या औज (उरूज, बुलंदी) रूहानियत की मुशाबहत मक़सूद नहीं है। जहां तक नबुव्वत के ओहदे का ताल्लुक़ है तमाम अम्बिया जो हो गुज़रे हैं। हज़रत मूसा की मानिंद हैं जो खुदा की मर्ज़ी को बनी-इस्राईल पर ज़ाहिर करने की खातिर वक़तन-फ़-वक़तन हस्ब-ए-ज़रूरत हज़रत मूसा की मानिंद बरपा किए गए थे।

कुरआन शरीफ़ इस नुक्ते को ब-ई अल्फ़ाज़ अदा करता है :-

قُولُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَمَا أُنزِلَ إِلَيْنَا وَمَا أُنزِلَ إِلَىٰ إِبْرَاهِيمَ وَإِسْمَاعِيلَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ
وَالْأَسْبَاطِ وَمَا أُوتِيَ مُوسَىٰ وَعِيسَىٰ وَمَا أُوتِيَ النَّبِيُّونَ مِنْ رَبِّهِمْ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ أَحَدٍ مِّنْهُمْ
وَنَحْنُ لَهُ مُسْلِمُونَ

यानी “तुम कहो कि हम अल्लाह पर ईमान रखते हैं और उस पर जो इब्राहिम और इस्माईल और इस्हाक और याकूब और औलाद-ए-याकूब पर उतरा और जो मूसा और ईसा को मिला जो कुछ तमाम नबियों को उनके खुदा की तरफ से मिला। हम इन नबियों में से किसी एक में भी फ़र्क नहीं करते और हम उसी खुदा के फ़रमांबदार हैं।”

(बकरह आयत 136)

इस कुरआनी आयत का मतलब साफ़ है कि जहां तक मन्सब-ए-नबुव्वत का ताल्लुक है इस लिहाज़ से कुल अम्बिया यकसाँ हैं और उनमें कोई फ़र्क नहीं है।

ज़ेरे बहस आयत में अल्फ़ाज़ “मेरी मानिंद” का बईना यही मफ़हूम है। हज़रत मूसा से फ़रमाता है कि जिस तरह खुदा ने मुझे फ़िरऔन-ए-मिस्र के ज़माने में बनी-इसाईल की हिदायत और राहनुमाई के लिए बर्पा किया था इसी तरह खुदा बनी-इसाईल की तारीख में हस्ब-ए-ज़रूरत हर ज़माने में क़बाइल इसाईल में से लोगों को ओहदा नबुव्वत अता करके बर्पा करता रहेगा ताकि वो अपने-अपने दौर और ज़माने में क़ौम यहूद को होलनाक गुनाहों से आगाह करके सिरात-ए-मुस्तकीम (सीधी राह) पर चलाएं। पस ऐ बनी-इसाईल जब कभी खुदा अपना फ़रिस्तादा नबी भेजे तुम उस की सुनना क्योंकि खुदा खुद अपना कलाम उस के मुँह में डालेगा और जो अहकाम नबी को मिला करेंगे वो उन्ही को तुम तक पहुंचा दिया करेगा। इस तरह तुम खुदा की बर्गुज़ीदा क़ौम बने रहोगे लेकिन अगर तुम नबी की बातों को जिनको वो खुदा की तरफ से तुम तक पहुंचाया करेगा ना सुनोगे तो खुदा तुमसे उस का हिसाब लेगा और वो तुमसे मुवाख़िज़ा किया जाएगा।

पस इस मुक़ाम में वजह मुशाबहत सिर्फ़ मन्सब-ए-नबुव्वत है और बस। इस का मतलब फ़क़त ये है कि जिस तरह खुदा ने हज़रत मूसा को बरपा किया था इसी तरह वो हर ज़माने में नबी बरपा करता रहेगा। हमारी ये तफ़सीर सही है क्यों कि ना सिर्फ़ क़ौम

यहूद की तारीख उस की मुअय्यिद (ताईद करने वाला) है बल्कि खुदा का कलाम भी इस पर शाहिद (गवाह) है। चुनान्चे जब खुदा ने हज़रत मूसा के बाद हज़रत युशूआ को मुकरर किया तो फ़रमाया “जैसे मैं मूसा के साथ था वैसे ही तेरे साथ रहूँगा।” (यशूअ 1:15) और बनी-इस्राईल ने भी युशूआ को कहा :-

“जैसे हम सब उमूर में मूसा की बात सुनते थे वैसे ही तेरी सुनेंगे। फ़कत इतना हो कि खुदावंद तेरा खुदा जिस तरह मूसा के साथ रहता तेरे साथ भी रहे।” (यशूअ 1:17) किताब आमाल-उल-रसूल में जहां आया ज़ेर-ए-बहस का इक्कितबास किया गया है। अंग्रेज़ी रेवाइज़्ड तर्जुमे के हाशिये में इस हिस्से का यूं तर्जुमा किया गया है, (3:23, 7:37) “As He raised up me” यानी जिस तरह उसने मुझे बरपा किया। रेवाइज़्ड स्टैंडर्ड तर्जुमे में आमाल के दोनों मुकामात में यही तर्जुमा मतन में किया गया है। पस इन मुतर्जिमीन¹⁰ के मुताबिक (जिनकी फ़ज़ीलत में किसी को इन्कार की मजाल नहीं) किताब आमाल-अल-रसल में मुकद्दस पतरस और मुकद्दस स्तिफ़नुस आया ज़ेर-ए-बहस का यूं इक्कितबास करते हैं, “खुदावंद तुम्हारा खुदा तुम्हारे भाईयों में से नबी बरपा करता रहेगा जिस तरह उसने मुझे बरपा किया। जो कुछ वो तुमसे कहे उस की सुनना।” अब तो हमारे मुखातब की भी तसल्ली हो जानी चाहिए क्योंकि वो आमाल के इस मुकाम का और पतरस हवारी और स्तिफ़नुस हवारी का सहारा लिए बैठे थे।

अल्फ़ाज़ “अपना कलाम”

हमने सुतूर बाला में जो तफ़सीर पंद्रहवीं आयत कि की है इस की ताईद अठारहवीं आयत के अल्फ़ाज़ भी करते हैं। चुनान्चे इस आयत में खुदा फ़रमाता है, “मैं अपना कलाम उस के मुँह में डालूँगा और जो कुछ मैं उसे हुक्म दूँगा वही वो उनसे कहेगा।” अम्बिया-ए-यहूद की किताबें इस बात की गवाह हैं कि बनी-इस्राईल के मुख्तलिफ़ अम्बिया जो हर दौर में बरपा होते रहे यही दाअ्वा करते थे, कि उनका पैग़ाम खुदा का कलाम है जो वो चार व नाचार अपने ज़माने के लोगों तक मन व अन (वैसा का वैसा) पहुंचाते हैं। मसलन हज़रत यर्मियाह कहते हैं कि, “खुदावंद का कलाम मुझ पर नाज़िल

¹⁰ See also New Testament in modern speech Godspeeds Translation of N.T. Twentieth Century N.T. and “The Book of Books of Translation of N.T. etc.

हुआ। उसने फ़रमाया मैंने तुझे क़ौमों के लिए नबी ठहराया, तब मैंने कहा खुदावंद खुदा देख मैं बोल नहीं सकता, लेकिन खुदावंद ने मुझे फ़रमाया यूं ना कह, जो कुछ मैं तुझे फ़र्माऊंगा वो कहेगा, मैंने अपना कलाम तेरे मुँह में डाल दिया है।” (पहला बाब, नीज़ देखो 23:28 ता आखिर वगैरह, हिज़्कीएल 3:4, 10 वगैरह, गिनती 22:38, 23:5 यसअयाह 51:16, 59:21, खुरूज 4:15, 2 समुएल 14:3 ता 9, एज़ाह 7:18 वगैरह-वगैरह।)

“तुम उस की सुनना”

ज़ाहिर है कि इन अल्फ़ाज़ में हज़रत मूसा ने क़ौम बनी-इस्राईल को मुखातब किया है ना कि बनी-इस्माईल को या किसी और ग़ैर-इस्राईली क़ौम को। इस जुम्ले में अस्ल इब्रानी ज़बान में लफ़ज़ “उस” पर जोर दिया गया है। पस इन अल्फ़ाज़ में खुदा का हुक्म है कि, “ऐ क़ौम इस्राईल तुम अपने गिर्द व पेश की मुश्रिकाना अक्वाम की सी करतूतें (हरकात) ना करना और ना उनके फ़ालगीरों, शुगून निकालने वालों, अफ़सूँ गिरो, जादूगरों, मंत्र पढ़ने वालों, जिन्नात के आशनाओं, रुमालों, साहिरो वगैरह की सुनना। इस के बरअक्स जिस नबी को मैं तुम्हारी हिदायत के लिए वक़तन-फ़-वक़तन बरपा करता रहूँगा तुम फ़क़त उसी की सुनना और सिर्फ़ उसी की तरफ़ कान लगाना। जो मन्सब-ए-नबुव्वत पर सर्फ़राज़ हो कर हज़रत मूसा के काम को मुतवातिर और मुसलसल तौर पर अपने ज़माने में बरकरार और पहीम जारी रखेगा।

माबाअ़द की आयात (20, 22) में खुदा ने एक मेयार भी कायम फ़र्मा दिया ताकि क़ौम इस्राईल इस कसौटी पर नबी के दाअ्वे को परख कर सादिक (सच्चे) और काज़िब (झूटे) नबी में तमीज़ कर सके। इन आयात की तफ़सीर व तावील के लिए देखो, (यर्मियाह 14:14, 15:16, 21 ता 27, 30 ता 23 आयात, 27:9 ता 16, 28:15 ता 17, 29:8, 21 ता 23, 1 सलातीन 22:11 ता 22, हिज़्कीएल 12:24, 13:1 ता 23, नोहा 2:14, यसअयाह 30:10, मीकाह 2:11, 3:11 वगैरह) और दीगर मुक़ामात में सादिक (सच्चे) और काज़िब (झूटे) नबियों की मिसालें भी मौजूद हैं।

हकीकत तो ये है कि क़दीम ज़माने की मुश्रिकाना अक्वाम (क़ौमें) और क़ौम बनी इस्राईल में यही एक बात माबा-अल-इम्तियाज़ थी कि बनी-इस्राईल के दर्मियान हर

ज़माने में एक मुस्तक़बिल तबक़ा अम्बिया मौजूद रहा। (1 समुएल 19:20) ताकि क्रौम यहूद खुदा के नबियों की ज़ेरे हिदायत रज़ा-ए-ईलाही से वाक़िफ़ हो सके। खुदावंदी इर्शाद है कि जब बनी-इस्राईल को ज़रूरत दरपेश होगी तो खुदा इस मुस्तक़बिल तबक़ा अम्बिया में से उनकी हिदायत के लिए नबी बरपा किया करेगा ताकि क्रौम इस्राईल उस की सुने। तारीख़ इस अम्र की गवाह है कि बाकी मुश्रिकाना अक्वाम मसलन बनी-इस्माईल बनी-अदूम वगैरह जिनके साथ बनी-इस्राईल का खूनी रिश्ता था बुत-परस्त ही रहें और इन में खुदा-ए-वाहिद के अम्बिया बरपा ना हुए।

इस बाब की फ़स्लों में हमने ज़ेर-ए-बहस आयात के मुख्तलिफ़ अल्फ़ाज़ पर मुफ़स्सिल बहस करके अरबाब-ए-दानिश पर इनका सही मफ़हूम ज़ाहिर कर दिया है। अब इंसाफ़ पसंद नाज़रीन खुद फ़ैसला कर सकते हैं कि सर सय्यद मरहूम के इन अल्फ़ाज़ में कितनी सदाक़त है कि :-

“इन आयतों में मुहम्मद रसूल ﷺ के मबऊस होने की ऐसी साफ़ और मुस्तहक़म बशारत है जिससे कोई भी इन्कार नहीं कर सकता।” (खुत्बात 599)

हमने साबित कर दिया है कि इन आयात में किसी खास नबी की आमद की कोई बशारत मौजूद नहीं चह जायके वो साफ़ और मुस्तहक़म हो और कि कोई साहिब-ए-अक्ल इन अल्फ़ाज़ का इतलाक़ हज़रत मुहम्मद अरबी पर नहीं कर सकता।

फ़स्ल चहारुम

आया ज़ेरे बहस और मुक़द्दस पतरस रसूल की तक़रीर

हम बाब दोम की फ़स्ल दोम में बतला चुके हैं कि सय्यदना ईसा मसीह की बिअसत का ज़माना बनी-इस्राईल की ज़बूनी का ज़माना था। बनी-इस्राईल का एक कसीर

गिरोह (जिसमें हर किस्म, हर दर्जे और हर तबके के खुदा-परस्त और दीनदार मर्द व ज़न शामिल थे) आस्मान की तरफ नज़र उठाए एक नबी की आमद का मुंतज़िर था जो इर्शाद-ए-खुदावंदी के मुताबिक बरपा हो कर क़ौम की मुसीबत के ज़माने में इस की रहनुमाई करे। जब आँखुदावंद का ज़हूर-ए-कुद्सी हुआ तो सब लोग “खुदा की तम्जीद करके कहने लगे कि एक बड़ा नबी हम में बरपा हुआ है और खुदा ने अपनी उम्मत पर तवज्जोह फ़रमाई है।” (लूका 7:16)

मुनज्जी आलमीन (मसीह) के सऊद-ए-आस्मानी के बाद जब रसूलों पर रूहुल-कुद्दुस नाज़िल हुआ तो मुक़द्दस पतरस रसूल ने बनी-इस्राईल को मुखातब करके कहा, “(ऐ इस्राईलियों) तौबा करो और रूजू लाओ ताकि तुम्हारे गुनाह मिटाए जाएं और इस तरह खुदावंद के हुज़ूर से ताज़गी के अय्याम आएँ और वो उस मसीह को जो तुम्हारे वास्ते मुकर्रर हुआ है यानी ईसा मसीह को भेजे। ज़रूर है कि आस्मान में उस वक़्त तक रहे जब तक कि वो सब चीज़ें बहाल ना की जाएँ जिनका ज़िक्र खुदा ने अपने पाक नबियों की ज़बानी किया है, जो शुरू से होते आए हैं। चुनान्चे मूसा ने कहा, कि खुदावंद तुम्हारा खुदा तुम्हारे भाईयों में से तुम्हारे लिए नबी बरपा करता रहेगा जिस तरह उसने मुझे बरपा किया, जो कुछ वो तुमसे कहे उस की सुनना और यूँ होगा कि जो शख्स इस नबी की ना सुनेगा वो उम्मत से नेस्त व नाबूद कर दिया जाएगा। बल्कि समुएल से लेकर पिछलों तक जितने नबियों ने कलाम किया उन सब ने इन दिनों की खबर दी है। तुम (ऐ इस्राईलियों) नबियों की औलाद और उस अहद के शरीक हो जो खुदा ने तुम्हारे बाप दादा से बाँधा जब अब्राहाम से कहा, कि तेरी औलाद से दुनिया के सब घराने बरकत पाएँगे। खुदा ने अपने खादिम (ईसा) को बरपा करके पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हर एक को उस की बदियों से फेर कर बरकत दे।” (आमाल 3:19 ता आखिर)

मौलवी साहब की दलील और जवाब

इस मुक़ाम में मुक़द्दस पतरस फ़र्माते हैं कि खुदा ने अहले-यहूद की ज़बूनी को मिटाने की खातिर आया ज़ेर-ए-बहस के वाअदे के मुताबिक सय्यदना ईसा मसीह को बरपा करके नबी मौऊद बना कर भेजा है ताकि बनी-इस्राईल तौबा करके खुदा की तरफ़ मुतवज्जह हों और उस के बर्गुज़ीदा मसीह पर ईमान लाकर नजात हासिल करें।

लेकिन हमारी हैरानी की हद ना रही जब हमने पढ़ा कि मौलवी साहब ने मुकद्दस पतरस को मुन्दरिजा बाला आयात की बिना पर मुहम्मद अरबी का मुबशिशर बनाना चाहा है। उनके ज़ोअम में मुकद्दस रसूल मक्बूल आया ज़ेर-ए-बहस को अपनी तक़रीर में हज़रत मुहम्मद अरबी से मन्सूब कर रहे हैं !!

بسوخت عقل ز حیرت که این چه بوالعجبی ست

बसूखत अक़ल ज़हीरत कि एं चह बवाल अजबी सत

चुनान्चे मौलवी साहब फ़र्माते हैं :-

“इस पेशगोई को हज़रत पतरस हज़रत मुहम्मद पर जमाते हैं। ऊपर की आयात पर नाज़रीन को दो उमूर पर गौर करना चाहिए।” (सफ़ा 16 ता 17)

वो दो उमूर मए जवाब ये हैं :-

अव्वल ये कि, “ज़रूर है कि वो यानी ईसा आस्मान में उस वक़्त तक रहे जब वो नबी मिस्ल मूसा आ जाए।” नहीं साहब बल्कि उस वक़्त तक कि वो सब चीज़ें बहाल ना की जाएं जिनका ज़िक्र खुदा ने अपने पाक नबियों की ज़बानी किया है। देखिए आपने कैसी बरजस्ता (बरवक़त) ग़लती की है।

मुकद्दस पतरस दूसरे बाब की 33, 34 आयात में बतला चुके हैं कि क्यों “ज़रूर है कि वो मसीह, आस्मान में रहे” यानी इस वास्ते ताकि वो रूहुल-कुददुस को नाज़िल करे। इस बख़िशश से मसीह की (जो आस्मान में है) सल्तनत ज़मीन पर शुरू हो गई क्योंकि सब चीज़ों की बहाली से पहले ज़रूर है कि गुनाहगार इन्सान बहाल हो जाए। पस रसूल मक्बूल फ़रमाता है कि “ऐ इस्राईलियों तौबा करो और रुजू लाओ।” “जब मुनज्जी आलमीन (मसीह) बहाल करते हैं तो इस बहाली में इन्सान और दीगर तमाम मख़लूक़ात की बहाली शामिल है। (रोमीयों 8:19 ता 22, यसअयाह 65:18, 2_पतरस 3:13, मुकाशफ़ा 21:21 वगैरह)

दोम : “ये कि सय्यदना ईसा पहले आया। ये बात भी इस पर दलालत करती है कि मसीह मुबशिशर मुहम्मद हैं।” “गोया पहले आना किसी की बशारत देने को लाज़िमी ठहरा देता है खुसूसुन हज़रत मुहम्मद को ! हकीकत तो ये है कि सय्यदना मसीह ने किसी दूसरे नबी की बशारत नहीं दी। ये मुस्लिम मुनाज़िरीन का महज़ वहम है। हम ये भी बतला चुके हैं कि ये लाज़िम नहीं कि हर नबी की आमद के लिए पेश खबरी मौजूद हो। मौलवी साहब आया शरीफा का मतलब नहीं समझे। गो आयत साफ़ और वाज़ेह है। “खुदा ने अपने खादिम ईसा को बरपा करके पहले तुम्हारे पास भेजा और यह बात हज़रत कलिमतुल्लाह के कलाम के मुताबिक है,¹¹ कि “गैर-क़ौमों की तरफ़ ना जाना बल्कि पहले इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना।” (मत्ती 10:5, 6, मर्कुस 7:27)

मुन्दरिजा बाला आयात में मुक़द्दस पतरस का मतलब साफ़ है, आप फ़र्माते हैं :-

अव्वल, जिन बातों का ज़िक्र खुदा ने अपने पाक नबियों की ज़बानी किया है वो सब बातें सय्यदना मसीह की ज़ात-ए-कुदसी सिफ़ात अमीं बदर्जा अहसन पाई जाती हैं।

दोम, गुनाहों के मिटाए जाने और ताज़गी के अय्याम के आने का जो ज़िक्र आयत 19 में शुरू हुआ है उनका सय्यदना मसीह के साथ अंजाम बख़ैर होता है। चुनान्चे मुक़द्दस पतरस फ़र्माते हैं कि “खुदा ने अपने खादिम ईसा को बरपा करके पहले तुम्हारे पास भेजा ताकि तुम में से हर एक को उस की बदियों से फेर कर बरकत दे।” (आयत 26)

सोम, मुक़द्दस रसूल मुनज्जी आलमीन (मसीह) की रिसालत का ज़िक्र करते हुए फ़र्माते हैं, “वो इस मसीह को जो तुम्हारे वास्ते मुकर्रर हुआ है यानी ईसा को भेजे।” भला तर्करूरी तो ईसा मसीह की हो और आजाएँ मुहम्मद ये क्या खयाल मुहाल है?

चहारुम, (इस्तिस्ना की किताब के 18 बाब की 15 आयत) को मुक़द्दस पतरस ने इब्राहीमी वाअदे के साथ कि तेरी औलाद से दुनिया के सब घराने बरकत पाएँगे

¹¹ इस आयत की सहीह तफ़्सीर के लिए मेरा रिसाला मुलाहिज़ा करें “इस्राईल का नबी या जहाँ का मुनज्जी” बरकतुल्लाह

वाबस्ता किया है। ये इब्राहीमी वाअदा जैसा हम इंशा-अल्लाह अगले बाब में साबित कर देंगे बनी-इस्माईल को नहीं पहुंचा बल्कि बनी-इस्माईल को मिला। चुनान्चे तौरात शरीफ की किताब पैदाइश में खुदा फ़रमाता है, “मैं इज़्हाक़ से और इस के बाद उस की औलाद से अपना अहद जो अबदी है बाँधूंगा। इस्माईल के हक़ में भी मैंने तेरी दुआ सुनी, देख मैं उसे बरकत दूँगा और उसे बरूमंद करूँगा लेकिन मैं अपना अहद इज़्हाक़ से बाँधूंगा।” (पैदाइश 17:19 ता 21) इस मुक़ाम में निहायत वाज़ेह और साफ़ अल्फ़ाज़ में खुदा ने हज़रत इस्माईल को अहद से ख़ारिज करके अपना अहद हज़रत इज़्हाक़ से बाँधा है। किताब इस्तिस्ना की आया ज़ेर-ए-बहस उसी अहद के ज़ेल में है।

पंजुम, मुक़द्दस पतरस ने अपनी तमाम तक़रीर और इस्तिदलाल का नतीजा खुद ही फ़रमाया दिया कि “खुदा ने अपने खादिम ईसा को बरपा करके पहले तुम्हारे पास भेजा।” इस आयत से ऐसे शख्स के लिए जो इन्जील जलील से इस्तिदलाल करना चाहता हो तामिल (सब्र व तहम्मूल) की कोई गुंजाइश ही नहीं रहती।

शश्म, मुक़द्दस पतरस रसूल तारीख़ यहूद के उस दौर का ज़िक्र करके जिसमें वो आप रहते थे फ़र्माते हैं, “सब नबियों ने “इन दिनों” की ख़बर दी है।” भला फ़रमाईए कि इन दिनों को छः (6) सदीयां बाद के मुहम्मद अरबी के ज़माने से क्या मुनासबत है?

बाब चहारुम

इज़्हाकी और इस्माईली बरकात

खुदावंदी वाअदे

इस बाब में हम इज़्हाकी और इस्माईली बरकतों पर तब्बिसरा करके ये मालूम करेंगे कि आया हज़रत इस्माईल और उन के ख़ानदान के लिए कोई नब्वी बरकत मौऊद (वादा) थी। मौलवी साहब ने अपने रिसाले के सफ़ा 4 पर बनी-इस्माईल और बनी-इस्माईल की बरकतों का एक शिजरा पेश किया है और तौरात शरीफ़ में जो वाअदे दोनों क़ौमों से

हुए नक़ल किए हैं। चुनान्चे हम भी इन बरकात को नाज़रीन के रूबरू पेश करके मौलवी साहब की दलील को जांचते हैं :-

बनी-इज़हाक़

खुदा ने इब्राहिम से फ़रमाया, बेशक तेरी बीवी सारा के तुझसे बेटा होगा तू उस का नाम इज़हाक़ रखना। और मैं उस से और फिर उस की औलाद से अपना अहद जो अबदी अहद है बाँधूंगा। (पैदाइश 17:19)

खुदा ने इब्राहिम से हम-कलाम हो कर फ़रमाया, देख मेरा अहद तेरे साथ है। मैं तुझे बहुत बरूमंद करूँगा। कौमें तेरी नस्ल से होंगी, मैं अपने और तेरे दर्मियान और तेरे बाद तेरी नस्ल के दर्मियान उन सबकी पुशतों के लिए अपना जो अबदी अहद है बाँधूंगा ताकि मैं तेरा और तेरे बाद तेरी नस्ल का खुदा होऊँ। मैं तुझको और तेरे बाद तेरी नस्ल को कनआन का तमाम मुल्क दूँगा कि वो दाइमी मिल्कियत हो जाएगी और मैं उनका खुदा हूँगा। (पैदाइश 17:3 ता 8)

खुदावंद ने इब्राहिम से कहा, तू अपने वतन और अपने नातेदारों के बीच मैं से और अपने बाप के घर से निकल, मैं तुझे एक बड़ी क़ौम बनाऊँगा और बरकत दूँगा और तेरा नाम सर्फ़राज़ करूँगा। सो तू बाइस-ए-बरकत होगा और दुनिया की सब कौमें तेरे

बनी-इस्माईल

खुदावंद के फ़रिश्ते ने हाजिरा से कहा, तू अपनी बीबी (सारा) के पास लौट जा। मैं तेरी औलाद को बहुत बढ़ाऊँगा यहां तक कि कस्रत के सबब उस का शुमार ना हो सकेगा। तेरे बेटा होगा उस का नाम इस्माईल रखना। वो गोरखर की तरह आज़ाद मर्द होगा। उस का हाथ सब के खिलाफ़ और सब के हाथ उस के खिलाफ़ होंगे और वो अपने सब भाईयों के सामने बसा रहेगा। (पैदाइश 6:9 ता 12)

इब्राहिम ने खुदा से कहा, कि काश इस्माईल तेरे हुज़ूर जीता रहे। तब खुदावंद ने फ़रमाया, मैंने तेरी दुआ इस्माईल के हक़ में भी सुनी। देख मैं उसे बरकत दूँगा। और उसे बरूमंद करूँगा और उसे बहुत बढ़ाऊँगा और उस से बारह (12) सरदार पैदा होंगे और मैं उसे बड़ी क़ौम बनाऊँगा लेकिन मैं अपना अहद इज़हाक़ से ही बाँधूंगा जो अगले साल इसी वक़्त-ए-मुईन पर सारा से पैदा होगा। (पैदाइश 17:18 ता 21)

ये नसब नामा इब्राहिम के बेटे इस्माईल का है.....ये इस्माईल के बेटे हैं और उन्ही के नामों से उनकी बस्तीयां और छावनीयां नामज़द हुईं और यही बारह अपने अपने

वसीले से बरकत पाएँगी। तब इब्राहिम मुल्क-ए-कनआन को गया और खुदा ने उस को दिखाई देकर कहा कि यही मुल्क मैं तेरी नस्ल को दूँगा। (पैदाइश 12:1 ता 7)

खुदावंद ने कहा इब्राहिम से, यकीनन एक बड़ी और ज़बरदस्त क़ौम पैदा होगी और ज़मीन की सब क़ौमें उस के वसीले से बरकत पाएँगी। (पैदाइश 18:18) खुदावंद ने फ़रमाया मैं सारा को बरकत दूँगा और उस से भी तुझे एक बेटा बख़्शूँगा। यकीनन मैं उसे बरकत दूँगा कि क़ौमें उस की नस्ल से होंगी। (पैदाइश 17:16)

खुदा ने इब्राहिम से फ़रमाया, अपना अहद सिर्फ़ इज़हाक़ ही से कायम करूँगा। (पैदाइश 17:21)

खुदावंद ने इज़हाक़ पर ज़ाहिर हो कर फ़रमाया, कि तू मिस्र को ना जा बल्कि इसी मुल्क में क्रियाम रख और मैं तेरे साथ रहूँगा और तुझे बरकत बख़्शूँगा, क्योंकि मैं तुझे और तेरी नस्ल को ये सब मुल्क दूँगा और मैं इस क़सम को जो मैंने तेरे बाप इब्राहिम से खाई पूरा करूँगा। और मैं तेरी औलाद को बढ़ा कर आस्मान के तारों की मानिंद कर दूँगा और ज़मीन की सब क़ौमें तेरी नस्ल के वसीले से बरकत पाएँगी। (पैदाइश 26:2 ता 4)

खुदा ने याक़ूब से कहा, मैं खुदावंद तेरे बाप

कबीले के सरदार हुए और इस्माईल की कुल उम्र 137 की हुई तब उसने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और अपने लोगों में जा मिला। और उस की औलाद हविला से शुर तक जो मिस्र के सामने इस रास्ते पर है जिससे असूर को जाते हैं आबाद थी। ये लोग अपने सब भाईयों के सामने बसे हुए थे। (पैदाइश 25:12 ता 18)

इब्राहिम का खुदा और इज़हाक का खुदा हूँ। मैं ये ज़मीन जिस पर तो लेटा है तुझे और तेरी नस्ल को दूँगा और तेरी नस्ल ज़मीन के गर्द के ज़रों की मानिंद होगी और ज़मीन की सब कौमें तेरे और तेरी नस्ल के वसीले से बरकत पाएँगी। (पैदाइश 28:13 ता 14)

वाअदों की तफ़्सील और फ़र्क

मौलवी साहब फ़र्माते हैं कि “क्या ये बात अक़ल में आ सकती है कि खुदावंद तआला दो क़ौमों से बरकत और बरूमंदी का वाअदा करे और फिर एक क़ौम को अपने वाअदे के मुवाफ़िक़ बरकत दे और दूसरी क़ौम को बख़िलाफ़-ए-वाअदा बरकत और बरूमंदी बग़ैर नबी के एक मग़ज़ूब (जिस पर गुस्सा हो) और मक़हूर क़ौम की तरह तर्क कर दे हालाँकि दोनों की बरकत और वाअदा यक़साँ हो।” लेकिन मज़कूर बाला शिजरे से नाज़रीन पर ज़ाहिर हो गया होगा कि हक़ीक़त ये है कि खुदा ने दोनों क़ौमों को अपने वाअदा बरकत व बरूमंदी के मुवाफ़िक़ बाबरकत और बरूमंद किया मगर दोनों क़ौमों के “बरकत और वाअदे यक़साँ” नहीं थे। इज़हाकी वाअदे में इलावा बरकत-ए-बरूमंदी के एक और बरकत भी शामिल थी जिससे इस्माईल महरुम रहा। पस बनी-इस्माईल का बग़ैर नबी रहना हरगिज़ ख़िलाफ़-ए-वाअदा बरकत व बरूमंदी के नहीं है और ना ये लाज़िम आता है कि जिस क़ौम में उस क़ौम का नबी बरपा ना हो वो ख़्वाह-मख़्वाह “मग़ज़ूब और मक़हूर” करार दी जाये।

इज़हाकी वाअदे

नाज़रीन हज़रत इज़हाक और बनी-इज़हाक के वाअदों पर बग़ैर ख़याल फ़रमाएं :-

खुदा ने हज़रत इज़हाक की मानिंद हज़रत इस्माईल से ये वाअदा तो किया कि वो बरकत पाएगा और उस की नस्ल फ़रावाँ होगी मगर सिर्फ़ हज़रत इज़हाक ही से ये वाअदा किया कि ज़मीन की सब कौमें तेरी नस्ल से बरकत पाएँगी। पस उनको दो बरकतें अता हुईं। एक तो ये कि वो खुद मए अपनी नस्ल के साहिब-ए-बरकत हो। दूसरी

ये कि उस की नस्ल तमाम जहान की कौमों के लिए बाइस-ए-बरकत हो कर मर्कज़ बरकत बन जाये। इस वाअदे से हज़रत इस्माईल क़तअन महरूम रहे और यही ख़ास वाअदा नबुव्वत की बरकत का वाअदा है जिसकी बदौलत इस्माईल मख़्सूस हुआ और जिस के बाइस इज़्हाक़ के ख़ानदान में बनी-इस्माईल तमाम जहान में मुम्ताज़ हुआ। (पैदाइश 28:13 ता 14) और तमाम दुनिया को इस इज़्हाकी बरकत से बरकत मिली।

मगर इज़्हाकी बरकत की ख़ास सूरतें हैं। ये बरकत इब्तिदा में हज़रत इब्राहिम को ख़ुदा ने दी और फ़रमाया, “मैंने अपनी ज़ात की क़सम खाई है” कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा और तेरी नस्ल को बढ़ाते-बढ़ाते आस्मान के तारों और समुंद्र के किनारे की रेत की मानिंद कर दूँगा। और तेरी नस्ल के वसीले से दुनिया की सब कौमों बरकत पाएँगी।” (पैदाइश 22:16 ता 18) ख़ुदा ने अपने वाअदे को पूरा किया और नस्ल-ए-इब्राहिम को सारी दुनिया की कौमों की बरकत का बाइस बनाया।

लेकिन हज़रत इब्राहिम की नस्ल में बाअज़ ऐसे भी थे जो इस बरकत के मुस्तहिक़ ना हुए। आपके हाँ हज़रत इस्माईल के इलावा कई बेटे हुए। (पैदाइश 25:1 ता 6) उनमें से सिर्फ़ हज़रत इज़्हाक़ को ख़ुदा ने ये मख़्सूस बरकत-ए-नबुव्वत अता फ़रमाई। चुनान्चे लिखा है कि, “ख़ुदा ने इज़्हाक़ से फ़रमाया मैं इस क़सम को जो मैंने तेरे बाप इब्राहिम से खाई पूरा करूँगा। मैं तेरी औलाद को बड़ा कर आस्मान के तारों की मानिंद कर दूँगा और ज़मीन की सब कौमों तेरी नस्ल के वसीले से बरकत पाएँगी।” (पैदाइश 26:3 ता 4) क्योंकि ख़ुदा ने हज़रत इब्राहिम से फ़रमाया था कि “इज़्हाक़ से ही तेरी नस्ल का नाम चलेगा।” (पैदाइश 21:12)

नाज़रीन ने ये मुलाहिज़ा किया होगा कि हर मुक़ाम में जहां इस वाअदे का ज़िक्र है लफ़ज़ “नस्ल” सीगा वाहिद में इस्तिमाल हुआ है। ये अम्र निहायत माअनी-ख़ेज़ है। इसी वास्ते मुक़द्दस पौलुस रसूल भी इस्तिदलाल करते वक़्त फ़र्माते हैं, “पस इब्राहिम और उस की नस्ल से वाअदे किए गए।” वो ये नहीं कहता कि नस्लों से जैसा बहुतों के वास्ते कहा जाता है, बल्कि जैसा एक के वास्ते कि तेरी नस्ल को।” (ग़लतीयों 3:16) फिर फ़रमाता है कि, “इब्राहिम की पुशत में से होने के सबब से सब फ़र्ज़न्द ठहरे बल्कि ये लिखा है कि इज़्हाक़ ही से तेरी नस्ल कहलाएगी यानी जिस्मानी फ़र्ज़न्द ख़ुदा के फ़र्ज़न्द नहीं बल्कि वाअदे के फ़र्ज़न्द “नस्ल” शुमार किए जाते हैं।” (रोमीयों 9:7)

हज़रत इज़हाक के दो बेटे थे। एक ऐसा कमज़र्फ़ निकला कि उसने अपनी रुहानी बरकत को दुनिया और जिस्म की ख्वाहिशात के एवज़ बेच डाला। इसलिए ख़ुदा ने उस को बरकत से महरूम करके उस के छोटे भाई हज़रत याकूब यानी इस्राईल को ये बरकत अता कर दी। चुनान्चे ख़ुदा ने हज़रत याकूब से कहा, “तेरी नस्ल ज़मीन के गर्द के ज़र्रों की मानिंद होगी और दुनिया की सब क़ौमों तेरे और तेरी नस्ल के वसीले से बरकत पाएँगी।” (पैदाइश 28:14) पस ये मख़्सूस बरकत हज़रत इब्राहिम से होती हुई हज़रत इज़हाक पर और हज़रत इज़हाक से होती हुई हज़रत याकूब और उस की नस्ल पर नाज़िल हुई। इसी वास्ते लिखा है, “वही ख़ुदावंद हमारा ख़ुदा है जिसने अपने अहद को हमेशा याद रखा यानी उस कलाम को जो उसने हज़ारों पुश्तों के लिए फ़रमाया। उसी अहद को जो उसने इब्राहिम से बाँधा और उस क़सम को जो उसने इज़हाक से खाई और उसी को उसने याकूब के लिए अबदी अहद ठहराया।” (ज़बूर 105:7 ता 10 वगैरह) हत्ता कि बमुक़ाबला तमाम अक्वामे आलम के (जिनमें बनी-इस्माईल भी शामिल हैं) बनी-इस्राईल एक मख़्सूस क़ौम हुई और ख़ुदा ने इस क़ौम की बाबत फ़रमाया, “कि तू ख़ुदावंद अपने ख़ुदा के लिए एक पाक क़ौम है। ख़ुदावंद तेरे ख़ुदा ने तुझे रुए-ज़मीन की और सब क़ौमों में से चुन लिया है, ताकि उस की ख़ास उम्मत ठहरे।” (इस्तिस्ना 7:6) और इस क़ौम के ख़ुदा का नाम ही हर ज़माने में ये था। “अब्राहाम का ख़ुदा और इज़हाक का ख़ुदा और याकूब का ख़ुदा।” (ख़ुरूज 3:6, 4:5, 1_सलातीन 18:36, मर्कुस 12:36, आमाल 7:32 वगैरह)

इस बरकत और वाअदे के मुवाफ़िक़ नबुव्वत की बरकत बगैर किसी इम्तियाज़ के इस्राईल की क़ौम के बारहों (12) फ़िक़्रों में आई और कुल अम्बिया इन्ही बारह (12) फ़िक़्रों में से बरकत-ए-इब्राहीमी के मुवाफ़िक़ मबऊस हुए और “ज़मीन की सारी क़ौमों की बरकत का बाइस बने।” हज़रत इस्माईल इस बरकत से महरूम रह गए और उन की औलाद का इस बरकत-ए-उज़्मा से ताल्लुक़ ना रहा। बनी-इस्माईल का इस बरकत में कोई हिस्सा बर्रा नहीं। अगर अब भी बनी-इस्राईल के इलावा बनी-इस्माईल में तौरात शरीफ़ की इब्राहीमी बरकत की बिना पर किसी नबी की तलाश की जाये तो हम बजुज़ इस के और क्या कह सकते हैं कि “सिवाए उस के जो बराह-ए-तास्सुब इस साफ़ और रोशन हक़ीक़त से आँख बंद करले” कौन कह सकता है कि हज़रत मुहम्मद साहब का इब्राहीमी वाअदे और बरकत-ए-उज़्मा से ताल्लुक़ है?

इस्माईल शरअन नस्ल-ए-इब्राहिम नहीं

जो अबदी अहद खुदा ने हज़रत इब्राहिम से बाँधा था वो उनके बाद सिर्फ हज़रत इज़हाक से बाँधा गया। हज़रत इस्माईल इस अहद से कतअन महरूम किए गए। उनको नस्ल की फ़रावानी तो इज़हाक के साथ मिली मगर खुदा ने साफ़ फ़र्मा दिया “लेकिन मैं अपना अहद इज़हाक से ही बाँधूंगा।” मैं इस से और इस के बाद इस की औलाद से अपना अबदी अहद बाँधूंगा।” पस इस्माईल खुदा के अहद से खारिज हुए। इस अहद से खारिज होने की वजह से जैसा मुकद्दस पौलुस फ़रमाता है, हज़रत इस्माईल शरअन इब्राहिम की नस्ल कहलाए जाने से भी खारिज हुए। “यही वजह है कि खुदा ने सिर्फ हज़रत इज़हाक ही को इब्राहिम का इकलौता बेटा कहा।” (पैदाइश 22:16) हकीकत भी यही है कि गो इस्माईल जिस्म के तौर पर हज़रत इब्राहिम से पैदा हुए मगर खुदा ने उनको नस्ल-ए-इब्राहिमी से खारिज फ़रमाया। खुदा की बरकतें मुफ़्त हैं, वो जिसको चाहे दे। **اللّٰهُ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ** बक़ौल शख़से :-

किस्मत किया है हर एक को क़स्साम-ए-अज़ल ने

जो शख़्स कि जिस चीज़ के काबिल नज़र आया

कोई अपने आपको खुदा के इनामात का मुस्तहिक नहीं समझ सकता। इस्माईल अपनी हालत पर क़ाने (क़नाअत करने वाला, जितना मिल जाए उस पर सब्र करना) रहे। उन्होंने ने कभी कोई शिकायत नहीं की। शिकायत करने वाले ज़माना-ए-हाल के मौलवी साहिबान हैं और उन की शिकायत बेजा है।

इलावा मज़कूर बाला दलाईल के, हमारे दाअ्वे की दलील कि हज़रत इस्माईल शरअन इब्राहिम नहीं ये हैं :-

(1) खुदा ने हज़रत इब्राहिम से उस वक़्त वाअ़दा किया था जब कि उस के कोई औलाद ना थी। मुल्क कनआन में तेरी नस्ल को दूँगा। अब देखिए कि मुल्क अकनान किस के तर्के में पड़ा? जो कनआन के वारिस हुए वही इब्राहिम की नस्ल हुई। यही मुल्क में “तेरी नस्ल को दूँगा।” अब ज़ाहिर है कि बनी-इस्माईल कभी कनआन के वारिस ना

हुए (पैदाइश 25 बाब) और जो-जो कौमें उस की वारिस ना हुई ख्वाह वो इब्राहिम के सल्ब से ही क्यों ना हों वो नस्ल इब्राहीमी के नाम से महरूम हैं।

(2) खुदा ने साफ तौर पर फ़र्मा दिया कि, “ऐ इब्राहिम इज़्हाक से तेरी नस्ल का नाम चलेगा।” (पैदाइश 21:12) फिर क्यों उनकी नस्ल किसी और से कहलाए? पस हज़रत इज़्हाक के सिवा इब्राहिम के तमाम दीगर बेटे (मए इस्माईल) खारिज हो गए।

(3) हज़रत इब्राहिम का दर-हकीकत एक ही बेटा था यानी इज़्हाक (पैदाइश 22:16) कलाम-ए-खुदा दूसरों को कनीज़ के ज़ादे (लौंडियों की औलाद) कहता है और हज़रत इस्माईल के हक में बीबी सारा के इस फ़ैसले को कि “इस लौंडी (हाजिरा) का बेटा मेरे बेटे इज़्हाक के साथ वारिस ना होगा।” (पैदाइश 21:10) खुदा तआला खुद मंज़ूर फ़रमाता है। (पैदाइश 21:12)

(4) हज़रत इब्राहिम का तमाम तर्का (विरासत) सिर्फ़ हज़रत इज़्हाक को ही मिला। चुनान्चे लिखा है कि, “अब्राहाम ने अपना सब कुछ इज़्हाक को दिया।” (पैदाइश 25:5) क्यों? अगर इस्माईल भी शरअन इब्राहिम के बेटे थे तो उनको क्यों कुछ ना मिला? हकीकत में बहुकम खुदा हज़रत इब्राहिम के तमाम बेटे इज़्हाक के साथ वारिस ना हुए, बल्कि हज़रत ने “अपने जीते-जी उनको अपने बेटे इज़्हाक के पास से बहुत कुछ इनाम देकर मशरिक़ की तरफ़ भेज दिया।” (पैदाइश 25:6) और इस्माईल को “रोटी और पानी” के एक मशक देकर रुख़सत कर दिया। (पैदाइश 21:14) पस इब्राहिम ने अमली तौर से सिर्फ़ इज़्हाक को ही अपना बेटा गिरदाना और उसी को अकेला बिला-शर्कत-ए-ग़ैर (किसी और को शामिल किये बग़ैर) अपना वारिस बनाया।

(5) खुदा तआला ने हज़रत इस्माईल और दीगर कनीज़क ज़ादों के बावजूद इज़्हाक को इब्राहिम का इकलौता बेटा कहा। (पैदाइश 22:2, 16)

अब यहां से अज़हर-मिन-श्शम्स (रोज़-ए-रौशन की तरह अयाँ) है कि नबुव्वत की बरकत का वाअदा और ईलाही अहद जो हज़रत इब्राहिम से उस की नस्ल की बाबत हुआ था हज़रत इज़्हाक को पहुंचा, और उन के बाद हज़रत याकूब को पहुंचा। हज़रत इस्माईल शुरू ही से नस्ल-ए-इब्राहीमी से और वाअदे की फ़र्रज़िंदगी से और अहद-ए-ईलाही से खारिज हुए। पस बनी-इस्माईल से किसी नबी के इस माअनी में बरपा होने का दाअ्वा

जिस्मानी में कि बनी-इसाईल में बरपा हुए महज़ तरफ़दारी की ज़िद है जिसका इब्ताल (गलत साबित करना) तौरात शरीफ़ खुद करती है।

बाब पंजुम

अदम नबुव्वत-ए-इस्माईल

फ़स्ल अद्वल

अदम-ए-नबुव्वते इस्माईल अज़-रूए तौरात

हमने गुज़श्ता बाब में इज़हाकी और इस्माईली बरकतों पर मुफ़स्सिल बहस करके ये साबित कर दिया है कि तौरात शरीफ़ की रु से नबुव्वत की बरकत-ए-उज़्मा हज़रत इज़हाक़ को और उन के बाद हज़रत याकूब को मिली। हज़रत याकूब के बाद ये नेअमत आले-ए-याकूब यानी बनी-इसाईल के मुख्तलिफ़ अफ़राद को अता हुई। लेकिन हज़रत इस्माईल और आल-ए-इस्माईल के तमाम अफ़राद नबुव्वत की बरकत से खारिज हुए। पस अज़-रूए तौरात ना तो इस्माईल नबी थे और ना आपकी औलाद बनी-इस्माईल से किसी नबी ने बरपा होना था।

मौलवी साहब की दलीलें और उन के जवाब

लेकिन मौलवी साहब ने खुदा के रोशन वादों को ना समझने के बाइस ना सिर्फ़ ये फ़र्ज़ कर लिया कि बनी-इस्माईल में नबी मौऊद होने वाला था बल्कि ये भी फ़र्ज़ कर लिया कि इस्माईल भी इब्राहिम इज़हाक़ और याकूब की मानिंद नबी थे। और हैरत-अंगेज़ अम्र ये है कि आपने अपने मफ़रूज़ा को तौरात शरीफ़ से साबित करना चाहते हैं। चुनान्चे आपने अपने रिसाले के आखिर में बउनवान “इस्बात-ए-नबुव्वत-ए-हज़रत इस्माईल” (सफ़ा 47 ता 48) फ़र्माते हैं :-

“ईसाई कहते हैं कि, हज़रत इस्माईल की नबुव्वत तौरैत मुक़द्दस से साबित नहीं होती मुसलमान कहते हैं कि हज़रत इस्माईल की नबुव्वत तौरैत मुक़द्दस से ऐसी साबित होती है जैसे कि हज़रत इब्राहिम हज़रत इज़्हाक़ और हज़रत याक़ूब की।” चुनान्चे उनकी नबुव्वत के दलाईल ये हैं :-

पहली दलील : ये है कि किताब पैदाइश से ज़ाहिर होता है कि, “ख़ुदा इब्राहिम के साथ था।” उसी किताब से ज़ाहिर है कि “ख़ुदा इज़्हाक़ के साथ था।” “और कि “ख़ुदा याक़ूब के साथ था।” इसी तरह इस्माईल के हक़ में लिखा है कि “ख़ुदा उस के साथ था।” (पैदाइश 21:20)

अच्छा साहब, अगर आपकी दलील के मुवाफ़िक़ ख़ुदा का किसी के साथ होना (और ख़ुदा किस के साथ नहीं?) इस को नबी बना देता है तो हम और नबियों का भी पता आपको बता देते हैं “ख़ुदावंद ख़ुदा साथ है” इस्राईल में तमाम जंगी मर्दों के।” (इस्तिस्ना 20:1, 31:6, 2_तवारीख 13:14, 32:8 वगैरह)

“ख़ुदावंद तमाम क़ौम इस्राईल के साथ है।” (गिनती 14:9, इस्तिस्ना 20:4 वगैरह) “ख़ुदावंद साथ है” आसा बादशाह के और बनी यहूदाह के तीन लाख आदमीयों के और बिनियामीन के दो लाख अस्सी हज़ार आदमीयों के। (2 तवारीख 15:2, 14:8) अब अगर हमारे मुखातब चाहें तो उन लाखों जंगी मर्दों, सूरमाओं और कुल क़ौम बनी-इस्राईल को नबी मान लें। लेकिन हकीक़त यही है कि वो नबी ना थे।

इब्रानी मुहावरे के मुताबिक़ ख़ुदा का किसी के साथ होने से मुराद ख़ुदा की मदद और याद आवरी (मिज़ाजपुर्सी करना) का उस के शामिल-ए-हाल होना है। इस से किसी शख़्स का ओहदा नबुव्वत पर सर्फ़राज़ किया जाना मुराद नहीं हो सकता। हमें अफ़सोस है कि मौलवी साहब ने जिस आयत को हज़रत इस्माईल की फ़ज़ीलत में पेश किया है इस को आपने पूरा नहीं पढ़ा और ना इस पर ग़ौर किया है। इस आयत में है “ख़ुदा उस लड़के इस्माईल के साथ था और वो बड़ा हुआ और ब्याबान में रहने लगा और तीर-अंदाज़ बना।” (पैदाइश 21:20) हमारे मुखातब को याद होगा कि ख़ुदा ने हज़रत इस्माईल से ये वाअदा फ़रमाया था कि, “वो गोरखर की मानिंद आज़ाद मर्द होगा। उस का हाथ सब के खिलाफ़ और सब के हाथ उस के खिलाफ़ होंगे।” (पैदाइश 16:12) किताब-ए-मुक़द्दस में

गोरखर की ये सिफ़ात मज़कूर हैं, “गोरखर को किस ने आज़ाद किया? जंगली गधे के बंद किस ने खोले। खुदा ने ब्याबान को इस का मकान बनाया। और ज़मीन-ए-शूर को इस का मस्कन। वो शहर के शोर व गुल को हीच समझता है और हाँकने वाले की डाँट को नहीं सुनता।” (अय्यूब 39:5 ता 7) यही हाल हज़रत इस्माईल का था, उनके गिर्द व पेश के हालात के मुताबिक़ खुदा ने अपना वाअदा पूरा फ़रमाया। हज़रत बड़े हुए, बड़े और ब्याबान में जा रहे और तीर-अंदाज़ हो गए। तीर-अंदाज़ी आपके काम आई क्योंकि हज़रत के हाथ सब के खिलाफ़ और हज़रत के खिलाफ़ सब के हाथ हो गए। उस ज़माने के हालात के लिहाज़ से ब्याबान में रहने वालों की अज़मत व जलाल तीर-अंदाज़ी पर ही मुन्हसिर था। आप ये कहे कि खुदा इस्माईल के साथ था और वो तीर-अंदाज़ य में माहिर हो गया ना ये कि खुदा इस्माईल के साथ था और ना वो नबी हो गया।

दूसरी दलील : मौलवी साहब की दूसरी दलील और भी मज़हकाखेज़ है। आप लिखते हैं, “इब्राहिम जांबहक़ हुआ और अपने लोगों से जा मिला। इज़हाक़ अपने लोगों से जा मिला। याक़ूब जांबहक़ हुआ और अपने लोगों से जा मिला। इसी हज़रत इस्माईल के हक़ में लिखा है कि इस्माईल ने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और अपने लोगों में जा मिला।” (पैदाइश 25:17)

मौलवी साहब ग़ज़ब करते हैं जो जुम्ला “अपने लोगों में जा मिला” से किसी शख्स की नबुव्वत का खयाल अखज़ करते हैं इब्रानी मुहावरे के मुताबिक़ ये जुम्ला वही ज़ोर रखता है जैसा हमारे मुहावरे में जन्नत नसीब होना या “गरीक़ मग़फ़िरत होना।” इस इब्रानी मुहावरे की बुनियाद ये है कि हर मरने वाला वहीं जाता है जहां उस के आबाओ-अज्दाद (बाप-दादा) गए हैं। अगर मौलवी साहब की दलील को मान लिया जाये और ये दुरुस्त व सहीह हो कर मरने के बाद “अपने लोगों में मिल जाने से” इस्माईल नबी हो गए तो आपके मुताबिक़ दाअवा-ए-नुबूव्वत की अस्तियत ये हुई कि हज़रत इस्माईल जीते-जी नबी ना हुए, (और हम भी इस से ज़्यादा और कुछ नहीं कहते !)

मगर मौत के बाद वो नबी हो गए ! पर अगर कोई शख्स मरने के बाद किसी नबी से जा मिले तो वो नबी नहीं हो जाता। नाज़रीन पर ज़ाहिर हो गया होगा कि ईसाईयों का दाअवा कि इस्माईल की नबुव्वत तौरात शरीफ़ से साबित नहीं होती किस पाये का है और मुसलमानों का उनके दाअवे से इन्कार करना किस किसम के मज़हकाखेज़ दलाईल पर मबनी है।

अगर हज़रत इब्राहिम, इज़्हाक़ और याक़ूब नबी थे तो ना इसलिए कि ख़ुदा उनके साथ था या वो बाद मुर्दन (मौत के) अपने बाप दादा से जा मिले क्योंकि ये उमूर खसाइस नबुव्वत से नहीं हैं। उनकी नबुव्वत के वजूह (वजह की जमा, अस्बाब) हस्ब-ज़ैल हैं। और वाज़ेह रहे कि बजिन्सा इन्ही वजह के बाइस हज़रत इस्माईल नबी ना थे। गोहम बाब चहारूम में इस के इब्ताल (गलत साबित करने में) नबुव्वत के दलाईल बयान कर चुके हैं।

हज़रत इब्राहिम नबी इसलिए थे कि ख़ुदा उनसे हम-कलाम हुआ। (पैदाइश 12:1 वगैरह) और ख़ुदा का कलाम उन पर नाज़िल हुआ। (पैदाइश 15:1) ख़ुदा ने उनके साथ अपना खास अहद बाँधा। (पैदाइश 17:7) और वो ख़ुदा के दोस्त खलील-उल्लाह थे। (याक़ूब का खत 2:23) हज़रत इज़्हाक़ इसलिए नबी थे कि ख़ुदा उन पर ज़ाहिर हुआ। उनसे हम-कलाम हुआ और उनसे अहद कायम किया। (पैदाइश 26:2 ता 5 वगैरह) हज़रत याक़ूब भी इसलिए नबी थे क्योंकि ख़ुदा उन पर भी ज़ाहिर हुआ। (पैदाइश 28, 32 बाब) अब ये खास बरकतें हज़रत इस्माईल को नसीब ना हुईं। वो ख़ुदा तआला के दीदार से मुशरफ़ ना हुए। उनको ख़ुदा के साथ हम-कलाम होना नसीब ना हुआ और ख़ुदा ने इब्राहीमी अहद को उनके साथ ना बाँधा। इस्माईल इन सब बातों से महरूम रह गए। हक़ तो ये हैकि उनको ब्याबानी ज़िंदगी और तीर-अंदाज़ी और दुश्मनों से जंग करने ने फ़रागत ही ना दी कि वो इन बातों की तरफ़ ध्यान करते। वहम नबुव्वत उनको ख़ाब में भी कभी सताने ना पाया था।

तीसरी दलील : मौलवी साहब ने तौरात की एक और आयत को ज़मनन इस सनद में पेश किया है कि बनी-इस्माईल में इनाम-ए-नबुव्वत आने वाला था। चुनान्चे आप फ़र्माते हैं, “इस्तिस्ना के 32 बाब की 21 आयत से ज़ाहिर है कि जब बनी-इस्माईल ने ख़ुदा के हुक़म की ना-फ़र्मानी की तो उस वक़्त ख़ुदा ने ग़ज़बनाक हो कर क़ौम इस्माईल से फ़रमाया, मैं उनके ज़रीये से जो कोई उम्मत नहीं उनको ग़ैरत दिलाऊँगा और एक नादान क़ौम के ज़रीये से उनको गुस्सा दिलाऊँगा।” अगर नज़र-ए-इन्साफ़ और ग़ौर से देखा जाये तो साफ़ मालूम होता है कि “नादान क़ौम” की मुखातब ठीक बनी-इस्माईल की क़ौम है।

हम हैरत में हैं कि हमारे मुखातब क्या साबित करना चाहते हैं? क्या बनी-इस्माईल को नादान साबित करके वो खुदा के हाथ से उनको नबुव्वत दिलाएंगे। क्या वो भूल गए हैं कि अगर नादानी किसी क़ौम को मुस्तहिक नबुव्वत कर दे तो बनी-इस्माईल से कहीं बढ़-चढ़ कर इस अम्र में बाअज़ और क़ौमों को फ़ज़ीलत हासिल थी? और क्या ज़माना-ए-हाल में “नादान” अक्वाम (क़ौमों) की बेखकुनी हो गई है। या क्या मौलवी साहब समझते हैं कि जिस क़ौम से इस्राईल खफा हो जाए उस को नबुव्वत मिल जाया करती है ! अहले-यहूद की तारीख बतलाती है कि क़ौम इस्राईल बाअज़ और क़ौमों से बनी-इस्माईल से कहीं ज़्यादा खफा हो चुकी है। क्या मौलवी साहब उन सबको ओहदा नबुव्वत दिलाएंगे “नादान क़ौम” होना और इस्राईल को “गुस्सा दिलाना” दावा-ए-नुबूव्वत के लिए बहुत ही नादानी की दस्तावेज़ हो सकता है। हमारे मुखातब को इस क़द्र नादान तो ना बनना चाहिए।

मौलवी साहब अपनी दलील देकर कहते हैं “इनके हक़ में तौरत मुक़द्दस में वाअदा बरकत और बरूमंदी का है।” हम इस मन्तिक को मुतलक़ नहीं समझे कि वाअदा बरकत व बरूमंदी के लिए नादान क़ौम हो जाना क्यों कर लाज़िम व लज़ूम है। हम ऊपर बतला चुके हैं कि वाअदा बरकत व बरूमंदी में कोई वाअदा नबुव्वत शामिल नहीं है।

आप कहते हैं, “ये क़ौम एक अर्से-दराज़ तक बग़ैर किताब और बग़ैर नबी के रही लेकिन ये क़ौम खुदा की मौऊदा (वाअदा की हुई) क़ौम थी इस वास्ते इस क़ौम को “नादान” क़ौम कहा गया।” हम ऊपर बतला चुके हैं कि किस मअनी में ये क़ौम “खुदा की मौऊदा क़ौम” थी और कि इस्राईली वाअदे में कोई वाअदा-ए-नबुव्वत ना था। हाँ ये बात दुरुस्त है कि “बग़ैर किताब और बग़ैर नबी” रहने की वजह से इस क़ौम को नादानी का हक़ हासिल है। इसी लिए कुरआन ने भी इनको उम्मी (अनपढ़) कहा है, लेकिन ये हक़ ग़ैर-मुशतर्का नहीं है, क्योंकि ना सिर्फ़ बनी-इस्माईल बल्कि तमाम ग़ैर-इस्राईली अक्वाम आलम बग़ैर किताब और बग़ैर नबी के रहीं। हकीकत यूँ है कि नादान क़ौम से मुराद ऐसी ही क़ौम है जो बग़ैर किताब और बग़ैर नबी हो। सहफ़-ए-समावी (आस्मानी सहिफ़ो) की इस्तिलाह में तमाम ग़ैर-यहूद अक्वाम नादान हैं। ख्वाह वो दुनिया की नज़रों में अक्लमंद हों। क्योंकि वो बग़ैर किताब और बग़ैर नबी यानी हकीकी इरफान-ए-ईलाही के बग़ैर हैं। बनी-इस्माईल भी दीगर यहूदी अक्वाम के साथ नादान अक्वाम (क़ौमों) में शामिल हैं। नादान होना सिर्फ़ बनी-इस्माईल की खुसूसीयत ही नहीं।

नाज़रीन ज़रा गौर फ़रमाएं, मौलवी साहब बाब सोम की फ़स्ल अद्वल में तो ये साबित करना चाहते थे कि लफ़ज़ “भाइयों” से मुराद बनी-इस्माईल हैं लेकिन यहां आप बनी-इस्माईल को “नादान क्रौम” यानी ग़ैर-क्रौम तस्लीम कर रहे हैं।

अगर बनी-इस्माईल आप के माअनों में बनी-इस्माईल के भाइयों में से हैं। तो वो ग़ैर-क्रौम कैसे ठहरे? मौलवी साहब ने अपने क़ज़ीया को साबित करने के लिए ये खयाल नहीं किया कि इजतिमा-अल-ज़िददीन (اشياع الضدين) अज़रूए मन्तिक़ मुहाल है।

(2)

सही उसूल तफ़सीर की रु से इस आयत में मसीहीय्यत की तरफ़ इशारा है जिसने तअस्सुबात यहूद के खिलाफ़ यहूद और ग़ैर-यहूद को मुसावी (बराबर) कर दिया और ग़ैर-यहूद को जो बावजाह “बग़ैर किताब” और “बग़ैर नबी” होने के “नादान” अक्वाम थीं बनी-इस्माईल की ग़ैरत, ख़फ़गी और गुस्से का बाइस हुए। चुनान्चे इस अम्र को हज़रत कलिमतुल्लाह (ﷺ) ने अंगूरिस्तान और ज़ियाफ़त की तम्सीलों (मती 21:33 ता 46, 23:1 ता 11, लूका 14:12 ता 24) में बयान फ़रमाया है। आपने बनी-इस्माईल को एलानिया आगाह करके फ़र्मा दिया “ख़ुदा की बादशाही तुमसे ले ली जाएगी और उस क्रौम को जो उस के फल लाए दे दी जाएगी।” (मती 21:43, नीज़ देखो मती 3:8 ता 10, यसअयाह 5:1 ता 7 वग़ैरह) मुक़द्दस पौलुस रसूल ने भी इसी आयत की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, “ज़रूर था कि ख़ुदा का कलाम पहले तुम (बनी-इस्माईल) को सुनाया जाये लेकिन चूँकि तुम इस को रद्द करते हो और अपने आप को हमेशा की ज़िंदगी के लिए नाकाबिल ठहराते हो तो देखो, हम ग़ैर क्रौमों की तरफ़ मुतवज्जोह करते हैं।” (आमाल 13:46) इसी मुक़ाम में लिखा है कि “यहूदी डाह (हसद, दुश्मनी) से भर गए।” (आयत 45) पस यही अम्र यानी ग़ैर-यहूद का ख़ुदा की बादशाही में दाख़िल होने का तसव्वुर यहूदीयों की ख़फ़गी और गुस्से का बाइस हुआ। मौलवी साहब आयत (मती 21:43) का इक़तिबास करके कहते हैं कि, मसीह ने सिर्फ़ बनी-इस्माईल की जानिब इशारा किया है हालाँकि आँख़ुदावंद ने रुए-ज़मीन की तमाम अक्वाम (क्रौमों) को जो दुनिया के चारों गोशों में बस्ती हैं, लफ़ज़ “क्रौम” में शामिल करके उनको यहूदीयों के मुक़ाबिल पेश किया है। चुनान्चे आपने फ़रमाया पूरब और पच्छिम, उतर और दक्षिण से लोग आकर अब्राहाम और इज़हाक़ और याक़ूब के साथ आस्मान की बादशाही की ज़ियाफ़त में शरीक होंगे

मगर तुम अपने आपको बाहर निकला हुआ देखोगे वहां रोना और दाँत पीसना होगा।” (मत्ती 8:11 ता 12, लूका 13:28 देखो इफिसियों 3:6 वगैरह) यही गैर-अक्वाम (गैर-क्रौम) वो लोग हैं जो “फल लाए।” और मुनज्जी आलमीन (मसीह) पर ईमान लाकर खुदा की बादशाही के वारिस हुए।

लेकिन मौलवी साहब इस सही तफ्सीर को जो कलाम-उल्लाह पर मबनी है कुबूल नहीं करते और लिखते हैं “ईसाई साहिबान इस आयत को यूनानियों और गैर-क्रौमों पर जिन्होंने ने ईसाई मज्हब कुबूल किया है जमाते हैं।” मगर ये आयत इन मज्कूर क्रौमों के हक में हरगिज़ नहीं हो सकती। इस बारे में हम दो दलीलें कायम करते हैं। अक्वल ये कि इन क्रौमों के साथ बरकत और बरूमंदी का वाअदा नहीं किया गया, “तो फिर उस से क्या? क्या ज़रूर है कि हर बरकत व बरूमंदी सिर्फ वाअदे के साथ ही हो? क्या खुदा वाअदा किए बगैर बरकत व बरूमंदी अता नहीं करता? क्या हर क्रौम के साथ जो बरूमंद हुई “वाअदा बरूमंदी” कहीं लिखा है? और तवारीख इस अम्र पर शाहिद है कि गैर-अक्वाम जिस्मानी और दुनियावी बरकत व बरूमंदी से महरूम नहीं रहीं। लेकिन यहां तो कोई अम्र वाअदा, बरकत व बरूमंदी पर मुन्हसिर नहीं है। यहां तो किसी और किस्म का वाअदा मक्सूद है। गैर-अक्वाम का सय्यदना मसीह पर ईमान लाकर एक होने का वाअदा तो खुदा की तरफ से पहले हो चुका था और उन गैर-अक्वाम में बनी-इस्माईल भी शामिल हैं। जो सब के साथ ईमानदार हो कर इब्राहिम के फ़र्ज़न्द हो सकते हैं। चुनान्चे मुक़द्दस पौलुस फ़रमाता है, “ये जान लो कि जो ईमान वाले हैं वही अब्राहाम के फ़र्ज़न्द हैं और किताब मुक़द्दस ने पेशतर से ये जान कर कि खुदा गैर-क्रौमों को ईमान से रास्तबाज़ ठहराएगा पहले ही से अब्राहाम को ये खुशखबरी सुना दी कि तेरे बाइस सब क्रौमों बरकत पाएँगी। पस जो ईमान वाले हैं वो ईमानदार अब्राहाम के साथ बरकत पाते हैं।” (ग़लतीयों 3:7 ता 8, नीज़ देखो लूका 19:9 ता 10, रोमीयों 3:29 ता 30 वगैरह) पस तमाम गैर-यहूद का रूजू लाना वाअदा इब्राहीमी के ऐन मुवाफ़िक़ है।

मौलवी साहब की दूसरी दलील ये है कि :-

“इन यूनानियों और गैर-क्रौमों को किसी दाना और अक्लमंद शख्स ने आज तक “नादान क्रौम” नहीं कहा, बल्कि इस

यूनानी क्रौम को इन्जील मुकद्दस में एक दाना और हिक्मत वाली क्रौम कहा गया है।” (सफ़ा 7)

लेकिन मौलवी साहब अभी चंद सतरें ऊपर “नादान क्रौम” की तारीफ़ खुद ही कर चुके हैं यानी वो क्रौम जो “बगैर किताब” और “बगैर नबी” के हो और यूनानियों और गैर-क्रौमों के “बगैर किताब” और “बगैर नबी” होने के मौलवी साहब भी मुन्किर नहीं हो सकते। पस आप जैसे दाना और अक्लमंद ने यूनानियों को खुद “नादान क्रौम” तस्लीम कर लिया। ये दुरुस्त है कि इल्म व फ़ल्सफ़े में यूनानियों (ना कि तमाम गैर-अक्वाम) “एक दाना और हिक्मत वाली क्रौम” थी लेकिन वो बावजूद अपने इल्म व फ़ल्सफ़े के “बगैर किताब” और “बगैर नबी” होने की वजह से “नादान क्रौम” थी और सही इफ़ान ईलाही से महरूम थी। चुनान्चे मुकद्दस पौलुस रसूल फ़र्माते हैं उन्होंने अगरचे खुदा को जाना मगर इफ़ान-ए-इलाही के ना होने की वजह से उन्होंने उस की खुदाई के लायक उस की तम्जीद और शुक्रगुज़ारी ना की, बल्कि बातिल खयालात में पड़ गए और उन के बे समझ दिलों पर अंधेरा छा गया।” (रोमीयों 1:21)

पस हमारे मुखातब की दोनों दलीलें ग़लत हैं और जो तफ़सीर हमने मौलवी साहब की पेश कर्दा आयत (इस्तिस्ना 32:21) की बतलाई है वही सही है और किताब मुकद्दस के मुताबिक़ है। चुनान्चे मुकद्दस पौलुस फ़रमाता है, “यहूदीयों और यूनानियों में कुछ फ़र्क़ ना रहा इसलिए कि वही सब का खुदावंद है और उन सब के वास्ते जो उस का नाम लेते हैं फ़य्याज़ है।” मूसा कहता है कि “मैं उनसे तुमको गैरत दिलाऊँगा जो क्रौम ही नहीं। एक नादान क्रौम से तुमको गुस्सा दिलाऊँगा।” यसअयाह भी कहता है, “जिन्होंने मुझे नहीं ढूँडा उन्होंने मुझे पा लिया। जिन्होंने मुझे नहीं पूछा उन पर मैं ज़ाहिर हो गया। लेकिन इस्राईल के हक़ में वो कहता है कि, मैं दिन-भर एक नाफ़र्मान और हुज्जती उम्मत की तरफ़ अपने हाथ बढ़ाए रहा।” (रोमीयों 10 बाब) ये आयत सय्यदना मसीह की ज़ियाफ़त वाली तम्सील की इल्हामी तफ़सीर हैं। पौलुस रसूल बताकिद फ़र्माते हैं कि, मौलवी साहब की पेश कर्दा आयत में गैर-क्रौमों के यहूदीयों के साथ मुसावी हुकूक़ में दाख़िल होने की ख़बर है और यह बात यहूदीयों की गैरत, ख़फ़गी और गुस्से का बाइस बनी (आमाल 21 बाब वगैरह) मुकद्दस पौलुस खुद खुल्लम खुल्ला फ़र्माते हैं, “मैं गैर-क्रौमों का रसूल हो कर तुम गैर-क्रौम वालों से बोलता हूँ, ताकि मैं किसी तरह अपने क्रौम वालों को गैरत दिलाऊँ।” (रोमीयों 11:13 ता 14)

फ़स्ल दोम

अदम नबुव्वत-ए-इस्माईल अज़-रूए कुरआन

इंसाफ़ पसंद नाज़रीन पर गुज़श्ता फसलों के मुतालए से ज़ाहिर हो गया होगा कि तौरात मुक़द्दस की रु से नबुव्वत हज़रत इब्राहिम को और उनके बाद उनकी औलाद में से सिर्फ़ हज़रत इज़्हाक़ को अता की गई। हज़रत इज़्हाक़ की औलाद में से सिर्फ़ हज़रत याक़ूब को इस बरकत से सर्फ़राज़ फ़रमाया गया। खुदा ने हज़रत इब्राहिम से वाअदा किया था कि तेरी नस्ल से दुनिया की तमाम कौमें बरकत पाएँगी यही वाअदा हज़रत इज़्हाक़ से उनके बाद हज़रत याक़ूब से किया गया। चुनान्चे खुदा ने हज़रत इब्राहिम की मौत के बाद हज़रत इस्माईल को इस वाअदे से खारिज करके हज़रत इज़्हाक़ से कहा “ज़मीन की सब कौमें तेरी नस्ल के वसीले से बरकत पाएँगी”। (पैदाइश 26:4) और फिर हज़रत इज़्हाक़ के पहलौठे बेटे हज़रत ऐसो को इस वाअदे से खारिज करके हज़रत याक़ूब से फ़रमाया गया, “ज़मीन के तमाम घराने तेरे और तेरी नस्ल के वसीले से बरकत पाएँगे।” (पैदाइश 28:14) यूँ हज़रत इस्माईल और उन के बाद हज़रत ऐसो नबुव्वत की बरकत-ए-उज़्मा से खारिज हुए।

कुरआनी आयात

कुरआन मजीद बार-बार इस अम्र का ईलाज करता है कि वो तौरात शरीफ़ का मुसद्दिक़ है और जब हम कुरआन का ग़ोर व तदब्बुर के साथ मुतालआ करते हैं तो हम पर ये बात रोशन हो जाती है कि नबुव्वत-ए-इज़्हाक़ व इस्माईल के बारे में वो बईना वही बात कहता है कि जो तौरात कहती है। कुरआन अदम नबुव्वत-ए-इस्माईल की ताईद और तस्दीक़ करता है। चुनान्चे चंद आयात मुलाहिज़ा हों :-

(1) हम (खुदा) ने इस औरत (बीबी) सारा को इस्हाक की बशारत दी और इस्हाक के बाद याकूब की (हूद रूकू 7 आयत 74)

(2) हमने इब्राहिम को इस्हाक और याकूब बखशा और हमने सबको हिदायत दी। (सूरह अनआम ए 10 आयत 84)

(3) (ऐ) मुहम्मद हमारे बंदों इब्राहिम और इस्हाक और याकूब को याद करो जो हाथों और आँखों वाले (यानी साहिबे आमाल व मारूफ थे। और हम ने उनको एक खास बात के लिए यानी ज़िक्र-ए-आखिरत के लिए चुना। और बेशिकवा (सब) हमारे हाँ बर्गुज़ीदा नेक बंदों में हैं। और इस्माईल और अल-यसीअ और ज़वाकिफल को भी याद करो और (इनमें से) हर एक ख़ूबी वाला था। (सूरह साद रूकू 4, आयत 45 ता 48)

(4) जब वो (इब्राहिम) उनसे और अल्लाह के सिवाए उनके माबूदों से जिनको वो पुकारते थे अलग हो गया तो हम ने उस को इस्हाक और याकूब बखशा और हर एक को हमने नबी बनाया और उन तीनों (इब्राहिम, इस्हाक और याकूब) को हमने अपनी रहमत से (सब कुछ) दिया और हमने उनके लिए आला दर्जे का ज़िक्र-ए-खैर (बाकी) रखा। (सूरह मर्यम 3 आयत 49)

(5) हमने इब्राहिम को इस्हाक बखशा और याकूब इनाम में दिया। और सबको नेक-बख्त किया और हमने उनको (क़ौम का) पेशवा और इमाम बनाया कि हमारे हुकम से हिदायत करते थे। (सूरह अम्बिया रूकू 5 आयत 72 ता 73)

(6) “और हम ने उस (इब्राहिम) को इस्हाक और याकूब बखशा और उन की नस्ल में नबुव्वत और (नुज़ूल किताब) को (जारी) रखा और हम ने इस का अज़्र उसे दुनिया में दे दिया और आखिरत में वो नेकों में है।” (सूरह अन्कबूत रूकूअ 3, आयत 27)

(7) ऐ बनी-इस्राईल, मेरा वो एहसान याद करो जो मैंने तुम पर किया है और इस बात को भी (याद रखो) कि मैंने तुमको दुनिया जहान के लोगों पर फ़ौकियत बखशी। (सूरह बकरा 6, आयत 47)

(8) अलबत्ता हमने बनी-इसाईल को किताब और हुकूमत और नबुव्वत इनायत फ़रमाई और तमाम जहान पर उनको फ़ज़ीलत और फ़ौक़ियत बख़्शी। (सूरह जासिया रूकूअ 2 आयत 16)

आयात-ए-कुरआनी पर तब्सिरा

जब हम इन आयात-ए-कुरआनी का बग़ौर तदब्बुर मुतालआ करते हैं तो हम पर ज़ाहिर हो जाता है कि :-

पहली आयत में हज़रत इब्राहिम की बीबी बीबी सारा को हज़रत इस्हाक़ की बशारत दी जाती है और हज़रत इस्हाक़ के बाद याक़ूब की बशारत दी गई है। तमाम कुरआन में किसी एक मुक़ाम में भी हज़रत इस्माईल की पैदाइश की बशारत का ज़िक्र मौजूद नहीं है। और ना किसी जगह हज़रत याक़ूब के बड़े भाई ऐसो का ज़िक्र है। पस कुरआन के मुताबिक़ दोनों इब्राहीमी वाअदे से ख़ारिज हुए। हज़रत इब्राहिम को इस्हाक़ की और इस्हाक़ के बाद याक़ूब की बशारत दी गई है और ये ऐन तौरात शरीफ़ के मुताबिक़ है।

दूसरी आयत में भी यही मज़कूर है कि “हज़रत इब्राहिम को इस्हाक़ और याक़ूब बख़शा गया और इन तीनों को ख़ुदा की तरफ़ से “हिदायत” दी गई।” इस आयत में भी इब्राहिम के साथ इस्माईल का ज़िक्र नहीं किया गया। जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि इस्माईल ख़ुदा की बख़िश में शामिल नहीं थे। वर्ना आयत के अल्फ़ाज़ यूं होते “हमने इब्राहिम को इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब बख़शा।” पस इस आयत के मुताबिक़ भी हज़रत इस्माईल वाअदा नबुव्वत की बख़िश से ख़ारिज (बाहर) हैं।

तीसरी आयत में भी ऊपर की दो आयात की मानिंद इब्राहिम के बाद इस्माईल का नाम नहीं आता, बल्कि इस्हाक़ और याक़ूब का नाम आता है। और उन के नामों के साथ उनके तीन औसाफ़ का ज़िक्र किया जाता है।

अव्वल, कि वो साहिबे अमलव मआरुफ़ थे।

दोम, कि वो ख़ुदा के चुने हुए बंदों में से थे।

सोम, कि खुदा ने उनको किसी खास मक़सद की खातिर चुना था। जिसकी वजह से बक़ौल इमाम राज़ी :-

“उन्होंने ने दार-ए-आखिरत में अपने लिए एक बुलंद और जलील (बुलंद) ज़िक्र हासिल किया।”

अगर हज़रत इस्माईल को भी यही मर्तबा हासिल होता तो वाजिब था कि उनका ज़िक्र भी हज़रत इब्राहिम के बाद और इस्हाक़ से पहले या कम अज़ कम इस्हाक़ के साथ किया जाता। लेकिन आयत से उन का नाम ऐसा ख़ारिज (बाहर) किया गया है कि वो हज़रत इब्राहिम के कुन्बे में ही ना थे। और ये तौरात की आयत के मुताबिक़ है कि “इब्राहिम की नस्ल इज़हाक़ से कहलाएगी।” (पैदाइश 21:12, 22:2)

इलावा अज़ीं ये अम्र हैरत का मूजिब है कि खुदा उस आयत में आँहज़रत को ये हुक्म तो देता है कि वो इब्राहिम और इस्हाक़ और याक़ूब का ज़िक्र करें और उन के इल्म व अमल की फ़ज़ीलत का बयान करें। लेकिन उन को अपने जददे-अमजद (बाप दादा) इस्माईल का ज़िक्र करने का हुक्म नहीं देता। ये भी मुक़ाम-ए-ताज्जुब है कि हज़रत इस्माईल का ज़िक्र इन खास अशखास में नहीं आता जो साहिब-ए-इल्म व अमल खुदा के बर्गुज़ीदा नेक बंदे थे और जिन को खास मक़सद के मातहत मश्वरत ईलाही ने चुना था।

इस कुरआनी आयत में एक और अम्र काबिल-ए-गौर है। इस में किसी हज़रत इस्माईल का ज़िक्र किया गया है लेकिन उनका नाम आयत के आखिर में इब्राहिम इस्हाक़ और याक़ूब से बिल्कुल अलग किया गया है। और अल-यसीअ और जुवकिफल जैसे मुक़ाबला गुमनाम और छोटे नबियों के साथ आया है, जो हज़रत इब्राहिम, इस्हाक़, और याक़ूब के सदीयों बाद पैदा हुए और जिन को मुवाफ़िक़ कुरआनी आयत और हमने बाअज़ रसूलों को बाअज़ पर फ़ज़ीलत दी (बकरह रूकूअ 33) फ़क़त ख़ूबी वालों में शुमार किया गया है। इन वजूह की बिना पर बाअज़ मुफ़स्सरीन कुरआन ये खयाल करते हैं कि यहां और ऊपर की दो आयत में जिस इस्माईल का ज़िक्र आया है वो इब्राहिम और हाजिरा के बेटे नहीं थे बल्कि कोई ग़ैर-मशहूर नबी थे जिन का नाम ज़वाकिफल जैसे ग़ैर मानूस नाम के साथ इकट्ठा किया गया है। इन मुफ़स्सरीन के मुताबिक़ इस मुक़ाम में इस्माईल बिन इब्राहिम का ज़िक्र बेमहल है क्योंकि हज़रत अल-यसीअ, हज़रत इब्राहिम के करीबन सात (7) सदीयां बाद ज़ाहिर हुए। पस कुरआन ने इन इस्माईल को क़ौम

आखरीन के साथ शामिल किया है। जो इब्राहिम से सदीयों बाद दुनिया के किसी गुमनाम गोशा में खुदा के मुर्सल हो कर आए थे और “खूबीयों वाले” आदमी थे। लेकिन वो कोई बड़े नबी ना थे क्योंकि वो इब्राहिम और इस्हाक और याकूब की मानिंद ना तो साहिबे मआरुफ़ रहानी थे और ना साहब-ए-कुव्वत थे।

मुफ़स्सिरीन-ए-कुरआन की इस तफ़्सीर में ये खूबी है कि वो कुरआन को तौरात के मुताबिक़ बना देती है और कुरआन का दावा कि मुसद्दिक़ तौरात है, बहाल रहता है। मज़ीद बरआँ इस आयत से ये नतीजा भी मुस्तंबित होता है कि अगर इस्हाक व याकूब का इकट्ठा ज़िक्र करने से उनका ज़िक्र करना मक़सूद था जो इब्राहिम की नस्ल से होने वाले थे, तो ज़ाहिर है कि हज़रत इस्माईल का उनके साथ इकट्ठा ज़िक्र ना करने से ये साबित होता है कि उनकी नस्ल से कोई नबी आने वाला नहीं था और ये ऐन तौरात के मुताबिक़ है।

चौथी आयत साफ़ तौर पर वाज़ेह कर देती है कि हज़रत इब्राहिम को नबुव्वत अता हुई और इस के बाद इस्हाक़ को और इस के बाद याकूब को मिली। इस मुक़ाम में भी हज़रत इब्राहिम और इज़हाक़ के साथ इस्माईल का ज़िक्र नहीं आता।

इस सूरत के अगले रूकूअ में किसी हज़रत इस्माईल का ज़िक्र आता है जो “वादों का सच्चा और रसूल नबी था।” लेकिन ये इस्माईल इब्ने इब्राहिम नहीं हो सकते। क्योंकि जैसा हम ऊपर कह चुके हैं कि इन इस्माईल का ज़िक्र हज़रत इब्राहिम के बाद नहीं आता बल्कि हज़रत मूसा और हारून और इदरीस के दर्मियान आता है। जो हज़रत इब्राहिम से तीन (3) सदीयां बाद मबऊस हुए थे। अगर ये इस्माईल इब्ने इब्राहिम होते और अपने बाप की मानिंद नबी होते तो कुदरती तकाज़ा यही था कि उनका नाम हज़रत इब्राहिम के बाद और हज़रत इस्हाक़ से पहले या कम अज़ कम साथ होता। लेकिन वही ने ऐसा नहीं किया जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि ये इस्माईल कोई और नबी थे जो ना तो इब्राहिम के लिए खुदा की तरफ़ से अज़ीम बख़्शिश थे और ना उनसे मुताल्लिक़ थे।

हमने मुफ़स्सिरीन की ये तावील कुबूल करली है जिससे कुरआन अपना पहलू बचा सकता है और इस के मुसद्दिक़-ए-तौरात होने का दाअवा बरकरार रह सकता है। लेकिन अगर मुस्लिम मुनाज़िरीन ब-ज़िद हो कर किसी कुरआनी आयत से हज़रत इस्माईल की नबुव्वत करना चाहें तो उनको ना सिर्फ़ इन तमाम सवालात का तसल्ली बख़्श जवाब

देना होगा जो हमने इन आयात की बहस में पूछे हैं, बल्कि इन के इलावा उनको ये भी बतलाना होगा कि कुरआन के मुख्तलिफ़ मुकामात में बाहमी तज़ाद की वजह क्या है। क्योंकि बाअज़ मुकामात में इन मुनाज़िरीन के मुताबिक़ हज़रत इस्माईल की नबुव्वत का इकरार होगा और बाअज़ मुकामात में जहां उस की नबुव्वत का ज़िक्र लाज़िमी और लाबदी था वहां खामोशी इख्तियार कर लेता है जो माअनी-खेज़ हो कर इन्कार नबुव्वत के बराबर है। इलावा अज़ीं अगर कुरआन किसी आयत में नबुव्वत-ए-इस्माईल का मुद्दई है तो इस का मिस्ताक़-तौरात होने का दावा किस तरह सही हो सकता है? क्योंकि तौरात उस की नबुव्वत का सरीहन (साफ़) इन्कार करती है।

पांचवीं आयत इब्ने कअब, इब्ने अब्बास, क़तादा, अलख़रा, और ज़जाज कहते हैं कि, “जब हज़रत इब्राहिम ने ख़ुदा से एक बेटे के लिए सवाल किया” (ऐ ख़ुदा मुझे एक नेक बेटा बख़्श) तो ख़ुदा ने आपकी दुआ कुबूल की और दुआ के जवाब में इस्हाक़ बख़्शा, और याक़ूब को बतौर ज़ाइद इनाम अता किया और तीनों को नबी बनाया और जो अपनी क़ौम को ख़ुदा की तरफ़ से हिदायत का पैग़ाम पहुंचाया करते थे।

नाज़रीन ने मुलाहिज़ा किया होगा कि ऊपर कुरआनी आयत में यही आया है कि ख़ुदा ने इब्राहिम को इस्हाक़ और याक़ूब बख़्शा और इन तीनों की तफ़सील जुदा-जुदा तरीक़ पर की गई है। सबको हिदायत दी, सबको साहिब-ए-इल्म व अमल बनाया। सबको इमाम बनाया और सबको नबुव्वत का दर्जा अता किया, क्या ये इस अम्र की दलील नहीं है कि ख़ुदा की ग़ायत हसना का ताल्लुक़ इस्माईल से नहीं था बल्कि इस्हाक़ और याक़ूब से था। कुरआन मजीद, जैसा हम ऊपर कह चुके हैं। इस अम्र में तौरात शरीफ़ की तस्दीक़ करता है। अगर ख़ुदा ने इस्माईल को भी मन्सब-ए-नबुव्वत पर सर्फ़राज़ फ़रमाया होता और अगर उस की ग़ायत दोनों के लिए मुसावी (बराबर) होती तो इस का ज़िक्र इस्हाक़ के ज़िक्र से अगर पहले नहीं तो कम अज़ कम साथ होता और पोते के ज़िक्र से तो लाज़िमी तौर पर पहले होना चाहिए था। इस हालत में ये आयत यूं होती, “हमने इब्राहिम को इस्माईल और इस्हाक़ बख़्शा” यूं होती, “हमने इब्राहिम को इस्हाक़ बख़्शा और इस्माईल को इनाम में दिया।” लेकिन वही ईलाही ने इस तब्ई और आदी अम्र को क़तई तौर पर नज़रअंदाज कर दिया है। आख़िर इस की कोई वजह तो होनी चाहिए? तौरात मुक़द्दस की रोशनी में इस की वजह सिर्फ़ यही हो सकती है कि ख़ुदा ने हज़रत इब्राहिम को इस्हाक़ और याक़ूब के इलावा कोई बेटा नहीं बख़्शा। हज़रत इब्राहिम की

किसी हरम (हाजिरा, कतुरह वगैरह) के बेटे को इनाम के तौर पर भी “बेटे का दर्जा नहीं दिया गया। और या तौरात की नस (साफ़ और वाज़ेह, छानबीन) के मुताबिक़ है कि इज़्हाक़ से तेरी (इब्राहिम की नस्ल) का नाम चलेगा।” (पैदाइश 21:12) और कि इज़्हाक़ इब्राहिम का “इकलौता बेटा था।” (पैदाइश 22:2) इस कुरआनी आयत के मुताबिक़ जिस तरह इस्माईल को ये दर्जा नहीं दिया बल्कि वो अपने भाई और भतीजे के साथ खुदा के अतीया में शुमार हुआ इसी तरह उस को चौथी आयत के मुताबिक़ ये दर्जा नहीं मिला कि वो उनके साथ नबुव्वत में शरीक हो।

छठी आयत क़तई तौर पर इस अम्र को साबित कर देती है कि हज़रत इस्माईल का इब्राहीमी वाअदे और बरकत-ए-उज़्मा के साथ किसी किस्म का ताल्लुक़ और वास्ता नहीं था। अगर इस्माईल आल-ए-इस्माईल में से किसी फ़र्द का नबुव्वत व किताब के साथ वास्ता होता तो इस आयत में ज़रूर उस का नाम उस के छोटे भाई इज़्हाक़ और भतीजे याक़ूब से पहले आता।

और अगर इस्माईल कोई ऐसे शख्स होते जिनकी नस्ल से एक ऐसा नबी बरपा होना था जिसकी बकौल-ए-उलमाए इस्लाम खुदा ने अम्बिया-ए-साबक़ीन की मार्फ़त पेश ख़बरी दी थी और जिस को सय्यद-उल-मुर्सलिन बनाकर खुदा ने आलमो-आलमियान की हिदायत के वास्ते भेजना था तो इस मुक़ाम पर इस बात की वज़ाहत एक लाज़िमी और लाबदी बात थी। लेकिन वही ने ऐसा नहीं किया जिससे सिर्फ़ यही एक नतीजा निकल सकता है कि हज़रत इस्हाक़ और हज़रत याक़ूब ना सिर्फ़ खुद नबी थे बल्कि अम्बिया की जड़ थे क्योंकि खुदा ने उनकी नस्ल में नबुव्वत और किताब को जारी रखा। लेकिन इस के बरअक्स हज़रत इस्माईल ना तो खुद नबी थे और ना किसी आने वाले नबी की जड़ थे चह जायके उनकी नस्ल से कोई ऐसा नबी बरपा हो जो रहमत-उल-आलमीन हो।

पस कुरआन शरीफ़ वाज़ेह तौर पर तौरात-ए-मुक़द्दस की ताईद और तस्दीक़ करके कहता है कि जब हज़रत इब्राहिम ने अपने लोगों को छोड़ा तो खुदा तआला ने उस की फ़रमांबदारी के एवज़ उस की दुआ को कुबूल फ़रमाया और इज़्हाक़ अता किया और उस के बेटे और पोते को नबुव्वत के ओहदे पर मुम्ताज़ फ़रमाया। खुदा ने इब्राहिम को नअम-उल-बदल (अच्छा बदले) के तौर पर इस्माईल ना बख़शा। खुदा ने ना तो इस्माईल को नबी बनाया और ना उस को किसी अज़ीम नबी की जड़ या अस्ल ठहराया और ना

उस की औलाद में नबुव्वत और किताब को रखा। इस आयत के मुताबिक नबुव्वत और किताब की बरकत सिर्फ़ इज़हाक और याकूब की नस्ल से बिला-शिकत ग़ैरे-मख्सूस है। कुरआन शरीफ़ किसी एक मुक़ाम में भी वाज़ेह और सरीह तौर पर नहीं कहता कि “हमने इब्राहिम को इस्माईल बख़्शा और उस की नस्ल में नबुव्वत और नुज़ूल-ए-किताब को जारी रखा।” और यह अम्र निहायत माअनी-खेज़ है।

इस कुरआनी आयत में एक और अम्र भी काबिल-ए-गौर है। चूँकि वो “ज़ुरियत” जिसमें “नबुव्वत” रखी गई है इज़हाक और याकूब की नस्ल में है पस लामुहाला अल्फ़ाज़ “अल-किताब” (الكتاب) से वही किताब मुराद हो सकती है जो इस ज़ुरियत के पास है यानी बयना यदिही (بين يديه), क्योंकि “अल-किताब” और “नबुव्वत” का बाहमी ताल्लुक हैं। पस ये सही नहीं हो सकता कि नबुव्वत तो हज़रत इस्हाक और हज़रत याकूब की ज़ुरियत से मख्सूस हो लेकिन “अल-किताब” मख्सूस ना हो जो इस से मुताल्लिक है। पस यहां “अल-किताब” (الكتاب) से मुराद “बाइबल शरीफ़” है। अरबी लफ़ज़ “अल-किताब” (الكتاب) यूनानी लफ़ज़ बाइबल (بايبل) का लफ़ज़ी तर्जुमा है।

नाज़रीन ने मुलाहिज़ा किया होगा कि हाफ़िज़ नज़ीर अहमद मरहूम का तर्जुमा हमने उनकी नस्ल में पैग़म्बरी और (नुज़ूल) किताब को (जारी) रखा हमारी इस तफ़सीर की ताईद करता है जो हमने बाब दोम की फ़स्ल अक्वल में (इस्तिस्ना 18:15) की कर आए हैं, कि बनी-इसाईल में ख़ुदा ने नबुव्वत और किताब का सिलसिला हमेशा जारी रखा। अगर मरहूम का तर्जुमा कुरआन की अरबी आयत के मफ़हूम को सही तौर पर अदा करता है तो ये कुरआनी आयत हमारी तफ़सीर बाला की ताईद करती है।

सातवीं आयत में अल्फ़ाज़ अनी (انى فضتكمه على العالمين) वारिद हुए हैं यानी “ऐ बनी-इसाईल मैंने तुमको दुनिया जहान के लोगों पर फ़ौकियत अता की है।” इन अल्फ़ाज़ के बारे में मुतकल्लिमिन का क़ौल है कि “आलमीन” (عالمين) से मुराद ख़ुदा के इलावा कुल मौजूदात है। ये क़ौल फ़ज़ल के लिहाज़ से मुतलक़ है और हमारी मन्तिक में मुतलक़ बात के सच्चा होने के लिए सिर्फ़ सूरत-ए-वाहिद काफ़ी है, पस इस आयत से मुराद ये है कि, बनी-इसाईल को किसी एक अम्र में तमाम दुनिया जहान पर बुजुर्गी बख़्शी गई। कुरआन मजीद इस फ़ज़ीलत का ज़िक्र बार-बार करता है और इस की (सूरह

अन्कबूत के रूकूअ 3) यानी ऊपर की छठी आयत में तख्सीस करके बतलाता है कि बनी-इस्राईल में “नबुव्वत और नुजूल किताब को जारी रखा गया।” पस कुरआन तौरात शरीफ की तस्दीक करके कहता है कि खुदा ने इस वाअदे के मुताबिक जो उसने इब्राहिम, इज़हाक और याकूब से किया था बनी-इस्राईल में नबुव्वत और किताब देकर उस को “मुसावी क़ौमों की बरकात का बाइस” बना दिया। किताब मुकद्दस में बार-बार आया है कि क़ौम बनी-इस्राईल को खुदा ने अक्वाम-ए-आलम (दुनिया की क़ौमों) में चुन लिया ताकि उस के ज़रीये अपनी नजात का नूर दुनिया जहान की अक्वाम में फैलाए। (ज़बूर 125:4, इस्तिस्ना 7:6, मलाकी 3:17 वगैरह) **अहले-यहूद की रोज़ाना दुआ में ये फ़िक्रह आता है, “ऐ खुदावंद हमारे खुदा कुल कायनात के बादशाह। तू मुबारक है कि तूने हमको अक्वाम आलम (दुनिया की क़ौमों) में से चुन लिया है।”** हम इस मौजू पर एक मुस्तक़िल रिसाला **“इस्राईल का नबी या जहान का मुनज्जी?”** लिखे चुके हैं और नाज़रीन की तवज्जोह इस की तरफ़ मबजूल करने पर इक्तिफ़ा करते हैं।

इस कुरआनी आयत में निहायत साफ़ अल्फ़ाज़ में खुदा ने इस्माईल और बनी-इस्माईल को ख़ारिज करके सिर्फ़ बनी-इस्राईल को ही तमाम अक्वाम आलम (जिनमें क़ौम बनी-इस्माईल भी शामिल है) पर फ़ज़ीलत बख़शी है और सिर्फ़ इसी में नबुव्वत और किताब वदीअत फ़रमाई है। अगर खुदा अलीम व हकीम ने (बक़ौल अहले-इस्लाम) बनी-इस्माईल को सय्यद-उल-अम्बिया और हबीब-ए-खास के बरपा होने के लिए मख्सूस किया होता तो लाज़िमी तौर पर बनी-इस्माईल, बनी-इस्राईल से अफ़ज़ल होते और खुदा ने हज़रत इस्माईल की ज़ुरियत में नबुव्वत और किताब देकर उस को दुनिया जहां की अक्वाम (दुनिया की सारी क़ौमों) पर फ़ज़ीलत बख़शी होती।

आठवीं आयत में भी वज़ाहत के साथ कुरआन शरीफ़ इस **“फ़ज़ीलत और फ़ौक़ियत”** की तख्सीस करके कहता है, **“हमने बनी-इस्राईल को किताब और हुक्मत और नबुव्वत अता फ़रमाकर उनको तमाम जहान पर फ़ज़ीलत और फ़ौक़ियत बख़शी।”** ये आयत निहायत मुहक़म तौर पर साबित करती है कि मज़कूर बाला तमाम आयात और बिल-खुसूस छठी आयत में इब्राहिम की जिस नस्ल में किताब और नबुव्वत रखी गई वो बनी-इस्राईल और सिर्फ़ बनी-इस्राईल ही थी। हज़रत इस्माईल और बनी-इस्माईल किताब और नबुव्वत से ख़ारिज हैं। और ना उनको तमाम जहान पर फ़ज़ीलत और फ़ौक़ियत हासिल है।

नाज़रीन को याद होगा कि खुदा ने हज़रत इब्राहिम से ये वाअदा किया था कि “बेशक तेरी बीवी सारा के तुझसे बेटा होगा तो उस का नाम इज़्हाक रखना और मैं उस से और फिर उस की औलाद से अपना अहद जो अबदी है बाँधूंगा, मैं उसे बहुत बरूमंद करूँगा। कौमें उस की नस्ल से होंगी और आलम के बादशाह इस से पैदा होंगे।” (पैदाइश 17:16 ता 19) पस ये कुरआनी आयत कि “बनी-इस्माईल को किताब और हुक्मत और नबुव्वत अता हुई” तौरात शरीफ़ की लफ़्ज़ बलफ़्ज़ तस्दीक करती है।

तारीख़ मज़ाहिब भी इस सदाक़त की ताईद करती है कि जब से बनी-इस्माईल और बनी-इस्माईल अलग हुए यानी सन हिज़्री से दो हज़ार (2000) साल पहले से कोई नबी आल-ए-इस्माईल से बरपा नहीं हुआ। इस तवील अर्से में सिर्फ़ बनी-इस्माईल ही में अम्बिया-अल्लाह का सिलसिला कायम व बरकरार रहा। पस तारीख़ दुनिया भी यही बतलाती है कि किताब और नबुव्वत सिर्फ़ बनी-इस्माईल को ही दी गई और हर दो उमूर में इस क़ौम को अक्वाम-ए-आलम (दुनिया की सारी क़ौमों) पर फ़ज़ीलत और फ़ौक़ियत (बुलंद मर्तबा) हासिल है।

हमने फ़स्ल में चंद कुरआनी आयात पर मुफ़स्सिल तब्बिरा किया है जिनमें हज़रत इब्राहिम, हज़रत इज़्हाक और हज़रत याकूब की नबुव्वत का ज़िक्र है। और साबित कर दिया है कि इन आयात में हज़रत इस्माईल और आल-ए-इस्माईल को इब्राहीमी वाअदे और नबुव्वत की बरकत-ए-उज़्मा से ख़ारिज (अलग) किया गया है। और वाज़ेह किया गया है कि खुदा ने इब्राहिम और उन के बाद इज़्हाक और उन के बाद याकूब और बनी-याकूब (बनी-इस्माईल) ही में अम्बिया का सिलसिला जारी रखा गया और सिर्फ़ उन्हीं को अल-किताब (الكتاب) दी गई जो खुदा का सच्चा कलाम है। (सूरह इमरान रूकूअ 1, तौबा रूकूअ 14 वग़ैरह)

बाब शश्म

ज़बीह-उल्लाह, इज़्हाक़ या इस्माईल

तौरात व कुरआन के बयानात

तौरात शरीफ़ निहायत वाज़ेह अल्फ़ाज़ में हज़रत इस्हाक़ को ज़बीह-उल्लाह बतलाती है चुनान्चे लिखा है :-

“इन बातों के बाद यूं हुआ कि खुदा ने अब्राहाम को आजमाया और उस से कहा ऐ अब्राहाम, उसने जवाब दिया मैं हाज़िर हूँ। तब खुदा ने कहा कि, तू अपने बेटे इज़हाक़ को जो तेरा इकलौता है और जिसे तू प्यार करता है साथ लेकर मौरय्या के मुल्क में जा और वहां उसे पहाड़ों में से एक पहाड़ जो मैं तुझे बताऊं गा सोख्तनी कुर्बानी के तौर पर चढ़ा। तब अब्राहाम ने सुबह-सवेरे उठकर अपने गधे पर चार जामा कसा और अपने साथ दो जवानों और अपने बेटे इज़हाक़ को लिया और सोख्तनी कुर्बानी के लिए लकड़ियाँ चीरीं और उठकर उस जगह को जो खुदा ने उसे बताई थी रवाना हुए। तीसरे दिन अब्राहाम ने निगाह की और उस जगह को दूर से देखा। तब अब्राहाम ने अपने जवानों से कहा तुम यहीं गधे के पास ठहरो। मैं और यह लड़का दोनों ज़रा वहां तक जाते हैं और सज्दा करके फिर तुम्हारे पास लौट आएँगे। अब्राहाम ने सोख्तनी कुर्बानी की लकड़ियाँ लेकर अपने बेटे इज़हाक़ पर रखीं और आग और छुरी अपने हाथ में ली और दोनों इकट्ठे रवाना हुए और उस जगह पहुंचे जो खुदा ने बताई थी। वहां अब्राहाम ने कुर्बानगाह बनाई और उस पर लकड़ियाँ चुनीं और अपने बेटे इज़हाक़ को बाँधा और उसे कुर्बानगाह पर लकड़ीयों के ऊपर रखा। अब्राहाम ने हाथ बढ़ा कर छुरी ली कि अपने बेटे को ज़बह करे तब खुदावंद के फ़रिश्ते ने उसे आस्मान से पुकारा और कहा, कि तू अपना हाथ लड़के पर ना चला और ना इस से कुछ कर, क्योंकि मैं अब जान गया कि तू खुदा से डरता है इसलिए कि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है दरेग ना किया। चूँकि तूने ये काम किया कि अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है दरेग ना रखा, इसलिए मैंने भी अपनी ज़ात की कसम खाई है कि मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा और तेरी नस्ल को बढ़ाते-बढ़ाते आस्मान के तारों और समुंद्र के किनारे की रेत की मानिंद कर दूँगा। और तेरी नस्ल के वसीले से ज़मीन की सब कौमें बरकत पाएँगी क्योंकि तूने मेरी बात मानी। तब अब्राहाम अपने जवानों के पास लौट गया।” (पैदाइश 22 बाब)

कुरआन शरीफ़ में (सूरह साफ़फ़ात के रूकूअ 3) में कुर्बानी की निस्बत यूं लिखा है,

हज़रत इब्राहिम ने खुदा से दुआ की “ऐ रब मुझको कोई नेक बेटा बख़्श। फिर हमने उस को एक ऐसे नेक बेटे की खुशख़बरी दी जो तहम्मूल वाला होगा। जब वो इस (बाप) के साथ दौड़ने को पहुंचा तो (बाप) ने कहा, ऐ बेटे मैं ख़्वाब में देखता हूँ कि तुझको ज़ब्ह करता हूँ, फिर देख कि तू क्या देखता है, वो बोला ऐ बाप जो तुझको हुक्म हुआ है वो कर डाल। अल्लाह ने चाहा तो मुझको सहारने वाला पाएगा। फिर जब दोनों ने हुक्म माना और उस के माथे के बल पछाड़ा, तो हमने उस को पुकार कर ये कहा, कि ऐ इब्राहिम तूने ख़्वाब को सच्च कर दिखलाया। हम नेकी करने वालों को बदला दिया करते हैं। बेशक ये तेरी सरीह आजमाईश है। और हमने पिछले ख़ल्क में ये बाक़ी रखा कि सलाम है इब्राहिम पर, हम नेकी करने वालों को यूँ बदला देते हैं। वो हमारे ईमानदार बंदों में है और हम ने उस की खुशख़बरी दी कि इज़हाक़ नेक बख़्तों में नबी होगा। और हम ने इब्राहिम पर बरकत दी और इज़हाक़ पर (भी बरकत दी) और दोनों की औलाद में नेकी करने वाले हैं और अपने हक़ में सरीह बदकार भी हैं।” (आयात 98 ता 113)

नाज़रीन ने मुलाहिज़ा किया होगा कि कुरआन का बयान हर बात में तौरात शरीफ़ की मज़कूर बाला आयात की तस्दीक़ करता है। लेकिन चूँकि इस बयान के शुरू में इज़हाक़ का नाम नहीं है। लिहाज़ा बाअज़ मुस्लिम मुनाज़िरीन कहते हैं कि यहां कुरआन मजीद का मतलब हज़रत इस्माईल से है और ये नहीं देखते कि अगर कुरआनी बयान तौरात के मुताबिक़ नहीं है तो उसी का नुक़सान है क्योंकि तौरात शरीफ़ की तारीख़ कुरआन मजीद से क़दीम-तर है। पस उस के मुकाबिल कुरआन के सुखन (कलाम, शेअर, बात) को अज़रूए क़वानीन शहादत किसी तरह भी वक़अत हासिल नहीं हो सकती।

इज़हाक़ ज़बीह-उल्लाह अज़रूए कुरआन

हमारे मुखातबों को ये बात मददे-नज़र रखनी चाहिए कि कुरआन किसी मुक़ाम में भी हज़रत इस्माईल का नाम लेकर ये नहीं कहता कि वो कुर्बान होने वाले थे। अगर फ़ील-वाक़िया हज़रत इस्माईल अज़रूए कुरआन ज़बीह-उल्लाह होते तो कुरआन उनका नाम ज़रूर लेता, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। इस की वजह साफ़ ज़ाहिर है, कुरआन ने ज़बीह-उल्लाह के नाम की तख़सीस (महफूज़ करना, खुसूसीयत, हक़ मख़सूस) इस वास्ते नहीं की क्योंकि जुम्ला यहूद व नसारा तौरात शरीफ़ की बिना पर ये जानते और मानते थे कि हज़रत इज़हाक़ ही ज़बीह-उल्लाह हैं। इस माअहूद ज़हनी की वजह से कुरआन

मजीद को नाम लेने की ज़रूरत ही लाहक़ ना हुई। बिलखुसूस जब हम ये देखते हैं कि कुरआन बार-बार मुसददिक-ए-तौरात (तौरात के सच्चे) होने का दावा करता है और इस खास अम्र में उस के बयान की ज़रूर बज़रूर इब्ने इब्राहिम का नाम लेकर यहूद व नसारा को कहता है कि, ऐ अहले-किताब तुमने और तुम्हारी तौरात ने ज़बीह-उल्लाह के मुआमले में गलती खाई है, मैं तुमको बतलाता हूँ कि तुम्हारे जददे-अमजद इज़हाक़ ज़बीह-उल्लाह नहीं थे बल्कि वो मेरे फ़रिस्तादा रसूल के जददे-अमजद इस्माईल थे। लेकिन कुरआन ये नहीं कहता जिससे ज़ाहिर है कि उस को इस मुआमले में तौरात से इख़्तिलाफ़ ना था। पस चंद मुफ़स्सिरीन की राय सहफ़-ए-समावी (आस्मानी सहाइफ़) के मुत्तफ़िका बयानात के मुक़ाबिल कुछ वक़अत नहीं रख सकती।

मुफ़स्सिरीन की दलील

कुरआन के बयान का सतही मुतालआ भी ये ज़ाहिर कर देता है कि इस में और तौरात के बयान में कोई इख़्तिलाफ़ नहीं, लेकिन ये चंद मुफ़स्सिरीन गुमान करते हैं कि इस बयान की आखिरी आयत “और हम ने उस को इज़हाक़ की खुशख़बरी दी जो नेक बख़्तों में नबी होगा” हज़रत इज़हाक़ की पैदाइश की ख़बर है। जो कुर्बानी गुज़राने के बाद मिली। पस उन मुफ़स्सिरीनों की राय में कुर्बानी हज़रत इज़हाक़ की विलादत से पहले वाक़ेअ हुई और इस्माईल कुर्बान होने वाले थे क्योंकि वो इज़हाक़ से पहले थे।

लेकिन ये क्रियास बिल्कुल बातिल है क्योंकि अक्वल तो कुरआनी बयान ही से ये मालूम हो जाता है कि इस बशारत के वक़्त इज़हाक़ मौजूद थे और दोम तौरात और कुरआन दोनों में साफ़ पाया जाता है कि **इब्राहिम को विलादत इज़हाक़ की खुशख़बरी कुर्बानी के बाद नहीं मिली थी बल्कि उम्मत लूत की हलाक़त के क़बल मिली थी।** (पैदाइश 18 बाब) कुरआन में भी ये किस्सा (सूरह हूद और हिज़्र और ज़ारियात) में मर्कूम है कि फ़रिश्ते क्रौम लूत को हलाक़ करने जाते थे। असना-ए-राह में उन्होंने इब्राहिम की मेहमानी कुबूल की और कहा, “हम तुझको एक होशियार लड़के की खुशख़बरी देते हैं।” जब उसने और उस की बीवी ने अपनी ज़ईफ़ी का खयाल करके यकीन ना किया और बहुत मुतअज्जिब (हैरान) हुए तो फ़रिश्ते ने दोनों का इत्मीनान किया। (हिज़्र रूकूअ 3, ज़ारियात रूकूअ 2) पस उन मुफ़स्सिरीन का ये खयाल कि विलादत-ए-इज़हाक़ की

खबर कुर्बानी के बाद दी गई तौरात व कुरआन के मुतफिका बयान के खिलाफ है और बातिल है। ये खुशखबरी तो उनको मुद्दतों पहले मिल चुकी थी।

कुरआनी बयान से इस्तिदलाल

(सूरह साफ़ात) के बयान से निहायत वाज़ेह तौर पर साबित होता है कि इज़्हाक़ ज़बीह-उल्लाह थे :-

(1) ज़बीह-उल्लाह वही थे जो हज़रत इब्राहिम के फ़र्ज़न्द मौऊद थे। इस फ़र्ज़न्द की तव्वुलुद (पैदाइश) की बशारत उनके दुआ के जवाब में उनको दी गई। कुरआन में तव्वुलुद-ए-इज़्हाक़ का वाअदा साफ़ और वाज़ेह अल्फ़ाज़ में मौजूद है। मगर कुरआन के किसी मुकाम में भी तव्वुलुद-ए-इस्माईल की कोई बशारत नहीं पाई जाती। हज़रत इब्राहिम ने इसी फ़र्ज़न्द को नज़र किया था जिसकी बशारत उनको दी गई थी। पस ये फ़र्ज़न्द हज़रत इस्माईल नहीं थे, बल्कि हज़रत इस्हाक़ थे।

(2) जब हज़रत इब्राहिम ने दुआ की कि, “ऐ रब मुझको कोई नेक बेटा बख़्श” (जिसको बाअदा (इस के बाद) कुरआन के मुताबिक़ उन्होंने नज़र गुज़राना) तो वो ज़रूर अपनी हकीकी बीबी सारा के बतन से कोई बेटा चाहते थे क्योंकि यूँ तो उनके कई बेटे थे। एक हाजिरा से छः (6) कतूरह से थे मगर ये सब हरमों के बतन से थे जिनको वो मर्तबा हासिल नहीं हो सकता जो इज़्हाक़ को हासिल था।

हज़रत इब्राहिम ने सारा के बतन से बेटा हासिल करने के लिए दुआ की क्योंकि यहूद में औरत के रहम का बंद होना, रुस्वाई और खुदा की नाराज़गी का मूजिब समझा जाता था और जिस औरत के हाँ फ़र्ज़न्द नरीना (लड़का) ना होता वो बेतरह कुढ़हा करती थी। (1 समुएल 1:5, 6, पैदाइश 30:23, ज़बूर 113:9, लूका 1:25 वगैरह) हज़रत इब्राहिम दिल से चाहते थे कि उनकी बीबी की ये रुस्वाई दूर हो। पस उन्होंने दुआ की जो खुदा ने मंज़ूर फ़रमाई और उन को एक होशियार तहम्मूल वाले बेटे की पैदाइश की खुशखबरी दी।

(3) जब हज़रत इब्राहिम ने अपने बेटे से अपने ख़्वाब का ज़िक़र किया तो उसने बड़ी खुशी से अपनी जान को खुदा की राह में निसार करने पर मुस्तअद्दी ज़ाहिर की

और कहा, “ऐ बाप जो तुझको हुकम हुआ है कर डाल।” मुफ़स्सरीन ने इस पर तालमूदी किस्सों से इज़ाफ़ा किया है कि उसने अपने बाप से ये भी कहा कि तू मेरे हाथ पैर बांध दे ऐसा ना हो कि वक़्त-ए-ज़ब्ह मेरे तड़पने से तेरे कपड़े खून से भर जाएं। और तू मुझको पट गिरा दे ताकि मेरा चेहरा देखकर तुझ पर महर पिदरी (बाप की शफ़क़त) ग़ालिब ना हो। और कुर्बानी के बाद मेरा पैराहन मेरी माँ को दे देना ताकि उस की तश्फ़ी हो जाए। अगर ये सब किस्से सही और दुरुस्त हैं तो इस बयान में फ़र्ज़द-ए-मौऊद यानी इज़हाक़ के औसाफ़ नुमायां हैं। क्योंकि ये सब बातें निहायत दानाई और होशियारी की बातें हैं जिससे ज़ाहिर है कि ये ज़बीह-उल्लाह ही होशियार लड़का है जिसकी विलादत की खबर दी गई थी।

इलावा अर्ज़ी एक और सिफ़त भी ज़बीह-उल्लाह की बतलाई गई है कि वो “तहम्मूल (सब्र) वाला होगा” और यही सिफ़त इज़हाक़ में मिलती है। हज़रत इस्माईल तो गोरखर की तरह आज़ाद मर्द थे जिनका हाथ सब के खिलाफ़ और सब के हाथ उनके खिलाफ़ थे। पस ये ज़बीह-उल्लाह इज़हाक़ ही थे जो नेक भी थे “होशियार” भी थे “तहम्मूल वाले” भी थे और इन तमाम औसाफ़ का ब-वक़्त कुर्बानी इज़हार हो गया। हज़रत इस्माईल के तहम्मूल वाले होशियार होने की खबर किसी मुक़ाम में भी हज़रत इब्राहिम को नहीं दी गई।

(4) कुरआनी बयान में है कि, “जब वो उस के साथ दौड़ने को पहुंचा” ये आयत इस बात की मतक़ज़ी (तक्राज़ा करने वाली) है कि ज़बीह-उल्लाह से वही इब्ने इब्राहिम मुराद हो जो उस के साथ दौड़ने की उम्र को पहुंचा। और यह वही बेटा है जो उस को मुल्क-ए-शाम में हासिल हुआ था। हज़रत इस्माईल तो इस से बहुत पहले हाजिरा के साथ घर से निकाल दिए गए थे और वो फ़ारान के ब्याबान में रहते थे। (पैदाइश 21 बाब) पस इज़हाक़ ही नज़्र (कुर्बानी के लिए) गुज़राने गए थे।

(5) अगरचे हज़रत इब्राहिम हुकम-ए-ख़ुदा के मुताबिक़ बेटे को नज़्र (कुर्बान) करने पर मुस्तइद हुए मगर उनके बेटे ने उनसे भी ज़्यादा जाँनिसारी दिखलाई कि राह-ए-ख़ुदा में ज़ब्ह होने से मुतलक़ मलाल (अफ़सोस) ना किया। पस कुरआन में इन दोनों के इस बेनज़ीर काम का सिला मिलता है। इब्राहिम से तो कुर्बानी के बाद कहा गया “हमने पिछले ख़ल्क में बाकी रखा कि सलाम है इब्राहिम पर, हम नेकी करने वालों को यूँ बदला

देते हैं और वो हमारे ईमानदार बंदों में है।” ये सिला (बदला,अज़) इब्राहिम को मिला। अब ज़बीह-उल्लाह को इस की लासानी फ़रमांबर्दारी का क्या अज़ मिला? अगर ये ज़बीह-उल्लाह इस्माईल थे तो इस को मुतलक कोई सिला (अज़, बदला) नहीं मिला। इस्माईल की कोई तारीफ़ नहीं की गई बल्कि उस के नाम तक का ज़िक्र नहीं किया गया हालाँकि लिखा है कि इब्राहिम और ज़बीह-उल्लाह “दोनों ने हुक्म माना।” बल्कि हक़ तो ये है कि ज़बीह-उल्लाह ने इब्राहिम से बढ़-चढ़ कर हुक्म माना। इब्राहिम तो कुर्बान करने को आमदा हुए लेकिन वो बखुशी तमाम कुर्बान होने का ख्वाहिशमंद हो गया और कहा, “ऐ बाप जो तुझको हुक्म हुआ है वो कर डाला।” और आखिरी वक़्त तक बकौल मुफ़स्सिरीन कुरआन बाप की तसल्ली और तश्फ़ी करता रहा। अगर ये ज़बीह-उल्लाह इस्माईल थे तो उनको किसी किस्म का अज़ नहीं मिला। लेकिन कुरआनी बयान के मुताबिक़ इब्राहिम और ज़बीह-उल्लाह दोनों को अज़ मिला। पस ये ज़बीह-उल्लाह इस्माईल नहीं थे बल्कि इज़हाक़ थे जिनके हक़ में दूसरा अज़ लिखा मौजूद है। चुनान्चे कहा गया, “हमने उस को इज़हाक़ की बाबत खुशख़बरी दी कि वो नबी होगा नेक बख़्तों में और हम ने इब्राहिम पर और इज़हाक़ पर बरकत दी।” पस इब्राहिम को एक इनाम मिला और इज़हाक़ ज़बीह-उल्लाह को इनाम-ए-नबुव्वत अता हुआ और इस के इलावा इब्राहिम और इज़हाक़ को फ़रमांबर्दारी के सिले (बदले) में बरकत मिली। और यह ऐन तौरात शरीफ़ के मुताबिक़ है जहां लिखा है, “ऐ इब्राहिम ! चूँकि तूने अपने बेटे को भी जो तेरा इकलौता है मुझसे दरेग़ ना किया मैं तुझे बरकत पर बरकत दूँगा। और तेरी नस्ल के वसीले से जो इज़हाक़ से कहलाएगी ज़मीन की सब कौमें बरकत पाएँगी क्योंकि तूने मेरी बात मानी।” (पैदाइश 22:16 ता 17, 21:12)

(6) हज़रत इज़हाक़ में ज़बीह-उल्लाह की एक और सिफ़त पाई जाती है हज़रत इब्राहिम ने ये दुआ की थी। **رب هب لي من الصالحين** (ऐ रब मुझे कोई नेक बेटा अता फ़र्मा) इस दुआ के जवाब में उनको फ़र्ज़न्द अता हुआ जिसे उन्होंने बाइदें नज़्र (कुर्बानी) गुजराना। कुर्बानी के बाद इज़हाक़ की यही सिफ़त कुरआन में बयान हुई है, **نبياً من الصالحين** वो “नबी होगा नेकों में।” और ये सरीह मुताबिक़त है जिससे इज़हाक़ का ज़बीह-उल्लाह होना पूरे तौर पर साबित है। जो इज़हाक़ के औसाफ़ हैं वही ज़बीह-उल्लाह के औसाफ़ हैं। चुनान्चे इज़हाक़ को होशियार और तहम्मूल वाला लड़का कहा और हम ऊपर बतला चुके हैं कि ज़बीह-उल्लाह के भी यही औसाफ़ हैं। ज़बीह-उल्लाह को **من الصالحين**

(मिनस्सालिहीन, नेको में से) कहा। इज़्हाक मिनस्सा-सालिहीन (नेकों में से) है। इब्राहिम और ज़बीह-उल्लाह दोनों की बाबत लिखा है कि, “दोनों ने हुक्म माना।” और कुर्बानी के बाद दोनों को सिला (बदला) मिलता है और दोनों को एक साथ याद करके कहा, “हमने इब्राहिम पर और इज़्हाक पर बरकत दी।”

(7) और अम्र गौरतलब है। कुरआन कुर्बानी के बाद इब्राहिम को कहता है कि “बेशक ये तेरी सरीह आजमाईश है।” तौरात भी कहती है कि “खुदा ने इब्राहिम को आजमाया।” (पैदाइश 22:1) अगर ये कुर्बानी इज़्हाक की थी तो ये “बेशक सरीह आजमाईश” थी वर्ना नहीं। क्योंकि इज़्हाक हज़रत इब्राहिम और बीबी सारा का “इकलौता बेटा था, जिसे वो प्यार करता था।” (पैदाइश 22:2) जब वो दोनों ज़ईफ़ हो गए थे जिस उम्र में औलाद की उम्मीद नहीं की जा सकती थी उस वक़्त नाउम्मीदी की हालत में वो पैदा हुआ था और अभी जवान भी ना होने पाया था कि उस की कुर्बानी का हुक्म हुआ जिसकी निस्बत खुदा ने फ़रमाया था कि “इब्राहिम की नस्ल इस से चलेगी और वो और उस की नस्ल अर्ज़-ए-मुक़द्दस के वारिस होंगे और ज़मीन की सब कौमें उस के वसीले से बरकत पाएँगी।” अब ऐसे लख़्त-ए-जिगर को अपने हाथों ज़ब्ह करना और अपने हाथों शजर-ए-उम्मीद की जड़ काटना “बेशक ये सरीह आजमाईश” थी। हरम के बेटे इस्माईल को कुर्बान करना जिसकी ज़ात से ना कोई वाअदा और ना कोई उम्मीद वाबस्ता थी “सरीह आजमाईश” नहीं हो सकती थी। इज़्हाक जैसे वाअदे के फ़र्ज़न्द को (पैदाइश 15 बाब, 17 बाब) कुर्बान करने के लिए तैयार हो जाने की वजह से वो ईमान की राह से रास्त बाज़ ठहरा (रोमीयों 4:13) बक़ौल मुसन्निफ़ ख़त-ए-इब्रानियों “इस तरह सब्र करके उसने वाअदा की हुई चीज़ को हासिल किया।” (इब्रानियों 6:13) “उस को कामिल एतिक़ाद था कि खुदा ने जो कुछ वाअदा किया है वो उसे पूरा करने पर भी कादिर है।” (रोमीयों 4:21) और इस “सरीह आजमाईश” में कामयाब निकल कर वो “ईमानदारों का बाप” हुआ। (रोमीयों 4:11)

हमने कुरआन से साबित कर दिया है कि हज़रत इज़्हाक ही नज़्र (कुर्बानी) गुज़राने गए थे अगर कोई मौलवी साहब कुरआन से इस किस्म के दलाईल इस्माईल के ज़बीह-उल्लाह होने के पेश कर सकते हैं तो हम बखुशी उनको सुनेंगे और उन पर गौर करेंगे।

अहादीस से इस्तिदलाल

बाअज़ मुफस्सिरीन ने दो हदीसों से इस्तिदलाल किया है कि हज़रत इस्माईल ज़बीह-उल्लाह थे लेकिन ये ज़ाहिर है कि अगर कोई हदीस कुरआन के मुखालिफ़ हो तो वो झूठी है ख्वाह उस का रावी कोई हो। पस अगर किसी हदीस में ये लिखा है कि हज़रत इस्माईल ज़बीह-उल्लाह थे तो इस सही उसूल के मुताबिक़ वो हदीस सिरे से ग़लत है और क़ाबिल-ए-कुबूल नहीं हो सकती।

ये दो हदीसें हस्बे-ज़ेल हैं, (1) एक में लिखा है कि रसूल-अल्लाह ने फ़रमाया कि मैं इब्ने-ज़बीहीन (ابن زبیه) हूँ। (2) दूसरी हदीस में आया है कि एक आराबी ने आँहज़रत को ये कह कर पुकारा कि, ऐ इब्ने-ज़बेहीन” (ابن زبیه) आप इस खिताब पर मुस्कुरा दीए। जब आराबी से पूछा गया तो उस ने बतलाया कि जब अब्दुल मुत्तलिब ने चाह-ए-ज़मज़म खोदा तो उसने नज़्र मानी कि अगर ये काम उस के लिए आसान हो जाए तो वो अपने एक बेटे को कुर्बान कर देगा। कुरआ अब्दुल्लाह के नाम निकला मगर उस के मामू ने उस को इस बात से मना किया और सलाह दी कि अपने बेटे के एवज़ एक सौ (100) उंट कुर्बान कर दे। पस उसने एक सौ (100) उंट कुर्बान कर दिए। पस एक ज़बीह हज़रत इस्माईल है और दूसरा हज़रत का बाप अब्दुल्लाह है।”

ज़ाहिर है कि ये बातें अरबाब-ए-सैर (सीरत लिखने वालों) की कहानियां हैं जो अम्र वाकिआ नहीं हैं लिहाज़ा वो एक मुहक्किक़ की नज़रों में वक़अत नहीं रखतीं जभी सर सय्यद मरहूम फ़र्माते हैं :-

“इब्ने अल-ज़बीहीन की रिवायत निहायत ग़लत है।
इस्माईल कभी कुर्बान नहीं हुए।” (खुत्बात सफ़ा 55)

उलमा-ए-इस्लाम और ज़बीह-उल्लाह

रोज़तुल-अहबाब में लिखा है :-

”اختلاف است علماء را که ذبح اللہ اسماعیل بود یا اسحاق۔ قاضی بیضاوی در تفسیر خویش و امام نوادی در کتاب تہذیب الاسماء اللغات وغیرہما آورده اند کہ اکثر بر آند کہ اسماعیل بودہ۔ و جمعے کثیر بر آند کہ اسحاق بودہ۔ دلیل ایشان این است کہ حق تعالی در قرآن مجید میفرماید۔
 فبشرہ ناہ بغلام حلیم فلما بلغ معہ السعی قال یا بنی انی اری فی المنام انی اذبحک فاظن ماذا اتری۔ چہ ظاہر آیہ دلالت میکند ہر آنکہ آن پسر کہ ابراہیم باو مبشر شدہ اوست کہ در خواب مامور گشتہ مذبح او۔ و در قرآن ہیچ جانیست کہ کسے مبشر شدہ باشد بغیر از اسحاق۔ ہچنانکہ در سورہ ہود مبشر ناہا یا با اسحاق و در سورہ صافات میفرماید و مبشر ناہ با اسحاق نمیل من الصلحین۔ وہ دیگر حدیث در زکے نسبت یوسف وارد شدہ کہ یوسف بنی اللہ ابن یعقوب اسرائیل اللہ بن اسحاق ذبح اللہ۔“

नाज़रीन पर वाज़ेह हो गया होगा कि ये हदीस जिसका साहिब-ए-रोज़तुल-अहबाब जिक्र करता है कुरआन और सहफ़-ए-समावी (आस्मानी सहिफों) के मुताबिक़ है। लिहाज़ा ये हदीस सच्ची है और एक मुहक्किक़ की नज़रों में मज़कूर बाला मेयार के मुताबिक़ काबिल-ए-वक़अत है। इस के बरअक्स “इब्ने ज़बीहीन” की दोनों हदीसें सहफ़-ए-समावी के ख़िलाफ़ बयान करती हैं पस वो रिवायत झूटी और मौज़ूआ (झूटी) हैं।

जो अस्थाब इन दो हदीसों की बिना पर इस्माईल को ज़बीह-उल्लाह मानते हैं उनमें इब्ने अब्बास, इब्ने उमर, सईद बिन मुसेद, हसन, शबई, मुजाहिद और कलबी शामिल हैं। अब ज़रा हज़रत इज़हाक़ को ज़बीह-उल्लाह मानने वालों के नाम मुलाहिज़ा हों। उनमें हज़रत उमर, हज़रत अली, हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, हज़रत इब्ने मसऊद, हज़रत कअब, हज़रत अहबार और क़तादा और सईद बिन ख़बीर, मसूक, इक्रमा, ज़हरी सदी ओ मुकातिल जैसे हज़रात ज़ीशान और अकाबिर इस्लाम शामिल हैं। वो ना सिर्फ़ आँहज़रत के मुकर्रम सहाबियों में से हैं बल्कि कुरआन के हाफ़िज़ और हुस्न राय, इल्म और नेकी के लिए दुनिया-ए-इस्लाम में मशहूर और मुम्ताज़ हैं। कौन ज़ी-होश शख्स इब्ने अब्बास और इब्ने उमर की राय को हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और हज़रत उमर पर तर्ज़ीह देगा? बिलखुसूस जब सहफ़-ए-समावी (आस्मानी सहाईफ़) इनकी ताईद करती हैं? अगर इब्ने-अल-ज़बीहीन की हदीस सही होती तो क्या इस की हकीक़त आँहज़रत के चचा अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब और चचाज़ाद भाई अली और आँहज़रत के खुसर से पोशीदा होती?

सर सय्यद मरहूम भी तस्लीम करते हैं कि ज़ी इल्म मुसलमान आलिमों का साफ़ बयान है कि हज़रत इज़हाक़ की निस्बत कुर्बानी का हुक़म हुआ था ना कि हज़रत इस्माईल की निस्बत और यही अम्र मुन्दरिजा ज़ैल हदीस में भी पाया जाता है :-

عند محمد ابن المنتشر قال ان رجلا نذر ان يحزن نفسه----- (نقال له مسروق لا تحزن--- واشتر كيشا فاذبه للمساكين
فان اسحاق خير منك وفدى بكش

(रावी इब्ने जरीन मिश्कात) इस हदीस में मसूक का कौल साफ है कि “हज़रत इज़हाक कुर्बान होने वाले थे।” (खुल्बात सफ़ा 135)

पस कुरआन मजीद, सहीह अहादीस, सहाबा रसूल और जी-इल्म मुसलमान सब के सब तौरात मुकद्दस के बयान की ताईद और तस्दीक करते हैं कि हज़रत इब्राहिम ने हज़रत इस्हाक को ही नज़्र (कुर्बान) गुजराना था।

बाब हफ़्तुम

बीबी हाजिरा कनीज़क-ए-हज़रत सारा

चूँकि मौलवी साहब ने बनी-इस्माईल को बरकत-ए-नबुव्वत का मुस्तहिक समझा और फिर हज़रत इस्माईल को नबी गिरदाना पस उनको ताज़ीमन इस्माईल की माँ बीबी हाजिरा के लौंडी होने से भी इन्कार करना पड़ा है। हमारे मुखातब को ये खयाल ना आया कि ये अम्र ज़रूरी नहीं कि किसी नबी की माँ आज़ाद ही हो और लौंडी ना हो। यहूदीयों और मसीहीयों के नज़दीक गो बीबी हाजिरा लौंडी थीं लेकिन वो कनीज़क होने के बावजूद बरकत वाली थीं। लौंडी गुलाम होना फ़िनफिसही किसी की ज़ाती तहकीर नहीं कर सकता। क्योंकि ये ज़ाहिरी और आरिज़ी उमूर हैं जिनका ताल्लुक किसी इन्सान की हकीकी रूहानियत और बातिनी शराफ़त से नहीं होता।

तौरात शरीफ़ का बयान

मगर हकीकत में वाक़िया यही है कि बीबी हाजिरा हज़रत इब्राहिम की बीवी सारा की लौंडी थीं। चुनान्चे तौरात शरीफ़ में लिखा है “खुदावंद का कलाम रोया (कशफ़) में इब्राहिम पर नाज़िल हुआ और उस ने फ़रमाया, ऐ अब्राम तू मत डर में तेरी सिपर और तेरा बहुत बड़ा अज़्र हूँ। अब्राम ने कहा, ऐ खुदावंद खुदा तू मुझे क्या देगा क्योंकि मैं तो

बेऔलाद हो जाता हूँ?..... और अब्राहम की बीवी सारा के कोई औलाद ना हुई। उस की एक मिस्री लौंडी थी जिस का नाम हाजिरा था और सारा ने अब्राहम से कहा देख खुदावंद ने मुझे तो औलाद से महरूम रखा है। सो तू मेरी लौंडी के पास जा शायद उस से मेरा घर आबाद हो। अब्राहम ने सारा की बात मान ली और अब्राहम को मुल्क-ए-कनआन में रहते दस (10) बरस हो गए थे जब उस की बीवी सारा ने अपनी मिस्री लौंडी उसे दी कि उस की बीवी बने और हाजिरा के पास गया और हामिला हुई। जब उसे मालूम हुआ कि वो हामिला हो गई है तो अपनी बीबी को हकीर जानने लगी। तब सारा ने अब्राहम से कहा, जो जुल्म मुझ पर हुआ वो तेरी गर्दन पर है। मैं ने अपनी लौंडी तेरी आगोश में दी और अब जो उसने अपने आपको हामिला देखा तो मैं इस की नज़र में हकीर हो गई। अब्राहम ने सारा से कहा कि तेरी लौंडी तेरे हाथ में है जो तुझे भला दिखाई दे तू उस के साथ कर। तब सारा उस पर सख्ती करने लगी और वो उस के पास से भाग गई। और वह खुदावंद के फ़रिश्ते के ब्याबान में पानी के एक चशमे के पास मिली और उस ने कहा, ऐ सारा की लौंडी हाजिरा तू कहाँ से आई और किधर जाती है? उसने कहा, मैं अपनी बीबी सारा के पास से भाग आई हूँ। खुदावंद के फ़रिश्ते ने उस से कहा कि तू अपनी बीबी के पास लौट जा और अपने आपको उस के कब्ज़े में कर दे और खुदावंद के फ़रिश्ते ने उस से कहा कि तो हामिला है और तेरे बेटा होगा, उस का नाम इस्माईल रखना क्योंकि खुदावंद ने तेरा दुखड़ा सुन लिया है। वो गोरखर की तरह आज़ाद मर्द होगा। उस का हाथ सब के खिलाफ़ और सब के हाथ उस के खिलाफ़ होंगे और जब अब्राहाम से हाजिरा के इस्माईल पैदा हुआ तब अब्राहम छयासी (86) बरस का था। जब वो निनान्वे (99) बरस का हुआ तब खुदावंद अब्राहाम को नज़र आया और उसने फ़रमाया कि मैं सारा से तुझे एक बेटा बख्शूंगा और खुदावंद ने जैसा उसने फ़रमाया था सारा पर नज़र की सारा हामिला हुई और अब्राहाम के लिए उस के बुढ़ापे में उस के बेटा हुआ और अब्राहाम ने अपने बेटे का नाम जो उस से सारा के पैदा हुआ इज़हाक रखा। और जब उस का बेटा इज़हाक उस से पैदा हुआ तो अब्राहाम सौ (100) बरस का था। और वो लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और इज़हाक के दूध छुड़ाने के दिन अब्राहाम ने बड़ी ज़ियाफ़त की और सारा ने देखा कि हाजिरा मिस्री का बेटा ठट्ठे मारता है तब उसने अब्राहाम से कहा कि इस लौंडी को और इस के बेटे को निकाल दे क्योंकि इस लौंडी का बेटा मेरे बेटे इज़हाक के साथ वारिस ना होगा। पर अब्राहाम को उस के बेटे के बाइस ये बात निहायत बुरी मालूम हुई। और खुदा ने अब्राहाम से कहा तुझे उस लड़के और अपनी

लौंडी के बाइस बुरा ना लगे जो कुछ सारा तुझसे कहती है तू उस की बात मान क्योंकि इज़हाक से तेरी नस्ल का नाम चलेगा और इस लौंडी के बेटे से भी मैं एक क्रौम पैदा करूँगा। तब अब्राहाम ने सुबह-सवेरे उठकर रोटी और पानी की एक मशक ली और उसे हाजिरा को दिया बल्कि उस के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उस के हवाले करके उसे रुखसत कर दिया। सो वो चली गई और बैर सबअ के ब्याबान में आवारा फिरने लगी और जब मशक का पानी खत्म हो गया तो उसने लड़के को एक झाड़ी के नीचे डाल दिया और आप उस के मुक्काबिल एक तीर के टप्पे पर दूर जा बैठी और कहने लगी कि मैं इस लड़के का मरना तो ना देखूँ। सो वो उस के मुक्काबिल बैठ गई और चिल्ला-चिल्ला कर रोने लगी। और खुदा के फ़रिश्ते ने आस्मान से हाजिरा को पुकारा और उस से कहा, ऐ हाजिरा तुझको क्या हुआ? मत डर क्योंकि खुदा ने उस जगह से जहां लड़का पड़ा है उस की आवाज़ सुन ली है। उठ और लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से सँभाल क्योंकि मैं उस को एक बड़ी क्रौम बनाऊँगा। फिर खुदा ने उस की आँखें खोलीं और उसने पानी का एक कुँआं देखा और जाकर मशक को पानी से भर लिया और लड़के को बुलाया और खुदा उस लड़के के साथ था और वो बड़ा हुआ और ब्याबान में रहने लगा और तीर अंदाज़ बना और फ़ारान के ब्याबान में रहता था और उस की माँ ने मुल्क-ए-मिस्र से उस के लिए बीवी ली।” (पैदाइश बाब 15 ता 21)

तौरात शरीफ़ के मज़कूर बाला बयान को पढ़ कर ये रोशन हो जाता है कि बीबी हाजिरा के लौंडी होने से इन्कार करना ऐसा ही मुहाल अम्र है जैसा कि उस के औरत होने से इन्कार करना। हमको ये साबित करना कि बीबी हाजिरा लौंडी थीं कोई ज़रूरी बात नहीं बल्कि इस अम्र पर बहस करना भी हमको एक गोना नागवार भी है। मगर इज़हार-ए-हकीकत के लिहाज़ से इस मौजू पर बादल नख्वास्ता हम बहस कर रहे हैं ताकि हमारे मुखातब ग़लती में ना रहें।

गुलामी का रिवाज और बीबी हाजिरा

मौलवी साहब लिखते हैं कि :-

“ईसाईयों का ये कहना कि हज़रत हाजिरा लौंडी है और इस्माईल मए अपनी माँ के निकाले गए बिल्कुल बातिल है।

हज़रत हाजिरा का लौंडी होना कुतुब-ए-मुकद्दसा से पाया नहीं जाता। क्योंकि जो शराइत लौंडी होने के कुतुब-ए-मुकद्दसा में हैं उनमें से एक भी हाजिरा में पाई नहीं जाती। अगर ईसाई ये कहें कि हज़रत हाजिरा के वक़्त शरीअत कहाँ थी? शरीअत हज़रत मूसा लाए और शराइत लौंडी, गुलाम की हज़रत मूसा के वक़्त बयान हुई तो इस का जवाब ये है कि जिस सूरत में लौंडी गुलाम की शराइत हज़रत मूसा से शुरू हुई तो हाजिरा लौंडी नहीं हो सकती।” (सफ़ा 17, 18)

तौरात शरीफ़ के मज़कूर बाला बयान को पढ़ कर कोई सहीह-उल-अक़ल शख्स जिसको तहक़ीक़ का ज़रा भी पास हो ये दाअ्वा नहीं कर सकता कि “हज़रत हाजिरा का लौंडी होना कुतुब-ए-मुकद्दसा से पाया नहीं जाता।” किताब मुकद्दस के मज़कूर बाला बयान में कम अज़ कम नो (9) दफ़ाअ बीबी हाजिरा को “लौंडी” कहा गया है और हज़रत सारा को आठ (8) मर्तबा उस की मालिका कहा गया है। बीबी सारा उस को “मेरी लौंडी” कहती है। हाजिरा उस को अपनी “मालिका” तस्लीम करती है। हज़रत इब्राहिम सारा से मुखातब हो कर उस को “तेरी लौंडी” कहते हैं। खुदावंद का फ़रिश्ता उस को “ऐ सारा की लौंडी हाजिरा” कह कर बुलाता है। खुद खुदा बीबी हाजिरा को “लौंडी” और हज़रत इस्माईल को “लौंडी का बेटा” कहता है लेकिन हमारे मुखातब इसरार करके कहते हैं हाजिरा लौंडी नहीं हो सकती !”

मौलवी साहब ने ईसाईयों की बात पर ग़ौर नहीं किया और बहुत बड़ी ग़लती में मुब्तला हो गए। ईसाई ये बातिल दाअ्वा नहीं करते कि बीबी हाजिरा मूसवी शरीअत की अलम-दर-आमद के साथ लौंडी थी बल्कि ये (जो आपके दाअ्वे के लिए और ज़्यादा मुज़िर है) कि इब्राहिम के ज़माने के रिवाज-ए-गुलामी के मुताबिक़ हाजिरा महज़ एक लौंडी थीं। हमारे मुखातब को याद रखना चाहिए, कि **शरीअत-ए-मूसवी ने गुलामी की क़बीह रस्म को ईजाद नहीं किया था बल्कि गुलामी के मुरव्वजा रिवाज की इस्लाह की थी।** (अहबार 25 बाब, यसअयाह 56:3 ता 8 वग़ैरह) गुलामी का रिवाज मूसवी शरीअत से सदीयों पहले का है। चुनान्चे आप खुद फ़र्माते हैं कि “बनी-इसाईल फिरऔन के लौंडी गुलाम थे।” (सफ़ा 18) आपने बजा फ़रमाया, लेकिन फिरऔन मिस्र ने बनी-इसाईल को शरीअत मूसवी के मुवाफ़िक़ तो अपना बुरदा (गुलाम) नहीं बनाया था वो मुल्क-ए-मिस्र के

रिवाज गुलामी के मुवाफ़िक़ फ़िराँन के बुर्दे (गुलाम) थे। पस आप किस तरह कह सकते हैं कि “हाजिरा लौंडी नहीं हो सकती।” हाँ ये कहिये की बीबी हाजिरा लौंडी तो थीं, मगर शरीअत-ए-मूसवी के मुवाफ़िक़ नहीं बल्कि ज़माना इब्राहिम के रिवाज के मुवाफ़िक़ लौंडी थीं। और यह उनकी ज़्यादा बदनसीबी थी क्योंकि अगर मूसवी शराअ के मुवाफ़िक़ उनको हज़रत सारा की लौंडी होने का फ़ख़्र हासिल होता तो उनको वो ज़िल्लत और ख़वारी नसीब ना होती जिसका बयान तौरात में है। वो अपने दिन ज़्यादा आराम से काटतीं क्योंकि शरीअत-ए-मूसवी ने गुलामी के बदतरीन पहलूओं को रफ़ा कर दिया था।

हमारा मुखातब अजीब दलील पेश करके कहता है “अगर कोई ये कहे कि हज़रत सारा या ख़ुदा तआला ने उनको लौंडी पुकारा है तो इस का जवाब ये है कि अगर लौंडी या गुलाम सिर्फ़ कह देने से ही हो सकता है तो बनी-इस्माइल से कोई लौंडी और गुलाम नहीं हो सकता!” इस का हासिल ये हुआ कि मौलवी साहब ख़ुदा तआला के कलाम को भी इस मुआमले में तस्लीम करने से इन्कार करते हैं। क्या वो समझते हैं कि ख़ुदा ने बीबी हाजिरा को सिर्फ़ इस वास्ते “लौंडी” कहा कि वो बनी-इस्माइल को और मुसलमानों को चिढ़ाए? ख़ुदा ने हाजिरा को लौंडी कहा, क्योंकि वो लौंडी थीं। आप ईसाईयों के क़ौल की शौक़ से तक्ज़ीब (झुटलाना, झूट बोलने का इल्ज़ाम लगाया) करें लेकिन ख़ुदारा ख़ुदा के क़ौल को तो कुबूल करलें।

तौरात शरीफ़ की शहादत

मौलवी साहब के इस भद्दे इन्कार ने जो तहकीक़ से कोसों दूर है हमको मजबूर किया है कि बीबी हाजिरा का लौंडी होना साबित करें, वरना हमको बीबी साहिबा और उन के बेगुनाह बच्चों की ज़िल्लतों का जो उन्होंने ने अपनी गुलामी की हालत में उठाएं ज़िक़र करना वाक़ई तकलीफ़-देह और नागवार है। मगर मौलवी साहब के इन्कार ने हमको उनके गिनवाने पर मजबूर कर दिया है क्योंकि वो कहते हैं कि “ईसाईयों का ये कहना हज़रत हाजिरा लौंडी थीं और हज़रत इस्माइल मए अपनी माँ के निकाले गए बातिल है।” तौरात शरीफ़ के मुन्दरिजा बाला बयान में आया है कि :-

(1) सारा की एक मिस्री लौंडी थी जिसका नाम हाजिरा था, “उस ने अपनी मिस्री लौंडी इब्राहिम को दी।” (पैदाइश 16:1, 3) देखिए हज़रत मूसा जो लौंडी गुलाम होने की

शराइत से वाकिफ़ थे बीबी हाजिरा को हज़रत सारा की मिस्री लौंडी कह रहे हैं। और हज़रत मूसा की मुखालिफ़त करने का किस को जुहरा (हौसला, हिम्मत)?

(2) “इब्राहिम ने सारा से कहा, कि तेरी लौंडी तेरे हाथ में है। जो तुझे भला दिखलाई दे सो उस के साथ करा।” (पैदाइश 16:6) हज़रत इब्राहिम हाजिरा को सारा की लौंडी कहते हैं। दीन इब्राहीमी के दाअ्वेदारों को इब्राहिम के सुखन (कलाम, शेअर, बात) का कुछ तो पास होना चाहिए।

(3) खुदावंद के फ़रिश्ते ने हाजिरा से कहा, “ऐ सारा की लौंडी हाजिरा” (पैदाइश 16:8) क्या फ़रिश्ते की बात भी काबिल-ए-इल्तिफ़ात नहीं?

(4) बीबी हाजिरा के नाम के साथ उस की सिफ़त “सारा की लौंडी” तमाम बयान में मौजूद है। किताब-ए-मुकद्दस की यही शहादत है।

(5) खुदा ने हाजिरा को “लौंडी” के लक़ब से नामज़द फ़रमाया। (पैदाइश 21:12) खुदा से ज़्यादा कौन मोअतबर गवाह है?

(6) बीबी हाजिरा हज़रत सारा को खुद अपनी मालिका तस्लीम करती है (पैदाइश 16:8) क्या उस का इक़बाल मोमिनीन के लिए काबिल-ए-तवज्जोह नहीं? अगर वो सारा की लौंडी ना होती तो वो फ़रिश्ते को कहती, मैं तो लौंडी नहीं हूँ, मुझे मत चिढ़ाओ, मैं तो फिरऔन जादी हूँ।

(7) बीबी हाजिरा पर लौंडियों की मानिंद सख़्ती हुई चुनान्चे लिखा है “सारा उस पर सख़्ती करने लगी और वो उस के पास से भाग गई।” (पैदाइश 16:6)

(8) हज़रत इब्राहिम ने उस पर सख़्ती करने दी। (पैदाइश 16:6) और खुदा ने भी इस सख़्ती से चशमपोशी की। (पैदाइश 21:12)

(9) इस सख़्ती की वजह से बीबी हाजिरा अपने आका के मकान से गुलामों की तरह भाग गई। (पैदाइश 16:6) उसने बाद में फ़रिश्ते से कलाम करते वक़्त ये कुबूल कर लिया कि, “मैं अपनी बीबी सारा के पास से भाग आई हूँ।” (पैदाइश 16:8)

अब मौलवी साहब फ़रमाएं कि लौंडी होने की कौन सी शर्त है जो बीबी हाजिरा में बाकी रह गई है? काज़ी अक़ल को बीबी जी के लौंडी होने का फ़त्वा देने में ताम्मुल नहीं हो सकता। मौलवी साहब को ताम्मुल हो तो हो।

हमारे मुखातब कहते हैं कि हज़रत हाजिरा में लौंडी होने की शराइत पाई नहीं जाती। हाँ जुल्फ़ा और बल्हा (हज़रत याक़ूब की हरमों) में लौंडी होने की शराइत पाई जाती हैं।”

हकीकत ये है कि (1) गो हाजिरा और जुल्फ़ा और बल्हा सब शरीअत मूसवी से कबूल लौंडियां थीं लेकिन मौलवी साहब जुल्फ़ा और बल्हा के लौंडी होने के इतने सबूत किताब-ए-मुकद्दस से नहीं ला सकते। जितने हमने बीबी हाजिरा के दिए हैं। (2) हज़रत याक़ूब ने भी जुल्फ़ा और बल्हा के साथ ऐसा सुलूक नहीं किया जिससे उनके लौंडी होने की ज़िल्लत मालूम हो। (3) गोया दोनों इब्तिदा में लौंडियां थीं ताहम उनके बेटों को बरख़िलाफ़ हाजिरा के बेटे इस्माइल के हज़रत याक़ूब के दूसरे बेटों के साथ मुसावी हुकूक मिले और वो इस्माइल के हकीकी फ़र्ज़न्द हुए और उनका शुमार और उन के औलाद का शुमार बनी-इस्माइल में किया गया। लेकिन इस्माइल (और इब्राहिम के दूसरे लड़के जो लौंडियों से पैदा हुए) विरासते इब्राहिमी और वाअदा और नबुव्वत की बरकत-ए-उज़्मा से खारिज किए गए। जैसा कि हम गुज़श्ता फ़स्लों में साबित कर चुके हैं। (4) मौलवी साहब ही हमको बतलाएं कि जुल्फ़ा और बल्हा में लौंडी होने की कौन सी शराइत मौजूद हैं जो हाजिरा में नहीं मिलती? बल्कि जुल्फ़ा और बल्हा पर सख़्ती ना की गई। ना वो अपने मालिक के मकान से भागीं ना वो उनकी औलाद आका के घर से निकाल दी गई और ना बमुकाबला दीगर औलाद उनके बेटे मीरास-ए-पिदर (बाप की मीरास) और दीगर बरकतों से महरूम किए गए।

लामुहाला अगर किसी औरत की निस्बत लौंडी होने की शराइत पूरी होतीं, तो वो लौंडी है और बीबी हाजिरा लौंडी थीं और उन की निस्बत लौंडी होने की तमाम शराइत भी पूरी हो चुकीं।

बीबी हाजिरा का इख़राज

मौलवी साहब ने तौरात शरीफ की ऐन ज़द में इस अम्र को भी कि इस्माईल मए अपनी माँ के निकाले गए बिल्कुल बातिल ठहराया है। ना मालूम उन्होंने तौरात को खुद नहीं पढ़ा या दीदा दानिस्ता (जानबूझ कर) चशमपोशी करना चाही। बहरहाल ये दोनों बातें उसूल-ए-तहकीक के खिलाफ हैं। तौरात शरीफ में आया है :-

“सारा ने देखा कि हाजिरा मिस्री का बेटा (इज़्हाक पर) ठट्ठे मारता है। तब उसने अब्राहाम से कहा, कि इस लौंडी को और इस के बेटे को निकाल दे क्योंकि इस लौंडी का बेटा मेरे बेटे इज़्हाक के साथ वारिस ना होगा। खुदा ने अब्राहाम से कहा जो कुछ सारा तुझसे कहती है तू उस की बात मान क्योंकि इज़्हाक से तेरी नस्ल का नाम चलेगा। तब अब्राहाम ने सुब्ह-सवेरे उठकर रोटी और पानी की एक मशक ली और इस के हवाले करके उसे रुख्सत कर दिया। सो हाजिरा चली गई और बैर सबअ के ब्याबान में आवारा फिरने लगी। (पैदाइश 21 बाब) आगे उन मुसीबतों का हाल है जो बीबी हाजिरा और उस के लख्ते-जिगर पर पड़ीं जिनको पढ़ कर रोना आता है क्योंकि इस बेचारी औरत और इस के तबाह-हाल लड़के के साथ बहुत सख्त सुलूक किया गया। खुदा का शुक्र है कि उस ने अपने बेटे सय्यदना ईसा मसीह को भेजा और इन्जील जलील के उसूलों ने इस ज़ालिमाना रस्म गुलामी का सिद्द-ए-बाब किया। हज़रत कलिमतुल्लाह (मसीह) आए ताकि कैदीयों और गुलामों की रिहाई हो और जुल्म व इस्तब्दाद की जंजीरें टूट जाएं। (लूका 4:21) लेकिन उस ज़माने में गुलामों के साथ इस किस्म का बर्ताव एक आम बात थी बल्कि इस बेयार व मददगार तबक़े के साथ हाजिरा से भी ज़्यादा सख्त सुलूक किया जाता था और इस वहशी और ज़ालिमाना सुलूक को ऐब ना समझा जाता था। अगर बीबी हाजिरा लौंडी ना होती तो इस किस्म का वहशयाना सुलूक ही उनसे ना किया जाता। लेकिन आप को घर से निकाल दिया गया और आपके लख्ते-जिगर को भी निकाल दिया गया क्योंकि आप लौंडी थीं।

फ़िरऔन ज़ादी का किस्सा

इस से कोई मुहक्किक इन्कार नहीं कर सकता कि किताब मुक़द्दस और सही तारीख के मुताबिक बीबी हाजिरा हज़रत सारा की लौंडी थीं और हज़रत इस्माईल कनीज़क ज़ादा (लौंडी के बेटे) थे और वो दोनों हज़रत इब्राहिम के घर से निकाल दीए गए। मौलवी साहब बावजूद दाअ्वा “तहकीक” के इन सच्चे और तवारीखी हक़ायक से

इन्कार करते हैं। मगर उन्होंने खतरनाक राह पर क़दम मारा है। वो इतने ही पर बस नहीं करते कि हाजिरा के लौंडी होने से इन्कार करें, बल्कि वो उनको लौंडी से शाहज़ादी बनाना चाहते हैं ! ऐ काश कि बीबी हाजिरा बाद शाहज़ादी होतीं और हम को मज़कूर बाला नागवार बातों का बयान ना करना पड़ता ! रंग आमेज़ी और मुबालगा को तहक़ीक़ हक़ से किसी किस्म का भी वास्ता नहीं हो सकता मुबालगे की राह निहायत कुशादा और फिसलनी होती है। चुनान्चे ब-सनद “अपने एक दोस्त सुलेमान यहूदी” आप फ़र्माते हैं कि,

“एक शख्स हकीम, हुनर-मंद, ज़की-उल-तबअ था जो अक्सर उलूम व फ़नून में कमाल रखता था। इस का नाम क़य्युन (قیون) था। उसने वतन में रहना नामुनासिब समझ कर मिस्र की राह ली और रफ़ता-रफ़ता मिस्र का बादशाह हो गया जिसका लक़ब फ़िरऔन हुआ। जब इब्राहिम मिस्र में पहुंचे उसने सारा से शादी करना चाही जब उस को मालूम हुआ कि वो हज़रत इब्राहिम की बीबी हैं तो उसी वक़्त फ़िरऔन ने उनको हज़रत इब्राहिम के पास भेज दिया और अपनी बेटी हज़रत हाजिरा को उनके सपुर्द कर दिया। ये सही हाल हज़रत हाजिरा का है जो हमने ठीक-ठीक बयान कर दिया।” (सफ़ा 18, 19)

इसी फ़र्ज़ी दास्तान को सर सय्यद मरहूम ने मौलवी इनायत रसूल चिड़िया कोटि (जिनकी इब्रानी दानी की क़लई हम बाब सोम में खोल चुके हैं) की ज़बानी दुहराया है। (खुत्बात सफ़ा 163, 170)

हमें कुछ ज़रूर नहीं कि हम इस फ़र्ज़ी किस्से के खोज करने में तफ़ीअ (ज़ाए करना) औकात करें। ताज्जुब है कि मौलवी साहब के “दोस्त सुलेमान यहूदी” बीबी हाजिरा की मर्कूमा-बाला दास्तान को मोअतबर तारीख़ कहे और आप उस की ताईद करें और “मुहक्किक़” होने का दाअ्वा करें आपने इस यहूदी से पूछा होता क्या तुम तौरात शरीफ़ को मानते हो? और इस मुक़द्दस किताब से भी किसी ज़्यादा मोअतबर किताब के काइल हो? और कुछ नहीं तो आपने यही सोचा होता कि हाजिरा का ये फ़र्ज़ी बाप कैसा “हकीम, हुनर-मंद, ज़की-उल-तबअ, उलूम व फ़नून” में कमाल रखने वाला था कि उसने अपनी बेटी को एक अजनबी औरत के सपुर्द कर दिया और उस की आइन्दा ज़िंदगी का

कोई लिहाज़ ना किया? और वह कैसा “दानिशमंद बादशाह” था जिसने अपनी “इकलौती बेटी” के साथ दर्जन दो दर्जन सहेलियाँ और लौंडियां खिदमत के लिए ना दीं? और ना कोई माल व असबाब और ज़िरही दिया? हता कि जब इब्राहिम ने इस को घर से निकाला तो फ़क़त एक मश्क पानी और रोटी का इस बेचारी को मुस्तहिक़ गिरदाना? क्या हज़रत इब्राहिम ऐसे ही नादान शख्स थे कि वो एक आली नसब शाहज़ादी से इस किस्म का सुलूक रवा रखते? और ये आली खानदान की शाहज़ादी कैसी थी जो घर से निकाल दीए जाने के बाद चली गई और “बैर सबअ के ब्याबान में आवारा फिरने लगी?” आपने इस यहूदी दोस्त से पूछा होता कि हाजिरा को “सारा के सपुर्द” करने का क्या मतलब है क्योंकि सारा ने तो हाजिरा को लौंडी बनाए रखा। लौंडी करके इब्राहिम को दिया। लौंडी का सुलूक किया और लौंडी की तरह घर से निकाल बाहर किया? क्या हज़रत सारा एक शाहज़ादी को लौंडी बना कर इस किस्म का ज़ालिमाना सुलूक कर सकती थीं?

मौलवी साहब, हैरत है कि आप तौरैत शरीफ़ की सनद के मुकाबले में सुलेमान या किसी और यहूदी का क़ौल पेश करते हैं और खुद मुत्मइन हो जाते हैं। हक़ीक़त ये है कि इन्सान का वहम उस को अजब अजब तमाशे दिखलाता है और जो वो मानना चाहता है उसे मनवा देता है। लेकिन तहक़ीक़ हक़ और कुव्वत-ए-वाहिमा दोनों एकजा (एक साथ) नहीं हो सकतीं। हमको बीबी हाजिरा के फ़िरऔन ज़ादी (फ़िरऔन की बेटी) होने से इतना ताज्जुब नहीं जितना आपके इस फ़र्ज़ी किस्से को ईसाईयों के मुकाबिल सनदन पेश करने से और इस को खिलाफ-ए-तौरात हक़ समझने से अचम्भा होता है।

बाब हशतम

हज़रत इब्राहिम और ख़ाना काअबा

कुरआन का बयान

कुरआन शरीफ़ में लिखा है :-

“हमने इब्राहिम और इस्माईल को हुक्म दिया कि मेरा घर तवाफ़ वालों के वास्ते पाक कर रखो और जब इब्राहिम इस घर की बुनियादें उठाने लगा.....अलीख।” (बकरह रूकूअ 5)

ईसाई इन रिवायतों को हक़ नहीं जानते। पस वो उनको नहीं मानते।

मौलवी साहब की दलीलें

मौलवी साहब कहते हैं :-

“ईसाई लोग अक्सर अपनी तस्नीफ़ात में लिखते हैं कि खाना काअबा हज़रत इब्राहिम ने बनाया नहीं। क्या हमें कुतुब-ए-मुक़द्दसा में देखना चाहिए कि इब्राहिम बैतुल्लाह बनाने के आदी थे या नहीं। जब हम गौर से देखते हैं तो साबित होता है कि उनकी आदत बैतुल्लाह बनाने की थी। वो जिस जगह को अपनी क्रियामगाह मुकर्रर फ़र्माते थे वहां एक कुर्बान गाह बनाते थे। ये उनकी आदत हो गई थी। अब नाज़रीन को यहां ख़ूब गौर करना चाहिए कि हज़रत इब्राहिम जब कि ग़ैर-मुल्कों में कुर्बान गाह बनाते थे तो जब वो अरब में अपने अज़ीज़ बेटे के पास गए होंगे तो कुर्बान गाह क्यों ना बनाई होगी?” (सफ़ा 22, 23)

ये इक्त्तबास उन दलीलों का भी है जो सर सय्यद मरहूम ने “खुत्बात अहमदिया” में दी हैं। (खुत्बात सफ़ा 499)

तन्क़ीह तलब उमूर

हमारे मुखातब को याद रखना चाहिए कि अस्ल सवाल ये है कि आया खाना काअबा को जो मुल्क-ए-अरब के एक खास शहर यानी मक्का में वाक़ेअ है, हज़रत इब्राहिम ने बनाया था या कि नहीं। इस सवाल का जवाब ना तो इब्राहिम की “बैतुल्लाह

बनाने की आदत” से मिल सकता है और ना किसी फ़र्ज़ी मुलाक़ात से ये सवाल हल हो सकता है कि जो उन्होंने इस्माईल से की हो।

मौलवी साहब को यहां तीन बातें साबित करना चाहिए :-

अव्वल, ये कि हज़रत इस्माईल मक्का में रहते थे।

दोम, ये कि हज़रत इब्राहिम इस्माईल को मिलने की खातिर मक्का तशरीफ़ लाए थे।

सोम, ये कि हज़रत इब्राहिम ने मक्का को अपनी क्रियामगाह मुक़र्रर फ़रमाया था क्योंकि आप खुद कह चुके हैं कि “हज़रत इब्राहिम जिस जगह को अपनी क्रियामगाह मुक़र्रर फ़र्माते थे वहां वो एक कुर्बान गाह बनाते थे।”

चहारुम, ये कि हज़रत इब्राहिम ने ख़ाना काअबा की अपने हाथों बिना (बुनियाद) डाली।

क्योंकि अगर इस्माईल की जाये-सुकूनत मुल्क-ए-अरब का एक खास खिता यानी मक्का करार पा भी सके और ख्वाह हज़रत इब्राहिम उनसे मिलने भी आए हों और उनके...साथ सुकूनत भी की हो और अरब में उन्होंने किसी जगह बैतुल्लाह भी बनाया हो तो भी कम अज़ कम मक्का के ख़ाना काअबा को हज़रत इब्राहिम से कोई निस्बत नहीं हो सकती। जब तक ये साबित ना किया जाये कि हज़रत ने ख़ाना काअबा को अपने हाथों उठाया था।

इस्माईल की जाये-सुकूनत

“कुतुब मुक़ददसा से जिन पर मौलवी साहब अपने दाअवों का इन्हिसार करते हैं साफ़ साबित है कि हज़रत इस्माईल की जाये-सुकूनत ना तो मुल्क-ए-अरब में थी और ना मक्का या मक्का के कुर्ब व जुवार (आसपास) में थी। बल्कि उनकी जाये-सुकूनत मक्का से सैंकड़ों मील दूर वाक़ेअ थी।” चुनान्चे तौरात शरीफ़ में है :-

“खुदा इस्माईल के साथ था और वो बड़ा हुआ और वो ब्याबान में रहने लगा और तीर-अंदाज़ बना और फ़ारान के ब्याबान में रहता था और उस की माँ ने मुल्क-ए-मिस्र से उस के लिए बीवी ली। और इस्माईल की कुल उम्र (137) बरस की हुई तब उसने दम छोड़ दिया और वफ़ात पाई और अपने लोगों में जा मिला। और उस की औलाद हवीला से शूर तक जो मिस्र के सामने उस रास्ते पर है जिससे अस्वद को जाते हैं आबाद थी।” (पैदाइश 21 बाब, 25 बाब)

“कुतुब-ए-मुक़द्दसा में “फ़ारान” का ब्याबान एक मशहूर जगह है और यह किताबें सिवाए एक फ़ारान के कोई दूसरा फ़ारान नहीं जानतीं। (पैदाइश 14:6, 21:21, गिनती 10:12, 12:16, 13:3 वगैरह) इसी फ़ारान का ज़िक्र (1_सलातीन 11:18 और हबक्कूक 3:3 वगैरह) में आया है। ये फ़ारान का ब्याबान जज़ीरानुमा सीना में वाक़ेअ है। यही वो ब्याबान है जिसमें से हो कर बनी-इस्माईल ने अपने सफ़र के चालीस (40) बरस गुज़ारे थे और जहां उन्होंने पड़ाव भी किया था। चुनान्चे लिखा है कि, “बनी-इस्माईल दशत-ए-सीना से कूच करके निकले और बादल दशत-ए-सीना में ठहर गया।” (गिनती 10:12) फिर वो लोग हसीरात से रवाना हुए और “फ़ारान के ब्याबान में पहुंच कर उन्होंने ने डेरे डाले।” (गिनती 12:16) ये “फ़ारान का ब्याबान” मक्का से कोई छः सौ (600) मील शुमाल की जानिब माबैन मुल्क कनआन और मिस्र के जज़ीरानुमा सीना में बहर-ए-कुल्जुम की दोनों शुमाल शाखों के दर्मियान वाक़ेअ है। इस मुक़ाम का जुगराफ़िया बतला देता है कि अगर एक लकीर बहर-ए-मुर्दार से खलीज उक्बा तक खींची जाये तो ये इस ब्याबान की मशरिकी सरहद होगी। इस मुक़ाम पर हज़रत इस्माईल ने रिहाइश इख्तियार की और इस जगह को मक्का से वैसा ही लगाओ है जैसा श्रीनगर कश्मीर को बनारस से। बिचारे इस्माईल का गुज़र मक्का के कुर्ब व जुवार (आसपास) में उम्र-भर कभी नहीं हो सकता था। वो ब्याबान फ़ारान में रहा। वहीं मुराद और उस की औलाद उस रकबा में बस्ती रही “जो हवीला से शूर तक जो मिस्र के सामने इस रास्ते पर है जिससे असुर को जाते हैं।” और यह मुल्क अरब से कई सौ कोस दूर है।

पस मालूम हुआ कि हज़रत इस्माईल की सुकूनत को मक्का से कोई मुम्किन-उल-वकूअ मुनासबत भी नहीं है क्योंकि उस की जाये सुकूनत मक्का से छः सौ (600) मील शुमाल में थी। अब अगर हज़रत इब्राहिम ने इस्माईल से मुलाक़ात की भी हो और इस्माईल के घर को अपनी “क्रियामगाह” बनाया भी हो और अपनी हस्बे-आदत हाँ एक

छोड़, दर्जन “बैतुल्लाह” भी बनाए हों तब भी उनके हाथों से खाना काअबा की बिना (बुनियाद) नहीं हो सकती थी।

इब्राहिम और इस्माईल की मुलाक़ात

अब देखें कि मौलवी साहब हज़रत इब्राहिम के इस्माईल के पास जाने का क्या सबूत देते हैं? वो कहते हैं कि :-

“इन मोअतरज़ीन का एतराज़ कि हज़रत इब्राहिम का अरब में जाना कुतुब मुक़द्दसा से साबित नहीं होता, महज़ बे-बुनियाद है। बेशक हज़रत इब्राहिम अरब में हज़रत इस्माईल के पास ज़रूर गए होंगे।”

इस “गए होंगे” के साथ लफ़ज़ “बेशक” और “ज़रूर” ना सिर्फ़ ग़ैर-मौजू है बल्कि उसूल-ए-मन्तिक के खिलाफ़ है, क्योंकि मौलवी साहब महज़ अपने हुस्न-ए-ज़न और क्रियास को यकीन का दर्जा देते हैं। जब मौलवी साहब ने ईसाईयों के एतराज़ को “बे-बुनियाद” कहा तो हम समझते थे कि ग़ालिबन वो कुतुब-ए-मुक़द्दसा की कोई आयत इस अम्र के सबूत में पेश करने वाले हैं कि हज़रत इब्राहिम अरब में हज़रत इस्माईल के पास फ़िल-हकीकत गए थे जिससे मोअतरिज़ का एतराज़ महज़ बे-बुनियाद साबित हो जाएगा।

किताब-ए-मुक़द्दस मौलवी साहब के एक लफ़ज़ की तक़ज़ीब करती है। करीना (बहमी ताल्लुक) इस बात का मुक़तज़ी है कि “इब्राहिम अरब को हज़रत इस्माईल के पास ज़रूर वहां मिलने गए होंगे क्योंकि जब उन्होंने इस्माईल को घर से निकाला तब उनकी उम्र एक सौ पाँच (105) बरस की हो चुकी थी। वो बहुत ज़ीअफ़ थे और दूर-दराज़ सफ़र के काबिल ना रहे थे। अगर वो बीबी हाजिरा को घर से निकालने के बीस (20) बरस बाद भी इस्माईल से मिलने गए हों और बफ़र्ज़-ए-मुहाल इस्माईल ने मक्का में रिहाइश इख्तियार की हो तो कौन सहीह-उल-अक्ल शख्स ये कहेगा कि एक सौ पच्चीस (125) बरस का ना-तवान (कमज़ोर, बुढ़ा) शख्स छः सौ (600) मील की मुसाफ़त तै करके इस्माईल को मिलने गया होगा।”

दोम : इस बुढ़ापे की उम्र में हज़रत का “इकलौता बेटा” जिसको वो “प्यार करता था।” (पैदाइश 22:2) उस के पास था और इस के इलावा दीगर हरमों के बेटे भी उनकी खिदमत को मौजूद थे। दरिं हालात ज़ईफ़ी की उम्र में अपनी आँखों के तारे को वो किस तरह अपनी आँख से ओझल कर सकते थे? बिल-खुसूस जब इज़हाक वाअदे के फ़र्ज़न्द थे और इस्माईल को खुदा ने खारिज कर दिया था?

सोम : जब तक बीबी सारा जीती रहीं उन्होंने अपनी कनीज़क हाजिरा और उस बेटे को (जिनको उन्होंने निहायत नाराज़गी से घर से निकाल दिया था) अपने घर के नज़दीक फटकने ना दिया। हज़रत सारा ने अपने शौहर को उन्हें देखने के लिए कैसे जाने दिया होगा? हज़रत इब्राहिम भी अपने इकलौते बेटे की माँ, अपनी बूढ़ी ज़ौजा (बीवी) को नाराज़ करके क्योंकि अपनी कनीज़क हाजिरा और उस के बेटे को देखने के लिए जा सकते थे?

चहारुम : हज़रत इब्राहिम ने इस्माईल और उन की माँ को घर से निकाल दिया था और इस्माईल की सगर सुन्नी (बुरे हालात) में भी इस की परवाह ना की थी कि भूका मरता है या ज़िंदा रहता है तो अब जब वो जवान हो कर तीर-अंदाज़ी में माहिर हो कर अपनी परवरिश आप करने लग गया था तो ये कौनसा मौका इस्माईल को देखने के लिए जाने का था?

पंजुम : किताब-ए-मुकद्दस से पाया जाता है कि खुद इस्माईल अपने बाप को ज़ईफ़ी की हालत में देखने आए थे। उस वक़्त हज़रत सारा वफ़ात पा चुकी थीं और हज़रत इब्राहिम का दम निकलने वाला था। और वो हज़रत इज़हाक के साथ अपने बाप की तदफ़ीन में शरीक हुए। (पैदाइश 25:9) और ये ज़्यादा मुनासिब भी था कि जवान लड़का अपने बूढ़े बाप को देखने के लिए आता, ना ये कि उल्टा बूढ़ा इब्राहिम इस्माईल की मुलाक़ात के लिए जंगलों में “छः सौ (600) मील” मारा-मारा फिरता।

हज़रत इब्राहिम के अरब जाने और हज़रत इस्माईल से मिलने का दूसरा सबूत मौलवी साहब ये देते हैं :-

“हज़रत इब्राहिम का हज़रत इस्माईल के पास दो दफ़ाअ तशरीफ़ ले जाने का सबूत किताब-ए-हदीसे-यहूद से मिलता है जिसको तालमुद कहते हैं। ये तालमुद वो मोअतबर किताब है कि जिससे चंद मुक़ामात इन्जील में नक़ल किए गए हैं।” (सफ़ा 241)

हकीकत ये है कि किताब तलमुद सही और ग़लत अख़बार का एक मजमूआ है जिस तरह कुतुबे अहादीस इस्लाम में झूठी और सच्ची सभी हदीसें हैं। जिस तरह उनमें बाअज़ बेसरोपा अफ़साने मर्कूम हैं इसी तरह यहूदी मजमूआ में भी बेसरोपा अफ़साने और क्रिस्से पाए जाते हैं और जिस तरह बग़ैर परखे कोई हदीस सही साबित नहीं हो सकती इसी तरह तलमुद के बयानात को भी परख कर ही सही माना जा सकता है। जिस तरह किसी हदीस की किताब में किसी सही इस्लामी हदीस का होना उस मजमूए को मोअतबर नहीं बना सकता इसी तरह तलमुद में किसी सही ख़बर के होने से तमाम तलमुद “मोअतबर किताब” नहीं बन सकती पस तलमुद जैसी ग़ैर-मोअतबर किताब में से किसी मोअतबर वाक़िये का अख़ज़ किया जाना तमाम किताब को “मोअतबर किताब” नहीं बना सकता।

मौलवी साहब ने ये नहीं बतलाया कि तलमुद के वो कौन से “मोअतबर मुक़ामात” हैं जो इन्जील में नक़ल किए गए हैं ताकि हम उनकी तन्कीद करके अस्ल बात का पता लगा सकते। बहरहाल अगर कोई मोअतबर मुक़ामात तलमुद से अख़ज़ किए गए हैं तो वो “मोअतबर” होने की वजह से ही नक़ल किए गए हैं लेकिन इस से ये साबित नहीं होता कि “तालमुद मोअतबर किताब” है तलमुद के ऐसे बड़े एतबार का दाअ्वा जैसा कि आप करने को तैयार हैं आजकल तो कोई वाक़िफ़ कार यहूदी भी नहीं करता।

हमें अफ़सोस है कि मौलवी साहब ने तमाम हक़ को ज़ाहिर नहीं किया इस क़द्र तो दुरुस्त है कि तलमुद में लिखा है कि हज़रत इब्राहिम दो मर्तबा इस्माईल के मकान पर फ़ारान के ब्याबान में गए। लेकिन वहां “फ़ारान का ब्याबान” ही लिखा है। अरब और मक्का का ज़िक्र ही नहीं। इलावा अर्ज़ी इस में ये भी लिखा है कि हज़रत की दोनों मर्तबा इस्माईल से मुलाक़ात ना हुई क्योंकि वो जंगलों में तीर-अंदाज़ी करते फिरते थे। और लुत्फ़ ये है कि वहां ये भी लिखा है कि हज़रत इब्राहिम, इस्माईल के मकान पर ठहरे भी नहीं बल्कि जिस रोज़ वहां गए उसी रोज़ उल्टे पांव वापिस लौट आए क्योंकि पहली

मर्तबा इस्माईल की बीवी ने उनसे बात भी ना पूछी और दूसरी मर्तबा जब इस्माईल अपनी इस बीबी को तलाक़ देकर दूसरी कर चुका था उस की बीवी ने इब्राहिम के आगे माहज़र रखा और इब्राहिम उसे खाकर दुआ कर लौट आए और इस्माईल से मुलाकात ना की। जिससे ज़ाहिर है कि हज़रत इब्राहिम ने हज़रत इस्माईल के घर को अपनी क्रियामगाह ना बनाया या कि वो उनके साथ सुकूनत गर्ज़ी होते।

बुखारी में ये रिवायत तलमुद से बजिन्सा मन्कूल है मगर इस में ये इज़ाफ़ा कर दिया गया है कि इब्राहिम तीसरी बार फिर बहर मुलाकात आए और ज़मज़म के करीब इस्माईल से मिले और काअबे की बिना (बुनियाद) डाली। मगर तीसरी दफ़ाआ आना तो तलमुद में भी मर्कूम नहीं है और वह भी अरब में आना हमारे मुखातब को इख्तियार है कि वो तलमुद को अपना गवाह करार दें लेकिन वो आपकी सी नहीं बोलता।

इब्राहिम की क्रियामगाह और बिना-ए-काअबा

हम फिर मौलवी साहब को याद दिलाते हैं कि अगर इब्राहिम और इस्माईल की बाहम मुलाकात हो भी जाती तो भी आपको दाअ्वा पाया सबूत को नहीं पहुंच सकता। क्योंकि मुलाकात अरब में और फिर मक्का में हो ही नहीं सकती और फिर आप कहते तो ये हैं कि हज़रत इब्राहिम जिस जगह को अपनी क्रियामगाह मुकर्रर फ़र्माते थे वहां एक कुर्बान गाह बनाते थे मगर ये कैसे साबित हुआ कि उन्होंने इस्माईल के घर को “अपनी क्रियामगाह” बनाया और रवादारी में तामीर इमारत क्यूँ-कर मुम्किन थी? और अगर क्रियामगाह बना भी लेते तो ख़ाना काअबे की बिना (बुनियाद) और तामीर और तक्दीस कैसे हो सकती थी दर्-आंहाल ये (इस का मतलब ये) कि इस्माईल फ़ारान के ब्याबान में थे और ख़ाना काअबा मक्का में था?

हमें अफ़सोस है कि मुस्लिम मुनाज़िरीन को ऐसी ना-उम्मीदी से सामना पड़ता है। काअबा की तक्दीस की आरज़ू ने मौलवी साहब के मुँह से तलमुद के मजमूए को “मोअतबर किताब” कहलवाया पर अगर हम उस में से इस्माईल की निस्बत चंद रिवायत का इक़्तिबास कर दें तो मौलवी साहब कानों पर हाथ रखें और इस मजमूए का नाम भी ना लें चह-जायकि इस को एक “मोअतबर किताब” करार दें। क्योंकि बाअज़ इस्लामी रिवायत की तरह ये रिवायत भी ना-गुफ़ता बह हैं।

हक़ तो ये है कि काअबा एक क़दीम मंदिर था जिसके बुतों के आगे बुत-परस्त अहले-अरब सज्दा किया करते थे। अहले इस्लाम ने इस की ताज़ीम बढ़ाने के लिए अजीबो-गरीब रिवायत ईजाद कर लीं। वहां मुक़ाम-ए-इब्राहिम पैदा कर लिया गया। हज़-ए-असवद को आस्मान से जिब्राईल के हाथ मंगवाया गया। लेकिन ये एक हकीक़त है कि जिस पर क़ुरआन शरीफ़ शाहिद है कि हज़रत मुहम्मद एक मुद्दत तक इस से मुतनफ़िर (नफरत करने वाले) रहे और उन्होंने बैतुल-मुक़द्दस को अपना क़िब्ला बनाया लेकिन मस्लहत-ए-वक़्त और आरजू तालीफ़-ए-कुलूब ने तकलीदन काअबे को क़िब्ला इस्लाम बना कर उस की पुरानी मगर बे-बुनियाद ताज़ीम को बहाल कर दिया।

ख़त्म शुद